शिवरात्रि विशेषांक
फरवरी-2021
मूल्य-40/-
वर्ष 11
अंक 5
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
सर्वसिद्धि साधना
धनदा तंत्र साधना
महाविद्या त्रिपुर सा.
शिवरात्रि पूजन
शिवरात्रि पर सम्पन्न करें-
विशिष्ट प्रयोग

पूज्य सद्गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

8890543002

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।

परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 31469672061

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/-
हनुमान यंत्र एवं माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/-
गणपति यंत्र एवं माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : **नारायण मंत्र साधना विज्ञान**
गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

दरिद्रता को जड़-मूल से समाप्त करने का तंत्र : धनदा तंत्र

जीवन को मुस्कुराहट से भरने में सहायक : सर्व सिद्धि साधना

गृहस्थ जीवन की सभी कामनाओं की पूर्ति हेतु : शिव गौरी साधना

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

ज्योतिष

आयुर्वेद

स्तोत्र

योग
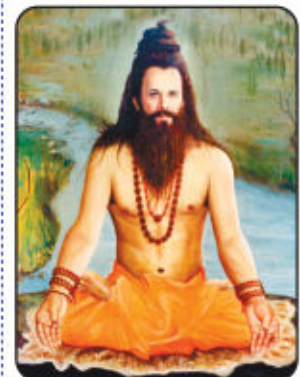
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
दीवान पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड
A-6/1, मायापुरी, फेस-1,
नई दिल्ली-110064
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय
हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रति 40/-
वार्षिक 405/-

सम्पर्क
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368
नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039
WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

ॐ वाचं सह प्रपद्यै दिवो वै सह सतां सिद्धिवैं शताः।

हम सिद्ध बनें, हम साधक बनें, निर्भीक होकर प्रकृति के रहस्यों को ज्ञात करें और सफलता प्राप्त करें, हम सिद्ध पुरुष हों।

साधना

एक युवा जिज्ञासु ने बहुत सी साधनाएं की लेकिन सफल नहीं हुआ। ऐसे में वह निराश हो गया। एक रात शहर के बाहर उसने पेड़ के नीचे एक साधु को शांत बैठे देखा। वह उसकी ओर आकर्षित हो गया। उसने साधु से पूछा कि, मैं क्या साधना करूँ? जिससे परमात्मा को प्राप्त कर सकूं। साधु ने कहा–तुम दौड़ो और इस निश्चय के साथ कि तुम्हारा हर कदम तुम्हें परमात्मा की ओर ले जा रहा है यही तुम्हारी साधना है।

युवक ने आश्चर्य से पूछा–तो क्या और किसी साधना की जरूरत नहीं? साधु ने कहा–है क्यों नहीं? जब तुम बैठो तो निश्चय करो, अपने भगवान के लिए बैठे हो। युवक ने कहा, तो क्या किसी मंत्र जप की आवश्यकता नहीं? साधु ने कहा–है क्यों नहीं? तुम कोई भी नाम या मंत्र जप करो, इस संकल्प के साथ कि यह अपने भगवान के लिए कर रहे हो। युवक से रहा न गया वह बोला–तो क्या परमात्मा को पाने के लिए साधना या क्रिया का कोई महत्व नहीं, क्या केवल भाव ही साधना है? साधु ने कहा–मित्र, क्रिया की महत्ता है परन्तु भाव के साथ। भाव के साथ जब क्रिया होती है तो परमात्मा की अनुभूति भी हो ही जाती है। इस जगत में ऐसा क्या है जिसमें ईश्वर नहीं है। सभी के साथ किया गया प्रेम का व्यवहार भी ईश्वर की ही साधना है। लक्ष्य पर निश्चय के साथ नजर रहे तो अनुभूति होती ही है।

युवक को सत्य का भान हुआ और वह सही लगन से परमात्मा से जुड़ने में लग गया। जब बात परमतत्व को प्राप्त करने की हो तो लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पण की ही प्रधानता है। उस स्तर पर कोई भेद लागु नहीं होता क्योंकि वहाँ तो द्वैत से अद्वैत की यात्रा होती है।

शिष्य
अर्थ और चिन्तन

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध और किस प्रकार शिष्य गुरु में लीन होकर आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है, इसके साथ ही अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को आत्मश्चेतना जाग्रत करने में व्यतीत कर पूर्णता प्राप्त कर सकता है, इन्हीं सब विषयों के सम्बन्ध में सद्गुरुदेव की ओजस्वी वाणी में यह महान प्रवचन–

गुरुर्च्चिन्त्यं रूपं अहेतु प्रमेयं ध्यानं विचिन्त्यं परमेव पाद्यं
ग्राह्यं सतां पूर्णा मदैव तुल्यं निर्वेद रूप मपरं गुरुवै सहेतुम्

यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कथन है, एक महत्वपूर्ण चिन्तन है ऋषि का, क्योंकि जीवन तब तक निस्सार है, व्यर्थ है जब तक जीवन का कोई प्रयोजन न हो।

यदि जीवन का कोई लक्ष्य ही नहीं है, जीवन का कोई प्रयोजन ही नहीं है, जीवन का कोई चिन्तन ही नहीं है, फिर जीवन क्या है? किसे हम जीवन कहें?

- **क्या सांस लेने की क्रिया को हम जीवन कह सकते हैं ?**
- **क्या जिन्दा रहने की कल्पना को जीवन कह सकते हैं ?**
- **क्या सन्तान उत्पन्न करने की भावना को जीवन कह सकते हैं ?**
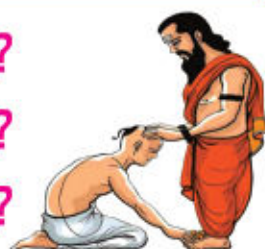
यह सब तो जीवन नहीं है, इन तत्त्वों के माध्यम से तो जीवन का निर्माण नहीं हो सकता और जब जीवन का मूल्य और महत्त्व ही ज्ञात नहीं है, जब जीवन का अर्थ और जीवन का मकसद ही हमें पता नहीं है, तो फिर हम वैसे ही पशु हैं जो डोलते रहते हैं, एक अज्ञात नकेल डाले हुए, उनको स्वयं को ज्ञान नहीं, कि वे किस तरफ जा रहे हैं, उनको खुद को पता नहीं कि वे कौन से रास्ते पर खड़े हैं? उनको खुद को यह ज्ञान नहीं कि उनकी मंजिल कहाँ समाप्त होगी? जिस रास्ते का प्रारंभ पता नहीं है, जिस रास्ते का अंत पता नहीं है, उस रास्ते पर चलना तो अंधे की तरह से चलना होता है, जिसका सूत्र हमारे हाथ में नहीं है, जिसका चिन्तन और ज्ञान हमारे हाथ में नहीं है, तो हम किन शब्दों में उसे जीवन कह सकते हैं?

हम तो केवल अपनी लाश को कन्धों पर उठाये हुये श्मशान की ओर बढ़ते चले जाते हैं, एक क्षण रुक कर सोचने की जरूरत है... कि क्या हमारा जीवन पशु से ऊपर उठा है?... क्या हमने अपने जीवन के मकसद को समझा है?... क्या हम जानते हैं कि हमें जीवन में कहाँ तक पहुँचना है?... क्या हमने कभी निर्णय लिया है कि जीवन के किस भाग पर हम खड़े हैं?... हमने कभी सोचा ही नहीं, हमने तो भोग-विलास को ही जीवन मान लिया, हमने तो सांस लेने की क्रिया को ही जीवन मान लिया, हमने तो जिन्दा रहने की कल्पना को ही जीवन मान लिया... यह कितनी छोटी-सी बात है। कपड़े पहिनना, कपड़े छोड़ देना, सांस लेना, भोजन करना, पानी पीना, अपने जीवन के अन्य क्रियाकलाप करना, ये तो जीवन के प्रकार हैं... जीवन तो नहीं है। जीवन तो किसी और ताने-बाने से बुना होता है।

जीवन तो वह होता है, जिसका सूत्र हमारे हाथ में होता है। जीवन तो वह होता है, जिसका मर्म हमें ज्ञात होता है। हम जिन्दा तो हैं... सामाजिक और वैज्ञानिक परिभाषा में हम जीवित हैं, मगर शास्त्रीय पद्धति में हम मृत हैं, क्योंकि विज्ञान तो यह कहता
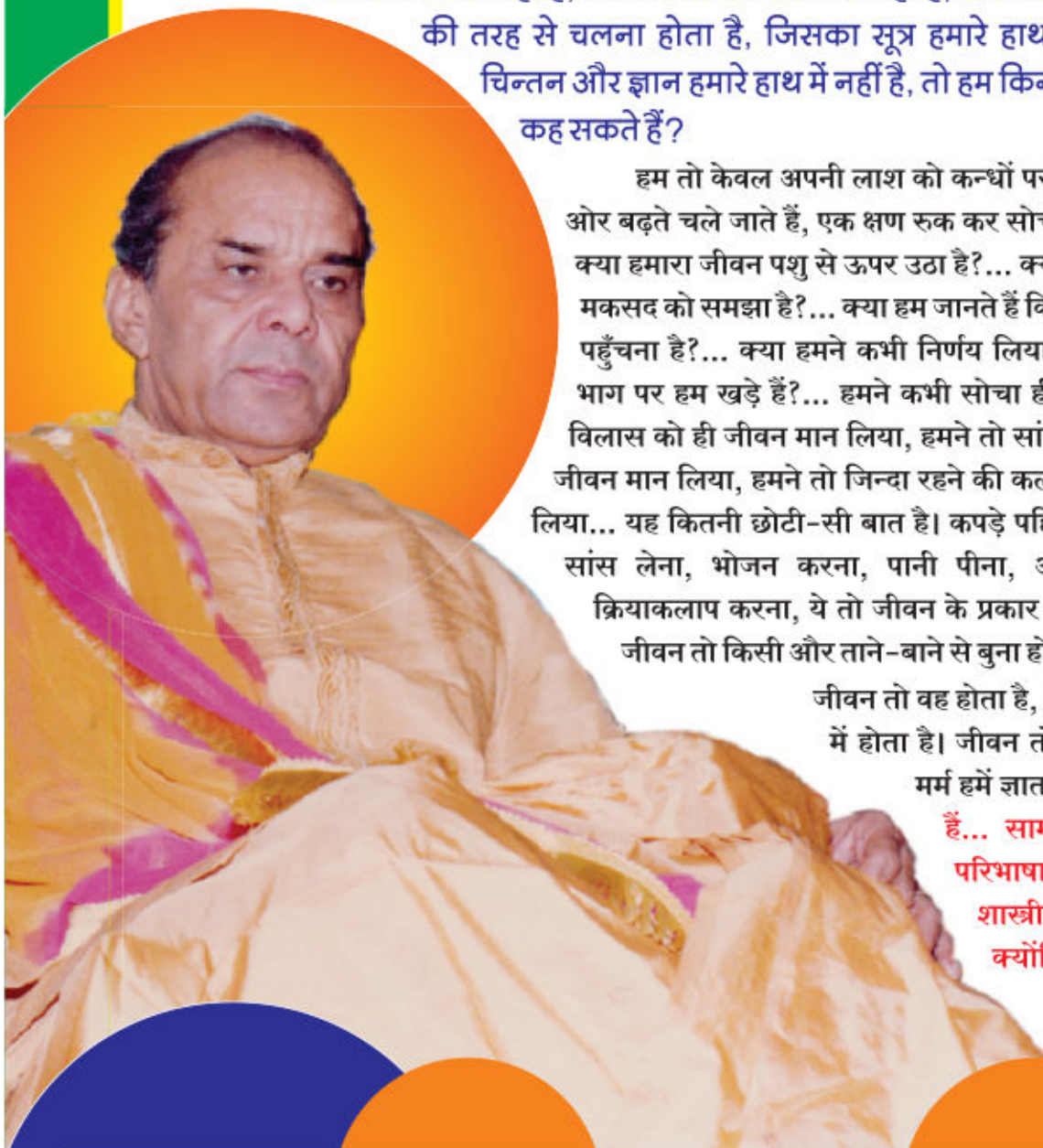
है कि जिसमें चेतना नहीं है, जिसमें इस बात का होश नहीं है कि मैं क्या हूँ? कहाँ जा रहा हूँ? कहाँ पर पहुँचना है? वह मृत है।

हम एक क्षण भर अगर रुक करके सोचें तो हमें ज्ञात ही नहीं कि हमें कहाँ पहुँचना है? हमने तो चांदी के चंद टुकड़ों को इकट्ठा करने की क्रिया को ही जीवन मान लिया। दो-चार मकान बना लेने की जीवन पद्धति को ही जीवन मान लिया। यह तो जीवन का एक प्रकार है, भौतिक दृष्टि में, चाहे निर्धनता में जीएं, चाहे अमीरी में जीएं, वैभव में जीएं। जब तक जीवन के इस मूल चिन्तन को नहीं समझेंगे तब तक हम सही अर्थों में जीवित भी नहीं हो पाएंगे, तो फिर

- जीवन की परिभाषा को समझायेगा कौन?
- कौन बतायेगा कि हमाने जीवन का मकसद क्या है?
- कौन बताएगा कि यह जीवन व्यर्थ है?
- कौन समझायेगा कि यह जीवन प्रामाणिक है?
- कौन समझायेगा कि जीवन को किस तरीके से जीना चाहिए?
- क्या आपाधापी में भागते रहने को जीवन कहते हैं?
- क्या हड़बड़ाहट में चलते रहने को जीवन कहते हैं?
- क्या हर समय व्यस्त रहने और तनाव में से गुजरने की क्रिया को ही जीवन कहते हैं?
- क्या वृद्धता और जर्जरता, बीमारी, अशिक्षा, अभाव, कष्ट और पीड़ा को जीवन कहते हैं?
- क्या कफन ओढ़कर श्मशान में सो जाने को जीवन कहते हैं?

शास्त्रों में तो इसको जीवन नहीं कहा जाता है। शास्त्रों में तो इस क्रिया को मृत्यु कहा जाता है, और हम सही अर्थों में जीवित मुर्दे हैं, जो चलते तो हैं, मगर होश में नहीं है, जो खाते-पीते तो हैं, मगर उसका कोई अर्थ नहीं है, क्योंकि हमने कभी

इन रहस्यों को, उस चिन्तन को सोचा-समझा ही नहीं.. और सोचा-समझा नहीं तो उसका आनन्द भी नहीं लिया जा सकता। जीवन का आनन्द तो वह लेते हैं, जो जीवन को समझते हैं। जो कभी मानसरोवर के किनारे गया ही नहीं, वह मानसरोवर के आनन्द को समझ ही नहीं सकता। जो छोटी-छोटी तलैयाओं के किनारे बैठा रहा हो, वह क्या जाने कि मानसरोवर में क्या आनन्द है, कितनी विस्तृत झील है, कितना अतल जल है, कितना स्वच्छ निर्मल पानी है, वह उसके वैभव को, वह उसकी सम्पदा को, वह उस झील की विशालता को नहीं समझ सकता, वह उस तलैया को ही जीवन मान बैठा है।

मेंढ़क जब कुएं के जल में एक किनारे से चलना शुरू कर के और पूरा चक्कर लगा कर फिर उसी स्थान पर आ जाए और कहे—यही पूरा विश्व है, तो उसके हिसाब से तो यही विश्व है, क्योंकि उसने पूरा चक्कर काटा है... मगर यदि कभी मेंढ़क को तालाब में डाल दिया जाए तो उतने अथाह जल को देखकर वह आश्चर्य में पड़ जाएगा—अरे! मैंने तो कुछ देखा ही नहीं था, दुनिया तो कुछ और है, संसार तो कुछ और है... और यदि वह भूले से भी उस तालाब का पूरा चक्कर लगा दे और मन में प्रसन्नता व्यक्त कर ले, कि अब मैंने पूरा विश्व देख लिया है, पूरा जीवन देख लिया है, अब इससे बड़ा तालाब, इससे बड़े जल की राशि, इससे बड़ा जलाशय क्या हो सकता है? यह तो बहुत लम्बा-चौड़ा तालाब है, और मैंने प्रयत्न करके इसका पूरा एक चक्कर लगाया है, यही तो जीवन है... और यदि वह समुद्र में गिर जाए और समुद्र के अथाह जल को देखे तो उसे और अधिक आश्चर्यचकित हो जाना पड़ेगा, कि वह तो एक छोटा सा हिस्सा था, वह जीवन था ही नहीं।

—तुम्हारी भी स्थिति उस कुएं के मेंढक की तरह है, तुमने भी एक सीमित दायरे में घूमने की क्रिया को ही जीवन मान लिया है। पत्नी है, एक दो पुत्र हैं, थोड़ा सा धन है, मकान है, समाज में, सम्मान है, और इसी को तुमने जीवन मान लिया है, क्योंकि इससे बाहर निकलने का तुमको ज्ञान ही नहीं रहा, कभी बाहर गये ही नहीं, कभी देखा ही नहीं कि इससे बड़ा भी एक समाज है, स्थान है... और जब तुम वहाँ जाओगे, तो तुम देखोगे कि तुम जो जीवन जी रहे थे, तुम जिस घेरे में आबद्ध थे, वह तो एक बहुत छोटा सा हिस्सा है, जिसमें कोई आनन्द नहीं है, वह तो एक विवशता है, एक मजबूरी है। समाज में जिन्दा रहना तुम्हारी मजबूरी है। परिवार का पालन-पोषण करना तुम्हारी मजबूरी है। समाज तुम्हारे साथ या परिवार तुम्हारे साथ नहीं चल सकता, परिवार का सहयोग तुम्हें जीवन में नहीं मिलेगा।

जब 'वाल्मिकी' डाकू थे... ऋषि तो बहुत बाद में बने... उन्होंने रामायण की रचना तो बहुत बाद में की, पहले तो वह भयानक डाकू थे... जिनके नाम से पूरा आर्यावर्त घबराता था, थर-थर कांपता था, उस रास्ते से कोई राहगीर जा ही नहीं सकता था... लूटना... खसोटना... मारना... छीन लेना ही उसका कार्य था। एक बार नारद उसके हाथ में पड़ गये, नारद तो वीणा बजाते हुए नारायण-नारायण करते चले जा रहे थे, और डाकू वाल्मिकी ने उन्हें पकड़ लिया, सुबह से कोई शिकार मिला ही नहीं, बड़ी मुश्किल से यह आदमी नजर आया, उसने उनकी वीणा छीन ली।

नारद ने कहा–अरे! तुम एक साधु को लूट रहे हो, तुम ये क्या रह रहे हो?

उसने कहा–कोई दूसरा मिला ही नहीं, और जब तक मैं लूट-खसोट नहीं कर लूं, तब तक मैं भोजन करता ही नहीं, कोई कार्य करता हूँ.. तो भोजन करता हूँ, तुम पहले ही व्यक्ति मिले, दोपहर हो गई, यह वीणा बेच कर कुछ तो धन मिल ही जाएगा, और तुम्हारे कपड़े भी खोल लूं, ये कपड़े भी बाजार में बेच दूंगा।

नारद ने कहा–यह तो पाप है, यह तो अधर्म है... किसी साधु को, किसी संन्यासी को, किसी सामाजिक व्यक्ति को इस प्रकार से पकड़ना और उसका सामान छीन लेना क्या उचित है?

उसने कहा–उचित तो नहीं... मगर मैं यह करूँगा जरूर, क्योंकि मुझे अपने परिवार का पालन-पोषण करना है।

नारद ने कहा–क्या तुम्हारा परिवार तुम्हारा साथ देगा, क्योंकि तुम तो पाप कर रहे हो?

वाल्मिकी ने कहा–जरूर! यह पाप कर्म है, किसी की हत्या कर देना पाप है, किसी को छल से लूट लेना पाप है... मैं जानता हूँ कि यह पाप है, मगर मैं अकेला ही तो पाप नहीं कर रहा हूँ, अपने परिवार के लिए कर रहा हूं, तो परिवार मेरा साथ देगा ही।

नारद ने कहा–पहले तुम अपने परिवार वालों से पूछ लो।

वाल्मिकी ने एक रस्सी से नारद को पेड़ से बांध दिया और घर गए।

बूढ़ी मां को पूछा–तू मुझे बता, कि मैं छीना-झपटी, लूट-खसोट, हत्याएं कर रहा हूँ, यह पाप तो है ही।

मां ने कहा–बेटा जरूर पाप है।

वाल्मिकी ने कहा–मैं इससे तुम लोगों को रोटी खिला रहा हूँ, अन्न दे रहा हूँ, आवास दे रहा हूँ, तो तुम भी पाप में भागीदार हो।

मां ने कहा–मैं तो पाप में भागीदार नहीं होती, यह तुम्हारा कर्तव्य है कि मां को रोटी खिलाओ, तू कैसे कमा कर लाता है यह तू जाने... पाप करेगा तो पाप का फल तू ही भुगतेगा, मैं तो भुगतूंगी नहीं... और मैंने पाप के लिए तुझे कहा भी नहीं, मैं इसमें भागीदार नहीं हो सकती।

वाल्मिकी पत्नी के पास गए, पत्नी को कहा–देखो मैं डाकू हूं, और सैकड़ों लोगों की हत्याएं की हैं, लूटा है, खसोटा है, मारा है, औरतों के गहने छीने हैं और तुझे दिए हैं, तुझे पहिनाए हैं, क्या छीनना, झपटना, लूटना, मारना पाप है?

पत्नी ने कहा–नि:सन्देह पाप है।

वाल्मिकी ने पूछा–यह तुम्हारे लिए कर रहा हूँ क्योंकि ऐसा करने पर हीतो मैं तुम्हें अन्न दे सकता हूँ, भोजन दे सकता हूँ, आवास दे सकता हूँ, गहने दे सकता हूँ,

और तुम्हारे लिए ही तो कर रहा हूँ, तो तुम भी पाप में भागीदार हो।

पत्नी ने कहा–मैं तो पाप में भागीदार नहीं हूँ, मैं तो हूँ ही नहीं, एक पति का कर्तव्य है, धर्म है, कि वह पत्नी का भरण-पोषण करे, तुम मेरा भरण-पोषण करो... कैसे करते हो, यह तुम्हारी जिम्मेदारी है, यह तुम्हारा धर्म है, पाप का फल तुम्हें भोगना पड़ेगा।

वाल्मिकी वापस आ गए, नारद को पेड़ से खोला और छोड़ दिया, उसी क्षण उन्होंने डाकू का कार्य छोड़ कर के, छीना-झपटी का कार्य छोड़ कर साधु जीवन प्रारंभ कर दिया... क्या तुम भी वाल्मिकी डाकू से कुछ कम हो?... क्या तुम छीना-झपटी नहीं कर रहे?... छल नहीं कर रहे?... झूठ, कपट और असत्य नहीं कर रहे?... और यह सब तुम परिवारवालों के लिए कर रहे हो, और तुम्हें यह गलतफहमी है, कि ऐसा करने पर परिवार वाले तुम्हारा साथ देंगे, पाप में भागीदार होंगे। पाप में भागीदार तो वे नहीं होंगे, असत्य और अधर्म के वे भागीदार नहीं बनेंगे। तुम्हें अकेले ही यह पाप भोगना पड़ेगा, तुम खुद ही इसके जिम्मेदार हो–

–फिर तुम कब इस चेतना को, इस जीवन को समझ सकोगे?

–कब तुम्हें नारद मिलेंगे?

–कब तुम्हें वे ऋषि मिलेंगे?

–कब तुम्हें समझा सकेंगे कि यह जीवन नहीं है, जो तुम कर रहे हो।

–तुम अपने लिये क्या कर रहे हो?

–और जब तक तुम ऐसा करोगे तब तक जीवन में तुम्हें कुछ मिलेगा ही नहीं, तब तक जीवन का तुम अर्थ समझोगे ही नहीं, जरूरत तो तुम्हें यह है कि कोई ऋषि मिले, कोई नारद मिले, कोई गुरु मिले तो तुम्हें समझा सके, जो तुम्हें चेतना दे सके, जो तुम्हारे हृदय पर प्रहार कर सके, जो तुम्हें ज्ञान दे सके... यह सब कुछ बेकार है, जिस रास्ते पर तुम चल रहे हो उस रास्ते से तो श्मशान की यात्रा ही सम्भव हो सकेगी, यह तो कफन ओढ कर श्मशान में सोने की साधना है, प्रयोग है, जीवन है, इसमें कुछ पाना है ही नहीं, खोना ही खोना है। और तुम प्राप्त नहीं कर रहे हो... जो कुछ तुम प्राप्त कर रहे हो यह मकान, यह धन, ये चांदी के चंद टुकड़े, ये कागज के चंद नोट, यह पत्नी, यह पुत्र... यह तो मृत्यु के साथ पीछे खड़े रह जायेंगे, यह तुम्हारे साथ-साथ चलेगा ही नहीं, तुम्हारे साथ उनकी यात्रा नहीं है, और जो तुम्हारे साथ नहीं है, वे तुम्हारे सहयोगी नहीं हैं।

साथ तो तुम्हारे जीवन चलेगा, तुम्हारी प्राणश्चेतना चलेगी, तुम्हारी भावनाएँ चलेंगी। यदि तुम ऐसा चिन्तन करते हो, यदि तुम्हारे मन में ऐसा विचार है, तो तुम जीवन का पहला सबक सीख सकते हों, पहला अध्याय पढ़ सकते हो, मगर उसके लिए जरूरत है, दमखम के साथ कहने वाले गुरु की, समझाने वाले व्यक्तित्व की। एक ऐसे व्यक्तित्व की, जो तुम्हें डाकू जीवन में मनुष्य जीवन दे सके, एक ऐसे व्यक्तित्व की जो तुम्हें समझा सके, कि तुम जो कुछ कर रहे हो वह तुम खुद कर रहे हो, उसके लिए कोई सहयोगी नहीं है।

तुम्हारे पाप कार्य में कोई भागीदार नहीं है, तुम जो झूठ और छल कर रहे हो उसका फल भी तुम्हें भोगना पड़ेगा.. और जिन्होंने भी

अपने जीवन में झूठ, छल, कपट और असत्य का आचरण किया, उनका बुढ़ापा अत्यन्त दुखदायी अवस्था में व्यतीत हुआ... रोगों से जर्जर, अभावों से पीड़ित, असत्य, परेशान, दुखी, अतृप्त। जब बेटे उनको पूछते ही नहीं, जब बहुएं उनका साथ देती ही नहीं और समाज उन्हें धिक्कारता है कि इसने जीवनभर छल-कपट किया है।

—क्या तुम ऐसा जीवन चाहते हो?

—क्या तुम ऐसा बुढ़ापा चाहते हो?

—क्या तुम ऐसा चाहते हो कि मृत्यु तुम्हारा गला पकड़ ले और तुम छटपटाओ?

—क्या तुम ऐसा चाहते हो कि मरते समय तुम्हारी आँखों में से आंसू ढुलके, और कोई हमदर्दी दिखाने वाला न हो?

—क्या तुम ऐसा जीवन चाहते हो कि मृत्यु के बाद सब लोग तुम्हें धिक्कारें, और कोई तुम्हारे प्रति कृतज्ञता ज्ञापित नहीं करे?

—किसी की आँख नहीं भीगे, किसी के मन में रुलाई नहीं फूटे, क्या तुम ऐसा जीवन चाहते हो?

—ऐसा तुम्हारा जीवन किस काम आएगा, क्या प्रयोजन है इस जीवन का? क्योंकि इस जीवन को लाश की तरह उठा करके तो तुम इस जीवन में कुछ प्राप्त कर ही नहीं सकते, और इसीलिए नहीं कर सकते कि यह सब जीवन है ही नहीं। जो तुम्हारा जीवन है, वह तो पत्थरों के ढ़ेर को उठाकर चलने की क्रिया है... जो झूठ के पत्थर हैं, कपट के पत्थर हैं, असत्य और व्यभिचार के पत्थर हैं, और उनसे प्राप्त होता है दु:ख, परेशानियाँ, अड़चनें, बाधाएं, रोग, जर्जरता, बुढ़ापा और मृत्यु... यही तुम्हारे सामने हैं। दो-चार कदम चलने पर ही इनका सामना करना पड़ेगा, फिर तुम चाहे कितनी ही औषधियाँ लो यह सब व्यर्थ हैं... फिर तुम चाहे कुछ भी करो, बेकार है... फिर कोई तुम्हारा साथ नहीं देगा, घर वाले भी नहीं, पत्नी भी नहीं, पुत्र भी नहीं, बन्धु-बान्धव भी नहीं, समाज भी नहीं।

क्योंकि तुमने अपने जीवन में ऐसा मार्गदर्शक ढूंढ़ा ही नहीं जो तुम्हें ज्ञान दे सके, झकझोर सके, चेतना दे सके, दमखम के साथ तुम्हारे साथ खड़ा हो सके, तुम्हें कह सके कि यह सब गलत है, तुम्हें कह सके कि तुम गलत रास्ते पर हो, तुम्हें कह सके कि यह रास्ता श्मशान की ओर जाता है... अमृत की ओर नहीं, सुख और सौभाग्य की ओर नहीं, आनन्द की ओर नहीं।

—और यदि आनन्द की यात्रा नहीं है, सौभाग्य की यात्रा नहीं है तो वह जीवन नहीं है। ऐसे तो तुम्हारे बाप-दादा, परदादा हजारों लोग जाकर श्मशान में मृत्यु को प्राप्त हो गए, और आज उनका नाम लेने वाला भी कोई नहीं है। तुम भी उसी तरीके से मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे... और तुम्हें कोई पूछने वाला नहीं होगा, कोई तुम्हारे लिए विचार करने वाला भी नहीं होगा, कोई अहसास करने वाला भी नहीं होगा, कि तुमने कितना परिश्रम किया है।

—और इसीलिए जीवन में गुरु की जरूरत होती है...

जरूरत होती है जीवन के मध्य में। उस गुरु को प्राप्त करने की क्रिया भी तुम्हें ही करनी पड़ेगी, गुरु स्वयं तुम्हारे पास आकर के खड़ा नहीं होगा, तुम्हें ढूंढ़ना पड़ेगा। नदी को खुद गंगोत्री से चलकर समुद्र की ओर जाना होगा, समुद्र उठकर गंगोत्री के पास नहीं पहुंचेगा। तुम्हें खुद उठ कर उन पत्तों के पास, पुष्पों के पास पहुँचना पड़ेगा, जहाँ सुगंधित हवा है, जहाँ आनन्द की हिलोर है... वे खिलखिलाते, झूमते पुष्प तुम्हारे पास आकर के खड़े नहीं हो जाएंगे।

यात्रा तो तुम्हें स्वयं को करनी होगी, तुम्हें स्वयं को खोजना होगा। जिस प्रकार से तुम धन खोजते हो, पुत्र खोजते हो, उसी प्रकार से गुरु की खोज करना भी तुम्हारे लिए अनिवार्य है, आवश्यक है–ऐसा गुरु, जो सशक्तहो–जो समर्थ हो–जो योग्य हो–जो प्रहार करने वाला हो–जो हाथ पकड़ के समझाने वाला हो–जो तुम्हें चेतना देने वाला हो।

इस यात्रा में तुम्हारे अन्दर कई प्रकार की भ्रांतियाँ आएंगी, क्योंकि तुमने इन भ्रांतियों को ही पाल रखा है। तुमने अपने अंदर शक, सन्देह, कपट और व्यभिचार पाल रखा है, और वे सब तुम्हारे सामने तन कर खड़े हो जाएंगे, तुम्हारे मार्ग को पथभ्रष्ट करेंगे, तुम्हें कुमार्ग पर गतिशील करेंगे, वे कहेंगे–गुरु की खोज व्यर्थ है, तुम्हें यह कहेंगे–यह कार्य समय बर्बाद करना है। तुमने अपने जीवन में छल को प्रश्रय दिया है। तुमने अपने जीवन में कपट का साथ दिया है, तो वे इस समय तुम्हारे सामने खड़े रहेंगे, क्योंकि इससे उनका स्वार्थ समाप्त होता है।

कायर और बुजदिल हताश हो जाते हैं, निराश हो जाते हैं, खोज बंद कर देते हैं, मगर जो हिम्मती हैं, दृढ़ निश्चयी हैं, जो एक क्षण में भभक कर जल उठने वाले हैं, जो निश्चय कर लेते हैं कि मुझे कुछ करना है, खोज करनी है, मुझे एसा घिसा-पिटा जीवन नहीं जीना है, मुझे अपने जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेना है, जो जीवन का आनन्द है, जो जीवन का ऐश्वर्य है, जो मृत्यु से अमृत्यु की ओर जाने वाला है, जो आनन्द प्रदान करने वाला है, ऐश्वर्य प्रदान करने वाला है, जो सही अर्थों में पूंजी देने वाला है, धनवान बनाने वाला है, और उसकी खोज में जो पहला कदम आगे बढ़ा लेता है, वह साधक है, वह शिष्य है।

जो निश्चय करके यह प्रयत्न करता है कि मुझे गुरु को प्राप्त करना ही है, वह संन्यासी है, वह योगी है। दूसरा, जो इस रास्ते पर गतिशील होने की क्रिया करता है, वह सही अर्थों में तपस्वी है। जंगलों में खाक छानने वाले को तपस्वी नहीं कहते, चारों तरफआग लगा कर बीच में बैठने वाले को योगी नहीं कहते, जो जीवन के मर्म को समझने की कोशिश करते हैं, वे 'योगी' और 'संन्यासी' हैं, जो गुरु की खोज में आगे बढ़ते हैं, वे साधु हैं, जो गुरु को प्राप्त करके ही रहते हैं वे शिष्य हैं... और जो प्राप्त कर लेता है उसे जीवन के एक रास्ता मिल जाता है, उसे जीवन में एक चेतना मिल जाती है, वह निश्चय ही उस जीवन-पथ पर तेजी के साथ अग्रसर हो जाता है।

–शिष्य किसी हाड़-मांस के पिण्ड को नहीं कहते।

–शिष्य तो भाव है।

–शिष्य तो चेतना

है।

–शिष्य तो समर्पण का एक प्रकार है।

–जिसमें समर्पण नहीं, वह शिष्य हो नहीं सकता।

–हाथ जोड़कर खड़े होने वाले को भी शिष्य नहीं कहते।

किसी आंख, नाक, कान, हाथ, पैर वाले को शिष्य नहीं कहते। चलने-फिरने वाले व्यक्ति को शिष्य नहीं कहते, शिष्य तो उसे कहते हैं, जिसमें श्रद्धा और समर्पण है, जो इन दोनों से निर्मित होता है वह शिष्य कहलाता है... और अगर वह शिष्य बनता है, तो उसे रास्ते का ज्ञान होता है, भान होता है वह जीवन के रास्ते पर गतिशील हो सकता है।

मात्र दीक्षा लेने वाले को शिष्य नहीं कहते, सिर मुंडाने वाले को भी शिष्य नहीं कहते, हरिद्वार में स्नान करने वाले को भी शिष्य नहीं कहते, और गुरु के पैर दबाने वाले को भी शिष्य नहीं कहते, यह तो सब उसके प्रकार हैं।

शिष्य का तात्पर्य है कि नजदीक होना। गुरु के बहुत अधिक नजदीक हो जाना और इतना अधिक नजदीक हो जाना कि गुरु और शिष्य में कोई अन्तर ही नहीं रहे अगर अन्तर रह गया तो वह शिष्य बना ही नहीं, फिर वह अपने-आप को शिष्य नहीं कह सकता। गुरु और शिष्य में इतना भी गैप नहीं रहना चाहिए, इतना भी अन्तर नहीं रहना चाहिए कि बीच में से हवा भी निकल सके... उसके जीवन का सारा चिन्तन, सारा क्रियाकलाप गुरुमय ही हो जाता है... गुरु ही उसका ओढ़ना... गुरु ही उसका बिछौना... गुरु ही उसका भोजन... और गुरु ही उसका खाना... गुरु की ही वाणी बोलना... और गुरु के शब्दों का श्रवण करना... और गुरु की सेवा करना... गुरुमय हो जाना... और उसकी आँखों में गुरु का भाव तैरने लगता है।

इस जीवन मार्ग पर केवल शिष्य चल सकता है, साधक तो बहुत छोटी सी चीज है, शिष्य के सामने साधक की कोई औकात नहीं होती। योगी, तपस्वी उसके सामने कहीं ठहर नहीं पाते, उसके सामने यक्ष, गन्धर्व, किन्नर और देवता अपने-आप में कोई मूल्य नहीं रखते, क्योंकि शिष्य एक चेतना पुंज होता है, एक दीपक होता है, वह अपने-आप में श्रद्धा का एक पूर्ण स्वरूप होता है। समर्पण की साकार प्रतिमा होती है, जो गुरु के जगने से पहले जागता है, गुरु के सोने के बाद सोता है।

जो केवल इस बात का ही चिन्तन करता है कि गुरु की कैसे सेवा की जाए? हम गुरु के किस प्रकार से हाथ पैर बनें, नाक बनें, आंख बनें, सिर बनें, विचार बनें, भावना बनें, धारणा बनें, किस प्रकार से बनें? किस युक्ति से बनें जो केवल इतना और केवल इतना ही चिन्तन करता है, वही सही अर्थों में शिष्य कहलाता है... और सच्चा शिष्य... सही अर्थों में बना हुआ सच्चा शिष्य ही अपने-आप उस रास्ते पर खड़ा हो जाता है, जो पूर्णता का रास्ता है, जो पवित्रता का रास्ता होता है, जो ब्रह्म तक पहुँचने का रास्ता होता हैं इसीलिए शिष्य की समानता तो देवता, यक्ष, गन्धर्व कर ही नहीं सकते, तपस्वी और साधु तो बहुत छोटी सी बात है।

शिष्य में कोई
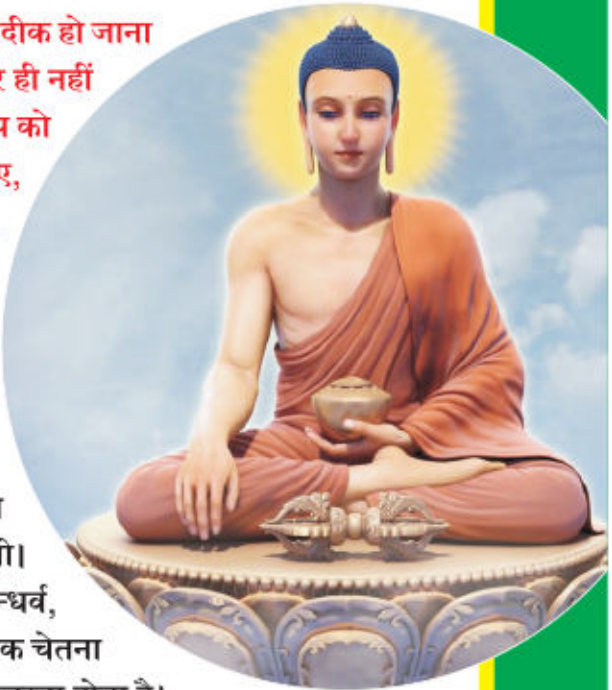
अलग तथ्य होता ही नहीं, वह गुरु का ही एक भाव होता है। गुरु की आंख को गुरु से अलग करके नहीं देखा जा सकता, गुरु के हाथ को गुरु से अलग करके नहीं देखा जा सकता, गुरु के सिर को गुरु से अलग करके देखा नहीं जा सकता, ठीक उसी प्रकार से शिष्य को भी गुरु से अलग करके नहीं देखा जा सकता। **जो केवल सम्पूर्ण दृष्टि से गुरुमय हो जाता है वह शिष्य बन जाता है, और वही शिष्य बहुत बड़ा कार्य करता है, संसार का अद्वितीय कार्य। ऐसा ही शिष्य अपनी सेवा द्वारा गुरु को एक अवसर प्रदान करता है कि वह अपने ज्ञान को संसार के सामने रख सके।**

यदि गुरु छोटे-छोटे कार्यों में व्यस्त हो जाएंगे तो ज्ञान किस समय देंगे? चेतना किस समय देंगे? जीवन के मूल्यवान कार्य किस समय करेंगे? इन छोटी-छोटी चीजों को शिष्य अपने ऊपर लेकर गुरु को अवसर प्रदान करता है, कि वह ज्ञान की नदी प्रवाहित करे, उनके कार्यों और तनावों को वह अपने ऊपर लेकर के, उनको यह अवसर प्रदान करता है कि वह ज्ञान का मानसरोवर विश्व के सामने जाग्रत करे, चैतन्य करें, जिसमें हजारों-लाखों लोग स्नान कर पवित्र हो सकें, दिव्य हो सकें, जिसमें शिष्य अवगाहन कर सकें... यह गुरु की सबसे बड़ी सेवा है, यही शिष्य का सबसे बड़ा कर्तव्य है।

धन देकर गुरु की सेवा नहीं की जा सकती, मिठाई खिलाकर भी गुरु की सेवा नहीं की जा सकती। यदि शिष्य गुरु के सम्मुख अपने धन, पद-प्रतिष्ठा जैसी नश्वर चीजों का बखान करता है तो वह मूर्ख है। शिष्य वह होता जो गुरु को अपने कार्यों द्वारा एक अवसर प्रदान करता है, वह यह नहीं देखता कि कौन सा कार्य छोटा है या बड़ा। वह यह नहीं कहता कि यह कार्य मेरा नहीं है वह तो बस उनकी व्यस्तता को अपने ऊपर झेल लेता है... और गुरु को मुक्त कर देता है, जिससे कि अन्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किया जा सके। एक नए ग्रन्थ की रचना की जा सके। एक उपासना का मार्ग खोजा जा सके।

प्राचीन ऋषियों के उन मूर्त वाक्यों को नए सिरे से जाग्रत और चैतन्य किया जा सके। एक नए सिरे से समुद्र का अवगाहन किया जा सके–और एक नई गंगा बनाई जा सके... एक नया गंगोत्री का स्थान बनाया जा सके... ओर यदि ऐसा होता है तो शिष्य सामान्य शिष्य नहीं रहता, फिर उसका कद अपने-आप में बहुत ऊंचाई पर उठ जाता है... फिर विश्व उसे श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखने लग जाता है।

आप यदि शिष्य बनें तो जनक और राम जैसे, कृष्ण और महावीर जैसे, बुद्ध और चेतना पुरुष जैसे योग्यतम शिष्य बनें, जिन्होंने शिष्यता के उन मापदण्डों को छुआ, जो अपने-आप

में भारतीय संस्कृति के लिए एक चेतना पुंज हैं। यदि शिष्य इस श्रद्धा और सम्मान को लेकर के, इस समर्पण को लेकर के आगे बढ़ता है, तो फिर उसे ध्यान करने की जरूरत होती ही नहीं, क्योंकि वह तो हर क्षण खोया रहता है, अपने गुरु के चरणों में। उसे गुरु के चरण दिखाई नहीं देते, वहाँ हरिद्वार दिखाई देता है। वह उन चरणों को स्पर्श करता है तो उसे ऐसा लगता है, कि जैसे उसने काशी का स्पर्श किया। जब गुरु-चरणामृत का पान किया तो ऐसा लगता है, कि जैसे उसने गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी में अवगाहन कर लिया। वह उन चरणों में काबा देखता है, काशी देखता है, वह उन चरणों में मक्का देखता है, वह उन चरणों में अपने सम्पूर्ण देवताओं के दर्शन करता है, फिर उसे अन्य साधना करने की जरूरत नहीं रहती है, अन्य साधनाएँ तो अपने-आप में गौण हो जाती हैं।

गुरु का शरीर अपने-आप में ही एक जीवित-जाग्रत मंदिर है, चलता-फिरता मंदिर ज्ञान का साकार पुंज... जब उस साकार पुंज को अपने में समेटे हुए शिष्य आगे बढ़ता है तब शिष्य की आंख बदल जाती है। वह उन सामान्य गृहस्थ लोगों की तरह से गुरु को देखता ही नहीं, उसे गुरु के रूप में ब्रह्मा, विष्णु, रुद, इन्द्र, वरुण, यम, कुबेर, दिग्पाल अपने सामने साकार दिखाई देते हैं। जब वह भक्ति-भाव से गुरु हो प्रणाम करता है तो उसे लगता है कि सामने चारों वेद खड़े हैं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। गुरु का प्रत्येक शब्द अपने-आप में मंत्रमय हो जाता है, वेद वाक्य बन जाता है। गुरु की दृष्टि अपने-आप में पूर्णता की दृष्टि होती है, ब्रह्म की दृष्टि होती है, जिसे पाकर वह अपने-आप को धन्य और गौरवशाली अनुभव करने लगता है। ध्यान-प्रक्रिया, तो अपने-आप को धन्य और गौरवशाली अनुभव करने लगता है। ध्यान-प्रक्रिया, तो अपने-आप में खो जाने की प्रक्रिया है, अपने-आप को अतल गहराइयों में डूबा देने की प्रक्रिया है। ध्यान का तात्पर्य तो इतना ही है कि उसे अपने शरीर का ध्यान नहीं रहे, ध्यान की प्रक्रिया का तात्पर्य यह है कि मानसवरोवर में बहुत गहराई में डुबकी लगाई हो। ध्यान की प्रक्रिया का तात्पर्य तो यह है कि बाहरी संसार, बाहरी क्रिया-कलापों का कोई अस्तित्व, कोई भान उसे जीवन पर नहीं है... और जब वह शिष्य बनता है, तब वह उस
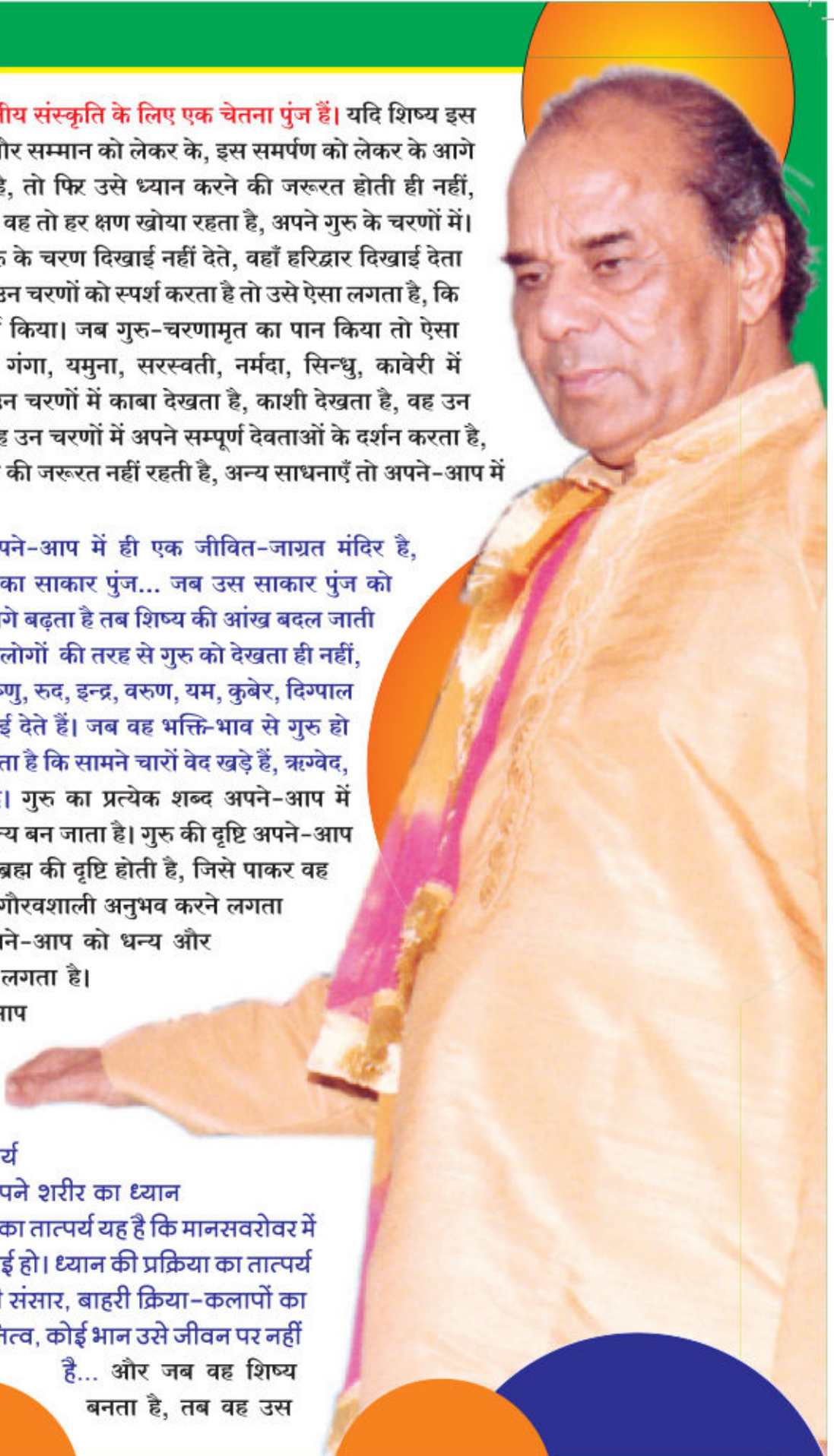
उच्चकोटि के ध्यान में संलग्न हो जाता है, जो गतिशील ध्यान है, जड़ ध्यान नहीं है। जड़ ध्यान तो आँखों को बंद करके पालथी मार कर अपने अन्दर उतरने की क्रिया है। वह तो बहुत सामान्य है, और आँख खोलकर ध्यान करने की प्रक्रिया तो अपने-आप में ब्रह्म की प्रक्रिया है। यह ब्रह्म साधना है, गतिशील होते हुए ध्यान करते रहने को पूर्णता की साधना माना गया है।

'पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्‌दमुच्यते'.... गतिशील है और पूर्ण बनता जा रहा है... गतिशील है और ध्यान करता जा रहा है, क्योंकि गतिशील होते हुए भी उसकी आँख में गुरु का ही बिम्ब रहता है... हर क्षण... हर पल... प्रतिपल। उसके जीवन का कण-कण, रोम-रोम गुरुमय होता जा रहा है, लीन होता जा रहा है, उसका खुद का कोई अस्तित्व होता ही नहीं, उसको अपने शरीर का कुछ भान ही नहीं होता, उसे सुख-दुःख व्याप्त होता ही नहीं, उसे थकावट लगती ही नहीं। वह अहसास ही नहीं करता कि मुझे विश्राम की जरूरत है, उसे तो एक ही चिन्तन रहता है कि मैं गुरु के चरणों में किस प्रकार से रहूँ? किस प्रकार से ज्यादा से ज्यादा उनके कार्यों में सहयोगी बनूं? किस प्रकार से उनके ध्यान में डूबा रहूं? रात्रि को वह अगर सोता भी है तो उसके मुंह से ही नहीं, उसके रोम-रोम से गुरु शब्द उच्चरित होता रहता है, गुरु मंत्र उच्चरित होता रहता है। उसका प्रारंभ, उसका सूर्योदय गुरु मंत्र से ही होता है, और उसकी निद्रा अवस्था गुरु से ही सम्पन्न होती है। यह गतिशील ध्यान है, यह अपने-आप में 'समाधि' की क्रिया है।
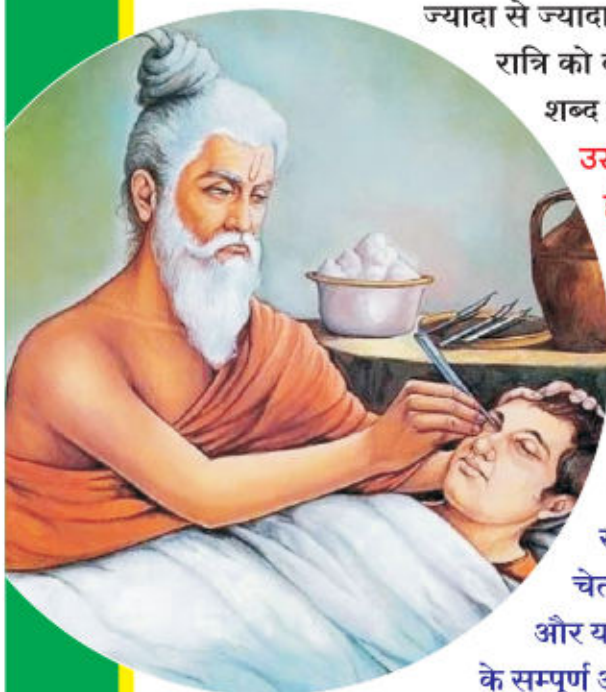
जमीन में गड़ने को समाधि नहीं कहते, वहाँ तो मुर्दे समाधिगत होते हैं, गड़ जाते हैं। जिसे अपने-आप का भान रहता ही नहीं, जो सम्पूर्ण चेतना के साथ गुरु के ज्ञान को, गुरु के कार्य को, गुरु की भावनाओं को, गुरु के आदर को, उनके सम्मान को, उनके शरीर को, उनके सौष्ठव को, अपने-आप में पूर्णता देने का प्रयास करता है... वह समाधि है। जब उसमें कोई दूसरा बिम्ब होता ही नहीं, जब कोई दूसरी चेतना ही नहीं होती, जब कोई दूसरा कार्य होता ही नहीं तब वह समाधि है, और यह गतिशील समाधि है, और इसको 'पूर्णत्व समाधि' कहा गया है। जीवन के सम्पूर्ण आयामों में पूर्णता प्राप्त करने हेतु, ब्रह्ममय होने में दो ही तो मुख्य प्रकार हैं, दो ही तो आधारभूत सत्य हैं–'ध्यान' और 'समाधि'।

जहाँ अपना भान नहीं रहता है वह 'ध्यान' है... और शिष्य को अपना भान होता ही नहीं, उसका खुद का कोई विचार ही नहीं होता। उसकी खुद की कोई क्रिया ही नहीं होती, वह तो खो जाता है, वह अपने-आप में डूब जाता है, निमग्न हो जाता है। गुरु उसे मानसरोवर में छलांग लगाने को कहते हैं। वह कहते हैं कि–इस किनारे पर खड़े मत रहो, किनारे पर पड़े घोंघे और पत्थरों को मत उठाओ क्योंकि इन घोंघों से, इन पत्थरों से तुम्हारे जीवन का मूल्य नहीं बन सकता।

इन छोटी-मोटी साधनाओं से तुम्हारे जीवन में पूर्णता नहीं आ सकती। तुम दो-चार साधनाएँ कर भी लोगे तो ठीक वैसा ही होगा, जैसे तुम ने दो-चार कंकर, दो-चार चमकीले पत्थर इकट्ठे कर लिए हों। दो-चार कंकर-पत्थरों से जीवन का सत्य, जीवन की पूर्णता का आभास नहीं

हो सकता। यदि तुम्हें वास्तविक पूर्णत्व के दर्शन करने हैं, यदि तुम्हें ब्रह्ममय बनना है, तो तुम्हें किनारे का मोह छोड़ना पड़ेगा, फिर तुम्हें बीच मानसरोवर में छलांग लगानी पड़ेगी, बिना किसी के साथ उस खतरे को उठाते हुए अपने-आप को चैलेंज देते हुए, अपने-आप को फ़ना करते हुए।

–और जो बीच धार में छलांग लगा लेता है, उसके हाथ मोतियों से भरे होते हैं। बाहर निकलते समय उसके सारे शरीर पर, हाथों में मोती ही मोती होते हैं, उसकी आँखों में चमक होती है, उसके ललाट में एक प्रशस्तता होती है, उसका भाल हिमालय से भी ऊँचा होता है, उसका सारा शरीर देदीप्यमान हो उठता है.... और यह जीवन का सत्य है, डूब जाना अपने-आप में जीवन की पूर्णता है, क्योंकि वह सही अर्थों में पहली बार समाज के बंधनों को तोड़ कर पंख फड़फड़ाने लगता है, पंख फड़फड़ाना सीखता है।

तुम पिंजरे में बंधे हुए राजहंस पक्षी हो, मगर तुम्हें अपने कुल और गोत्र का ज्ञान ही नहीं रहा, तुम्हें भान ही नहीं रहा कि पिंजरे के बाहर भी मेरा जीवन है। तुम हर समय भयभीत रहे कि कोई भी झपट्टा मार सकता है, कोई भी तुम्हारे पंख नोंच सकता है। हर समय तुम भय से आक्रांत रहे कि कभी भी, कोई भी हमला कर देगा, और तुम्हारे जीवन को समाप्त कर देगा... यह जीवन तो पिंजरे में पड़े-पड़े भी समाप्त हो जाएगा... मृत्यु तो पिंजरे के अन्दर भी तुम पर झपट्टा मार देगी... उस समय तुम्हारे पास कोई चेतना नहीं होगी... कोई सहायक नहीं होगा... मृत्यु को धकेलने की तुम्हारे पास कोई क्रिया नहीं होगी।

गुरु तुम्हें पहली बार पिंजरे से बाहर निकालता है, समाज के बन्धनों से बाहर निकालता है, एक चेतना देता है, एक विस्तार देता है, तुम्हारे पंखों में ताकत देता है। जब तुम शिष्य बनते हो, जब तुम्हारी आँखों में गुरु भाव होता है, तो गुरु तुम्हें सही अर्थों में राजहंसों की पंक्ति में खड़ा करता है। तुम्हें अहसास करवाता है कि तुम बगुले नहीं हो, तुम्हें अहसास करवाता है कि तुम मामूली पक्षी नहीं हो, राजहंस बनाकर आकाश में उड़ने की क्रिया सिखलाता है... और तुम निर्भय आकाश में अपनी पूर्ण क्षमता और गति के साथ उड़ते ही चले जाते हो, अनन्त की ओर, ब्रह्मत्व की ओर, पूर्णत्व की ओर... और तुम सही अर्थों में उस आनन्द को प्राप्त कर लेते हो, जिसे ब्रह्मानन्द कहा है। यही तो जीवन है, और इसके लिए अपने-आप को खो देने की क्रिया होनी चाहिए।

–मैं खो गया हूँ।

–तुम्हें भी खो जाना है।

–क्योंकि गुरु भी पहले खोया है।

गुरु भी पहले अपने-आप में बीज रूप में था, एक छोटा सा बीज, एक चुटकी में आने लायक बीज, यदि उस बीज रूपी गुरु ने अपने-आप को मिट्टी में मिलाया, तो कुछ समय बाद वही बीज अत्यन्त विशाल बरगद का पेड़ बना, विशाल वृक्ष बना, छायादार वृक्ष, जिसके नीचे हजारों-लाखों लोगों ने विश्राम किया, आनन्द लिया, क्योंकि उन्होंने खो देने की

प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त किया, चैलेन्ज लिया कि मुझे खो देना है अपने-आप को, अपने-आपको समाप्त कर देना है।

जो अपने-आप में समाप्त होने की क्रिया जानता है, वह अपने-आप में पूर्णता प्राप्त करने की क्रिया भी जानता है। जो डूब सकता है, वह निकल सकता है। भयभीत, कायर, बुजदिल और नामर्द अपने जीवन में कुछ भी नहीं कर सकते। जो जीवन में चैलेंज लेते हैं, वे मृत्यु के गाल पर थप्पड़ भी लगा सकते हैं। जो जीवन में शिष्य बनने का भाव पैदा करते हैं, वे काल के भाल पर अपना नाम अंकित कर लेते हैं। आने वाली पीढ़ियाँ उनका नाम गौरव और मर्यादा के साथ लेती है, उनके जीवन में एक चेतना होती है, उनके जीवन में एक पूर्णता होती है। जो आज मिटते हैं, आज खो जाते हैं, जैसे बीज खो गया और गुरु के रूप में विशाल वटवृक्ष बना। यदि शिष्य भी अपने बीज को समाप्त कर लेता है, मिटा देता है, खो जाता है, चेतना युक्त बन जाता है, तो कल वह भी हजार-हजार बीजों के रूप में, हजार-हजार पौधों और पेड़ों के रूप में, विशाल वटवृक्षों के रूप में अवतरित होता है... और लाखों-करोड़ों लोगों को संताप से मुक्त कर सकता है, सांत्वना दे सकता है। यह खो लेने का भाव, यह अपने-आप में चेतना शून्य बना लेने का भाव शिष्यता है।

–दीक्षा लेने की क्रिया को शिष्यता नहीं कहा जाता है।

–हाथ जोड़ लेने की क्रिया को भी शिष्यता नहीं कहा जाता।

–केवल होठों से गुरु-गुरु कहने की क्रिया को भी शिष्यता नहीं कहते।

–केवल होठों से गुरु मंत्र उच्चारण करने को भी शिष्यता नहीं कहा जाता। शिष्यता तो इससे बहुत ऊंची वस्तु है, तथ्य है। शिष्य वही बन सकता है जो खो सकता है, अपने-आप को मिटा सकता है, जो बीच समुद्र में कूदने की क्रिया को कर सकता है, जो बिना हिचकिचाहट के आकाश में उड़ सकता है, जो सुगन्धित पवन बनकर पूरे विश्व में फैल सकता है, जो सेवा का साकार पुंज होता है, जो श्रद्धा का आधार होता है, जो समर्पण और मूर्तिमान स्वरूप होता है।

शिष्य के माध्यम से ही समझा जा सकता है कि समर्पण क्या है? उसके द्वारा ही जाना जा सकता है कि सेवा क्या होती है? किसे कहते हैं? यह देवी-देवताओं की सेवा, पूजा और घंटे-घड़ियाल बजाना अपने-आप में ढोंग है, पाखण्ड है, यह तो अपने-आप में भुलाने की एक क्रिया है।

यदि चैतन्य देवता, तुम्हें लाभ नहीं प्रदान कर सकते, तो फिर वे मूर्तियाँ तुम्हें क्या लाभ पहुँचा सकती हैं? वह तुम्हें क्या दे पाएंगे? जो प्राणवान शिष्य हैं, चेतनायुक्त शिष्य हैं, जो मूर्तियों के पीछे भटकने की अपेक्षा उस जीवित-जाग्रत देवता की, उस चैतन्य स्वरूप की पूजा, अर्चना, साधना, आराधना करता है। उसके लिए कोई गंगा नहीं होती, कोई यमुना नहीं होती, उसके लिए गुरु के चरणों का जल ही गंगा होती है, उसमें स्नान कर वह अपने-आप को धन्य महसूस करने लगता है। उसके लिए किसी प्रकार के तीर्थ और पाठ नहीं होते, गुरु के शब्द उसके लिए वेद होते हैं, गुरु की कृपादृष्टि उसके लिए अमृत वर्षा होती है, जिसमें भीग कर वह अपने-आप को पूर्णता की ओर अग्रसर कर सकता है।

गुरु के शब्द ही वेद, शास्त्र, उपनिषद और मीमांसाएं होती हैं, जो शिष्य में सीधे उतर जाती हैं। पुस्तकों के अध्ययन के माध्यम से और वेदों के पठन के माध्यम से ज्ञान नहीं प्राप्त हो सकता। चिल्लाने और चीखने से वेद सामने प्रत्यक्ष नहीं हो सकते हैं। गुरु-कृपा से वह शिष्य तो स्वयं वेदमय बन जाता है, शास्त्रमय बन जाता है, क्योंकि वह अपने-आप में सही अर्थों में श्रद्धा का एक स्वरूप होता है, समर्पण का एक भाव होता है। इसके माध्यम से ही वह अपनी सितार को, गुरु की सितार से जोड़ देता है, अपने प्राणों को गुरु के प्राणों से जोड़ देता है, अपनी चेतना को गुरु की चेतना से जोड़ देता है और सही अर्थों में वह गुरुमय बन जाता है।

-जब गुरुमय बन जाता है, तो अपने-आप ध्यान की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है, फिर उसे पालथी मारकर ध्यान लगाने की जरूरत नहीं होती है। फिर उसे भूमि में गड़कर समाधि लेने की क्रिया की आवश्यकता नहीं होती, फिर उसे किसी देवी-देवताओं के सामने मनौती नहीं मांगनी पड़ती, फिर उसे हाथ नहीं जोड़ने पड़ते, गिड़गिड़ाना नहीं पड़ता, देवताओं के सामने खड़ा नहीं होना पड़ता,

क्योंकि वह स्वयं अपने अन्दर गुरु को समाहित कर पूरी तरह से खो जाता है, गुरुमय बन जाता है... और फिर वह दूसरों को खोने की भावना दे सकता है।

ऐसा ही भाव तुम्हारे जीवन में बने, तुम सही अर्थों में शिष्य बन सको मैं ऐसा ही आशीर्वाद प्रदान कर रहा हूँ।

पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

रोग मुक्ति माला

405/-

आज मनुष्य का जीवन भागदौड़ एवं भोग विलास में लिप्त हो गया है। न ही संतुलित भोजन मिल पाता है, न ही समय पर। शरीर को सही आहार न मिलने से कई बीमारियाँ अकारण ही उत्पन्न हो जाती हैं और जानते हुए भी पूर्ण परहेज के साथ उनका उपचार नहीं कर पाता। ऐसी स्थिति हेतु पूज्य गुरुदेव ने इस बार कृपा करके रोग मुक्ति माला का निर्माण कराया है। यह विशेष माला महामृत्युंजय मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठित की गई है, जो कि आपके लिए रोग मुक्ति हेतु सहायक है। इसे धारण करें एवं जीवन को आनन्दपूर्वक जियें।

विधि

किसी भी सोमवार के दिन पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाएं एवं माला अपने सामने सफेद वस्त्र बिछाकर चावल की ढेरी बनाकर स्थापित कर दें। फिर भगवान शिव के स्वरूप का ध्यान करते हुए 10 मिनट तक निम्न मंत्र का जप करें और तत्पश्चात माला को धारण कर लें। 40 दिनों तक इसे धारण रखें फिर जल में विसर्जित कर दें। कोशिश करें कि इन 40 दिनों में इस मंत्र का नित्य 5 मिनट जप करते रहें।

मंत्र

ॐ शं सर्व रोगाय निवृतिं शं ॐ नमः

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : **नारायण मंत्र साधना विज्ञान**

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

★ 27.2.21, 11.3.21
★ होली या किसी भी बुधवार से

धनदा तंत्र

दरिद्रता को जड़-मूल से समाप्त करने का तंत्र

लक्ष्मी साधना

जीवन के सभी कार्यों में कम समय में ही पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेने के लिए क्रमबद्ध तरीका अपनाना पड़ता है। साधनाओं के क्षेत्र में साधनाओं को भक्ति से जोड़कर देखने के स्थान पर भावना से जोड़कर देखना चाहिए। भक्ति और भावना में सूक्ष्म भेद है। भक्ति एक नितान्त स्वार्थपरक क्रिया है, जबकि भावना अपने इष्ट या देवी-देवता में सहज, सम्मान और प्रेम की स्थिति है। साधक को अपने जीवन में भावना प्रधान ही होना चाहिए।

साधनाओं का निश्चित विज्ञान है और उसमें निरन्तर लघु रूप खोजे जाते रहते हैं। चाहे वह यंत्रों की बात हो अथवा किसी तांत्रिक पद्धति की। ऐसे मंत्रों की संरचना ढूंढने के प्रयत्न किए जाते रहते हैं जो शीघ्र प्रभावोत्पादक हों।

लक्ष्मी प्राप्ति के कई उपाय हैं मंत्रात्मक भी, स्तोत्र पाठ भी और सामान्य पूजन भी किन्तु तंत्र का प्रयोग करना आवश्यक होता है। लक्ष्मी प्राप्ति के लिए तंत्र का निर्माण किया गया और उनमें प्रारम्भिक तंत्र धनदा तंत्र ही माना गया।

जहाँ अर्थोपार्जन की बात आती है वहाँ यह आवश्यक हो जाता है कि व्यक्ति क्रमबद्ध उपाय कर अपने जीवन में स्थान दे, क्योंकि जितना अधिक प्रयास अर्थोपार्जन करने के लिए करना पड़ता है और जितना अधिक उपायों का प्रयोग व्यवहार में लाना पड़ता है उतना अधिक सम्भवत: जीवन के किसी भी पक्ष में नहीं करना पड़ता। यदि व्यक्ति साधनात्मक रूप से किसी उपाय व मदद को प्राप्त नहीं करता अर्थात् साधनात्मक रूप से लक्ष्मी तंत्र का अवलम्ब नहीं लेता तब भी व्यवहारिक रूप से तो उसे जोड़-तोड़ करनी ही पड़ती है। अर्थात् साधनात्मक नहीं तो 'व्यवहारिक तंत्र' का प्रयोग करना पड़ता है। साधनात्मक रूप से तंत्र का प्रयोग करना तो फिर भी सहज है जबकि इस व्यवहारिक तंत्र में तो न जाने कैसे-कैसे प्रयोग करने पड़ते हैं। किस तरह से युक्तियाँ बैठा कर वैध-अवैध रूप से धन प्राप्त करने के प्रयास किये जाते हैं और निरन्तर इधर से उधर दौड़ते रहने में मानसिक रूप से उलझे रहने में वह आनन्द तो समाप्त ही हो जाता है, जिसके लिए इतना परिश्रम करके हम धन बटोरते हैं।
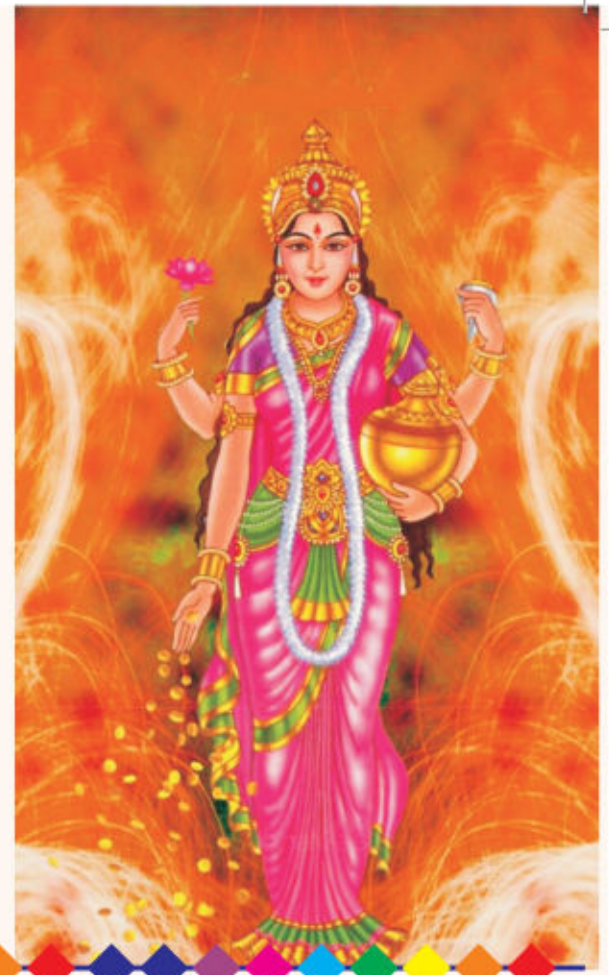
जीवन में धन के लिए अत्यधिक हाय-तौबा न हो, धनदा तंत्र इसी का उपाय प्रस्तुत करता है। धनदा तंत्र लक्ष्मी साधनाओं का एक सिद्ध सफल तंत्र माना गया है। जो मूलरूप से भगवती दुर्गा की शक्तिमयता का ही विशिष्ट प्रयोग है। भगवती दुर्गा अपने मूल स्वरूप में शक्ति प्रधान है किन्तु भगवती दुर्गा की ही एक विशेष पद्धति से साधना कर जीवन में अर्थ लाभ भी प्राप्त किया जा सकता है।

धनदा तंत्र की सबसे विशेष बात यह है कि यह जीवन में दरिद्रता का विनाश जड़मूल से कर देता है। दरिद्रता का अभिशाप व्यक्ति का सारा व्यक्तित्व इस प्रकार से ग्रसित कर लेता है कि वह असमय ही जीवित रहते हुए मृत्यु तुल्य हो जाता है। दरिद्रता के द्वारा व्यक्ति का जीवन तो अभावग्रस्त होता ही है उसका चिन्तन, आध्यात्मिकता कुण्ठित और धुंआ देती हुई हो जाती है। यदि ऐसी स्थिति पर समय रहते नियन्त्रण न प्राप्त किया जाय तो व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व, जीवन व साथ ही उसका परिवार भी असमय समाप्त हो जाने की स्थिति में आकर खड़ा हो जाता है। धन के अभाव में होने वाली नित्य गृहकलह से ऊब कर व्यक्ति अपने जीवन से भी निराश हो जाता है।

प्राय: दुर्भाग्यवश, पूर्व जन्मकृत दोषों के कारण व्यापार में अचानक घाटा आ जाने पर या व्यापार में ही किसी खरीद पर गलत निर्णय ले लेना, पार्टनर द्वारा धोखा दिये जाने पर, नौकरी छूट जाने पर, ऋण में डूब जाने पर या बेरोजगारी के कारण व्यक्ति के जीवन में ऐसी स्थितियाँ आ जाती हैं कि उसे कोई भी मार्ग नहीं सूझता और ऐसी स्थिति में उसकी प्रारम्भिक आवश्यकता होती है कि उसका अभाव और दरिद्रता समाप्त हो। जो अशुभ उसके ऊपर मंडरा आया है, जो दैन्य और कष्ट उसके पूरे परिवार को त्रस्त कर रहा है, वह समाप्त हो और तब निश्चित रूप से धनदातंत्र की यह साधना ही लाभदायक सिद्ध होती है।

ऐश्वर्यवान बनना, भौतिक दृष्टि से सन्तुष्ट होना आवश्यक है लेकिन लम्बी छलांग मारकर इसे प्राप्त नहीं किया जा सकता वरन...

धनदा तंत्र की सबसे विशेष बात यह है कि यह जीवन में दरिद्रता का विनाश जड़मूल से कर देता है। दरिद्रता का अभिशाप व्यक्ति का सारा व्यक्तित्व इस प्रकार से ग्रसित कर लेता है कि वह असमय ही जीवित रहते हुए मृत्यु तुल्य हो जाता है। दरिद्रता के द्वारा व्यक्ति का जीवन तो अभावग्रस्त होता ही है उसका चिन्तन, आध्यात्मिकता कुण्ठित और धुंआ देती हुई हो जाती है।

जीवन में ऐश्वर्यवान बनना, सम्पन्न बनना, भौतिक पक्षों से सुखी व सन्तुष्ट होना अतिआवश्यक है। किन्तु उसको एक लम्बी छलांग मारकर एकाएक नहीं प्राप्त किया जा सकता और विशेष रूप से जहाँ जीवन में उपरोक्त दशाएँ आकर जीवन को ग्रसित कर गई हो वहाँ धनदा तंत्र का यह प्रयोग ही प्राथमिक स्थिति है। जब तक दरिद्रता का विनाश नहीं होगा, तब तक प्राथमिक साधना नहीं होगी तब तक पूर्ण सुख और ऐश्वर्य की स्थिति कहाँ से निर्मित होगी? साधक इस बात की उपेक्षा कर जाते हैं और एकाएक बहुत कुछ प्राप्त करने के उपाय ढूंढने में उलटे असफल ही हो जाते हैं।

धनदा का स्वरूप अत्यन्त सौन्दर्य और वरदायक प्रभाव से युक्त है। वे शक्तिस्वरूपा होते हुए भी भगवती पद्मा के समान ही सौन्दर्यमयी एवं तेजोमयी है।

धं

यह साधना किसी भी बुधवार की रात्रि में दस बजे से प्रारम्भ करें। लाल वस्त्र धारण कर अपने सामने आटे की एक छोटी सी ढेरी बनाकर और उस पर ऊंगलियों से षटकोण खीचें, षट्कोण के मध्य में **'धं'** बीज मंत्र लिखकर एक लाल फूल चढ़ाएं तथा एक **सौभाग्य फल** चढ़ा कर **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें–

मंत्र

ॐ श्रीं धनदायै ह्रीं धनेश्वर्यै नमः

यह ग्यारह दिनों का प्रयोग है और प्रत्येक दिन एक नए सौभाग्यफल का प्रयोग करना है। प्रतिरात्रि की साधना के उपरान्त दूसरे दिन सुबह वह आटा जिस पर यंत्र बनाया था एवं सौभाग्य फल किसी को दान में दे दें और ऐसा नित्य ग्यारह दिन तक करें। अन्तिम दिन आटे एवं सौभाग्य फल के साथ जिस माला द्वारा मंत्र जप किया है उसे भी कुछ दक्षिणा के साथ किसी को दान में दे दें। ऐसा करने से घर की सम्पूर्ण दरिद्रता चली जाती है और मानसिक शांति का उदय होता है।

उपरोक्त मंत्र विशेष प्रभाव से युक्त है और भविष्य में भी नित्य प्रति इसका एक निश्चित संख्या में उच्चारण करते रहना चाहिए। इस साधना में सिर्फ मूंगे की माला एवं 11 सौभाग्य फलों की आवश्यकता होती है।

साधना सामग्री- 390/-

अमृत-बिन्दु

- जीवन के दिन बहुत ही जल्दी-जल्दी बीते जा रहे हैं। परोपदेश में ही आयु बिता देंगे तो न तुम्हारा ही कल्याण होगा और दूसरों का ही दु:ख दूर होगा। उपदेश को स्वयं अपने ऊपर उतार कर समाज में उदाहरण प्रस्तुत करें।
- भगवान आनन्दस्वरूप हैं, वहाँ तो दु:ख का नाम भी नहीं, फिर उन्होंने आपको दु:ख कहाँ से दिया ?
- मानव-आकृति या हाड़-मांस की महिमा नहीं है, मानव में जो विवेक-शक्ति है उसी की महिमा है।
- भक्ति अपने सुख के लिए हुआ करती है, दुनिया को दिखलाने के लिए नहीं। जहाँ दिखलाने का भाव है, वहाँ कृत्रिमता है।
- जहाँ तुम्हारा मन है, तुम वहीं हो, चाहे मन्दिर में रहो या वन में।
- भगवान की याद आते ही शान्ति छा जाती है और संसार की याद आते ही हलचल मच जाती है।
- पुत्र, स्त्री और धन से सच्ची तृप्ति नहीं हो सकती। यदि होती तो अब तक किसी न किसी योनि में हो ही जाती। सच्ची तृप्ति का विषय है-केवल परमात्मा, जिनके मिल जाने पर जीव सदा के लिये तृप्त हो जाता है।
- सरलता, कोमलता तथा भरोसे से हृदय को भर लो और फिर पुकारो। तुम्हारी पुकार व्यर्थ नहीं जायेगी।
- दु:ख मनुष्यत्व के विकास का साधन है।
- स्नान और ईश्वरोपासना किये बिना भोजन नहीं करना चाहिए।
- भगवान को पूरी शक्ति से अपनी ओर आकर्षित करने का सुगम उपाय है-उनकी ओर अपनी पूरी शक्ति से आकृष्ट होकर चल पड़ना, उनकी साधना में लग जाना।
- जब तक कामना है, तब तक चिन्ता नहीं मिट सकती।
- अन्य वस्तुएं नष्ट होने पर पुन: प्राप्त की जा सकती हैं, पर बीता हुआ समय फिर नहीं आता। अत: एक क्षण भी निरर्थक नष्ट न हो, यह सतत ध्यान रहना चाहिये।
- विषय-चिन्तन सर्वनाश की जड़ है और भगवत् चिन्तन-दु:खों से छूटने का मूल मन्त्र।

• गुरु पुष्यामृत योग • 25.02.21

(समय – प्रात: 7.09 से 1.17 दोपहर तक)

जिन्दगी

मुस्कराने लगती है

सर्व सिद्धि साधना प्रयोग से

जीवन में कुछ दिन ऐसे होते हैं, जिनका यदि उपयोग कर लिया जाय, तो पूरा जीवन जगमगाहट से भर जाता है। काल का तात्पर्य यह है, कि हम समय को पहिचानना सीखें, यदि ठीक समय पर ठीक काम किया जाय तो निश्चिय ही उसका शुभ फल प्राप्त होता ही है, एक अंग्रेजी लेखक ने कहा है, कि समय एक ऐसा पुरुष है, जो सिर के पीछे आधे भाग में गंजा है, और आगे के आधे भाग में लम्बे-लम्बे बाल हैं, यदि समय आते ही हम उसे पकड़ लेते हैं, तो वह पूरी तरह से वश में हो जाता है, परन्तु वह समय यदि पास में से होकर निकल जाता है, तो फिर उसे पकड़ना संभव नहीं होता।

साधना के क्षेत्र में भी यही बात है, यदि साधना दिवस को ध्यान में रखकर वह साधना सम्पन्न करें,
तो निश्चय ही अनुकूल फल प्राप्त हो जाते हैं और हमारे जीवन की सारी समस्याओं का समाधान हो जाता है।
इसके अलावा अन्य दिनों में भी साधना सम्पन्न करने पर अनुकूल फल तो प्राप्त होता ही है,
परन्तु समय की या उससे सम्बन्धित दिवस की महत्ता अपने आप में अन्यतम है।

साधना से ही जीवन में जगमगाहट

यदि सही रूप में देखा जाय तो हमारा अब तक का बीता हुआ जीवन परेशानियों, बाधाओं, अड़चनों और कठिनाइयों से भरा हुआ है, हमें जीवन में जो कुछ सुख मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल पाया। हम जीवन में जो कुछ आनन्द लेना चाहते थे, वह नहीं ले पाये और हम पद के लिए, धन के लिए और प्रभुता के लिए बराबर परेशान होते रहे, झगड़ते रहे, जरूरत से ज्यादा परिश्रम करते रहे, परन्तु हमें जो अनुकूल फल प्राप्त होना चाहिए था, वह नहीं मिल पाया।

इसका कारण यह है कि व्यक्ति उन्नति तभी कर सकता है, जब उसके पास दैवी शक्ति हो, दैवी शक्ति की सहायता से ही व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण उन्नति एवं सफलता प्राप्त कर सकता है, महाभारत काल में भी जब अर्जुन को युद्ध में विजय प्राप्त करने की इच्छा हुई तो भगवान श्री कृष्ण ने उसे यही सलाह दी, कि बिना दिव्य अस्त्रों के युद्ध में विजय प्राप्त करना असंभव है इसलिए यह जरूरी है, कि पहले तुम भगवान शिव और इन्द्र की आराधना करो, उनसे दैविक अस्त्र प्राप्त करो और ऐसा होने पर ही तुम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हो।

और हम भी जो जीवन के इस युद्ध में लड़ तो रहे हैं परन्तु जिस प्रकार से विजय प्राप्त होनी चाहिए, उस प्रकार से विजय या सफलता नहीं मिल रही है, क्योंकि यह जीवन का युद्ध केवल हम अपने बाहुबल से ही लड़ रहे हैं, जबकि हमारे पास दैविक शक्ति होनी चाहिए, यदि हम दैविक शक्ति को प्राप्त कर लेते हैं तो निश्चय ही जीवन में सफलता प्राप्त करना सरल, ज्यादा अनुकूल और ज्यादा सुविधाजनक हो जाता है, और ऐसा करने पर ही सम्पूर्ण जीवन में जगमगाहट प्राप्त हो सकती है।

साधना तो कोई भी कर सकता है

विविध शास्त्रों में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि साधना के लिए ज्यादा पढ़ा-लिखा होना आवश्यक नहीं है, उसके लिए यह भी जरूरी नहीं है कि वह संस्कृत का भली प्रकार से उच्चारण करना जानता हो, लम्बे-चौड़े विधि-विधान या पूजा-पाठ की भी आवश्यकता नहीं है।

साधना की पूर्ण सफलता के लिए तो यह जरूरी है, कि साधक मन में यह दृढ़निश्चय कर ले, कि मुझे अपने जीवन को संवारना है, मुझे अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करनी है, और मैं समाज में तथा देश में उन्नति के शिखर पर पहुंच कर पूर्णता प्राप्त करके ही रहूंगा।

इसके साथ ही साथ जिस प्रकार से प्रयोग या विधि बताई गई है, उस प्रकार से यदि वह प्रयोग सम्पन्न करता है तो निश्चय ही उसे अनुकूलता प्राप्त होती है, निश्चय ही उसे जीवन में सिद्धि प्राप्त होती है और वह इस प्रकार के जीवन के दु:ख दैन्य बाधाएं और परेशानियों को दूर करने में सफल हो पाता है तथा जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, जो उसके जीवन का लक्ष्य होता है जो उसके जीवन का उद्देश्य होता है।

साधना सामग्री की अनिवार्यता

देव्योपनिषद में स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि साधना और सिद्धि के लिए व्यक्ति में दृढ़निश्चय की जरूरत होती है, तो साथ ही साथ साधना सामग्री की भी नितान्त आवश्यकता होती है, क्योंकि बिना साधना सामग्री के साधना में सफलता प्राप्त नहीं हो पाती।

जिस प्रकार बिना अच्छे किस्म के हथियारों के युद्ध में विजय प्राप्त नहीं की जा सकती, ठीक उसी प्रकार से श्रेष्ठ मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री के बिना साधना में भी सिद्धि प्राप्त नहीं की जा सकती। पूर्ण सफलता के लिए यह आवश्यक है, कि हम जो साधना सम्पन्न कर रहे हैं, वह प्रामाणिक हो और उसमें जो सामग्री बताई गई है, वह मंत्र सिद्ध हो और उस साधना के लिए अनुकूल हो, ऐसी सामग्री प्रयोग कर निश्चय ही साधक अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

जब हम उच्चकोटि के देवताओं या देवियों को वश में करना चाहते हैं, जब हमें लक्ष्मी या काली आदि देवियों को अपने अनुकूल बनाना है तो हमें भी उनके अनुरूप अपने आपको ढालना पड़ेगा। शरीर को शुद्ध करना पड़ेगा, अपने नियंत्रण में करना पड़ेगा।

पत्रिका आपकी उन्नति में सहायक

पत्रिका का यह प्रारम्भ से ही उद्देश्य रहा है, कि सम्पूर्ण शास्त्रों को मथ कर सम्पूर्ण साधनाओं का निचोड़ प्राप्त कर जो सरल विधि हो, जो प्रामाणिक विधि हो, वह पत्रिका पाठकों को दी जाय, उसे जो भी मंत्र, जो भी साधना या जो भी सामग्री दी जाय, वह अपने आप में प्रामाणिक और श्रेष्ठ हो और यदि साधक उस साधना को सम्पन्न कर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेता है, तो यह पत्रिका के लिए गौरव की बात होती है।

सर्व सिद्धि साधना प्रयोग

25.02.21 को एक श्रेष्ठ योग निर्मित हुआ है जो कि सर्व साधना प्रयोग के लिए एक श्रेष्ठ मुहूर्त है। इस दिन गुरु पुष्यामृत योग है। इस विशेष योग पर यदि इस साधना को सम्पन्न किया जाए तो जीवन की जो इच्छा होती है, हम जिस उद्देश्य को लेकर इस साधना को सम्पन्न करते हैं, वह पूर्ण होती है।

इस गुरु पुष्यामृत योग के अवसर पर हम दो प्रकार की धारणाएं मन में रख सकते हैं, एक तो शत्रु नाश, ऋण मुक्ति, दरिद्रता से छुटकारा, बीमारी से मुक्ति आदि चिन्तन या विचार रख कर वह साधना सम्पन्न की जा सकती है अथवा आर्थिक उन्नति, व्यापारिक सफलता, जीवन की पूर्णता आदि के लिए भी वह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि इस दिन आप अपने मन में जो धारणा लेकर मंत्र जाप करते हैं, तो निश्चय ही उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त होती है और कई बार तो साधक साधना सम्पन्न करता है और दूसरे दिन से ही अनुकूलता प्राप्त होने लग जाती है।

वास्तव में ही यह एक अद्वितीय साधना प्रयोग है, यह एक ऐसा प्रयोग है, जिससे हम अपनी किसी भी इच्छा को पूर्णता दे सकते हैं, यह एक दिन का प्रयोग है और इसे सम्पन्न करने पर व्यक्ति के मन में जो इच्छा होती है, वह पूरी हो जाती है।

प्रयोग को प्रारम्भ करने से पूर्व साधक हाथ में जल लेकर यह विचार करे, कि मेरा अमुक कार्य जल्दी से जल्दी पूरा होना चाहिए और वह जल जमीन पर छोड़ दे तथा फिर यह मंत्र जप सम्पन्न करे, तो उस कार्य में निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

साधना सामग्री

इसके लिए बहुत थोड़ी सी साधना सामग्री की आवश्यकता होती है, जो इस साधना में आवश्यक है, वह साधना सामग्री है–1. सर्व सिद्धि महायंत्र, 2.तांत्रोक्त नारियल 3. मधुरूपेण रुद्राक्ष, 4. हरी हकीक माला।

इसके अलावा जलपात्र, कुंकुम, दूध का बना हुआ प्रसाद, चावल आदि पहले से ही मंगवा कर पूजा स्थान पर रख दें।

यह प्रयोग आप अपने पूजा स्थान में कर सकते हैं या घर के किसी एकान्त कमरे में भी यह प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व साधक पीले वस्त्र का आसन बिछा दें, साधक स्वयं पीली धोती धारण करे और गुरु मंत्र चादर ओढ़ें तथा सामने शुद्ध घृत का दीपक और अगरबत्ती लगा दें। इसके बाद किसी थाली में कुंकुम की सात बिंदियां लगावें और उस पर सर्व सिद्धि महायंत्र स्थापित कर दें। इस यंत्र के एक तरफ मधुरूपेण रुद्राक्ष रख दें और दूसरी ओर तांत्रोक्त नारियल को स्थापित कर दें।

इसमें हरी हकीक माला का प्रयोग किया जाता है, पर इस बात का ध्यान रहे, कि उस हकीक माला का प्रयोग पहले किसी अन्य साधना में नहीं किया गया हो, तथा वह सर्वसिद्धि मंत्र से सिद्ध और प्राणश्चेतना युक्त हो, ऐसी माला ही इस साधना के लिए आवश्यक है। इसके बाद सर्व सिद्धि महायंत्र पर कुंकुम से सात बिन्दियां लगावें और खुद के ललाट पर भी तिलक करें, फिर पास में ही गुरु चित्र को स्थापित कर दें, तथा उसे पुष्पहार पहिनावे।

इसके बाद उस हकीक माला की पूजा करे और प्रार्थना करे कि मैं अमुक कार्यों की सफलता के लिए यह मन्त्र जाप कर रहा हूँ, इसीलिए मुझे जल्दी से जल्दी सफलता प्राप्त हो। फिर साधक पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर उस माला से मन्त्र जप प्रारम्भ करें, इसमें केवल इक्कीस माला मन्त्र जप आवश्यक है। जब मन्त्र जप पूरा हो जाय, तब साधक मधुरूपेण रुद्राक्ष, तांत्रोक्त नारियल तथा इस माला को किसी मन्दिर में चढ़ा दें अथवा नदी, तालाब या समुद्र में विसर्जित कर दें तथा सर्वसिद्धि महायन्त्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

इस साधना से सम्बन्धित सर्व सिद्धि महामन्त्र निम्न है–

ॐ हिलि हिलि चिलि चिलि सिद्धिं किरि किरि फट्

यह मन्त्र गोपनीय और महत्वपूर्ण है, यद्यपि यह साबर मन्त्र है, जिसे कोई भी व्यक्ति पढ़ सकता है, या उच्चारण कर सकता है, पर इसका प्रभाव अचूक होता है, मन्त्र जप से पहले साधक इस सर्व सिद्धि महायन्त्र के सामने पुष्प चढ़ा सकता है, पुष्प माला पहिना सकता है, कुंकुम अक्षत समर्पित कर सकता है तथा दूध का बना हुआ प्रसाद रख सकता है।

यह साधना दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है और यह केवल एक दिन की ही साधना है, इस साधना को पुरुष या स्त्री, बालक या वृद्ध कोई भी सम्पन्न कर सकता है, इस साधना को सम्पन्न करने पर किसी प्रकार का कोई दोष नहीं है।

वास्तव में ही यह साधना अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ है और इस एक दिन की साधना से ही सम्पूर्ण जीवन में जगमगाहट आ सकती है, प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह अवश्य ही इस वर्ष इस साधना को सम्पन्न करे।

साधना सामग्री– 600/–

साधनात्मक शब्दार्थ

अक्सर यह देखा गया है, कि लोग आम बोल-चाल की भाषा में कुछ शब्दों का प्रयोग तो करते हैं, परन्तु उसका सही अर्थ उन्हें ज्ञात नहीं होता है। यही बात साधनात्मक क्रिया-विधियों से सम्बन्धित अनेकानेक शब्दों के साथ लागू होती है। यदि कोई जिज्ञासावश आपसे पूछ ले, कि 'अंगन्यास' क्या होता है, तो आपके पास स्पष्ट रूप में एक सरल परिभाषा होनी चाहिए, जिससे उस शब्द विशेष का अर्थ स्पष्ट हो सके। साधना क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में साधनात्मक शब्दार्थ एक प्रयास है, आशा है साधकों एवं पाठकों को इससे अवश्य लाभ होगा।

- **विनियोग–** मंत्र जप या पूजन संकल्पित कार्य के लिए प्रयुक्त हो, इसलिए दाहिने हाथ में जल लेकर वरुण देवता को साक्षी मानकर मंत्र के अधिष्ठात्री देवी-देवता, ऋषि आदि को कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं, जिससे उनका आशीर्वाद प्राप्त हो। यह क्रिया विनियोग कहलाती है। बाद में जल को भूमि पर छोड़ दिया जाता है।
- **प्राण प्रतिष्ठा–** साधना सामग्रियों को विशेष मंत्रों से चैतन्य करना, क्योंकि ये सामग्री जब तक चैतन्य नहीं होती तब तक कोई भी साधना सफल नहीं होती। जिस तरह साधना के देवता चैतन्य हैं, साधक चैतन्य होता है, उसी तरह सामग्रियों को चैतन्य करना प्राण प्रतिष्ठा कहलाती है।
- **शक्तिपात–** साधनाओं में शीघ्र सफलता के लिए सद्गुरु से अतिरिक्त शक्ति प्राप्त करना, शक्तिपात कहलाता है। सद्गुरु द्वारा जब शिष्य को ज्ञान पथ की ओर ले जाना होता है, तब अपनी तपस्या के विशेषांश से तीव्र गति या शक्तिपात देकर परम तत्व से परिचित कराते हैं। यह शक्तिपात की क्रिया मात्र गुरु के अनुग्रह स्वरूप आशीर्वाद से ही सम्भव है।
- **ब्रह्ममुहूर्त–** रात्रि को चार पहर में विभाजित किया गया है, उसके अन्तिम चरण को (प्रात: 3 से 6 बजे तक का समय) ब्रह्ममुहूर्त कहते हैं, जो सूर्योदय से पूर्व का काल है। इस पुण्य काल में की गई साधना को शीघ्रफलदायी माना गया है।
- **मुद्रा–** मोदन्ते देवा यया सा-जिस क्रिया से देवता प्रसन्न होते हैं, उसे मुद्रा कहते हैं। देव पूजन साधना हेतु अपने हाथ से विशेष आकृति बनाकर भाव प्रदर्शित किया जाता है। यह भाव प्रदर्शन मुद्रा कहलाता है। मन की भावनाओं को बिना बोले प्रगट करना ही इन मुद्राओं का स्वरूप होता है।
- **उत्कीलन–** उद्घाटित करना या खोलना। भगवान शिव ने मंत्रों के दुरुपयोग की सम्भावना को देखकर सभी मंत्रों का कीलन कर दिया था, जिससे कोई बुरे उद्देश्य से मंत्रों का उपयोग न कर सके। इन मंत्रों को पुन: प्रभावयुक्त बनाने के लिए जिस क्रिया को किया जाता है, उसे उत्कीलन कहते हैं।
- **पंचोपचार पूजन–** स्नान, तिलक, पुष्प, धूप और दीप से क्रमशः पूजन करना पंचोपचार कहलाता है।
- **षोडशोपचार पूजन–** इस पूजन क्रम में सोलह चरणों में पूजन किया जाता है, जिसमें- आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, स्नान, वस्त्र, तिलक, अक्षत, पुष्पमाला, धूप, दीप, नैवेद्य, आरती, पुष्पांजलि, नमस्कार एवं विशेषार्घ्य समर्पण सम्मिलित हैं।
- **तिलक–** देवताओं को विभिन्न पदार्थों से कुंकुम, केसर, चन्दन, अष्टगंध या सिन्दूर आदि का टीका या अभिषेक कर सम्मान करने की परम्परा है। देवता/यंत्र के मस्तक, चरण या शरीर के अंगों पर कुंकुम आदि से अभिषेक को तिलक कहते हैं।

नरत्वं दुर्लभं लोके

नर शरीर को सभी जीवधारियों में श्रेष्ठ बताया गया है।

ब्रह्माण्ड में व्याप्त सभी योनियों में मनुष्य योनि

को ही सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोच्च योनि बताया गया है

और यहां तक कहा गया है, कि चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद अनन्त पुण्य संचित होने पर इस मानव शरीर को धारण करने का सौभाग्य प्राप्त होता है

इस शरीर में

हड्डियों को समिधाओं के रूप में, रस–रक्त आदि को जल के रूप में, रेतस् आदि को घृत के रूप में ग्रहण कर सभी देवता इसमें प्रविष्ट हैं

और यज्ञ कर रहे हैं।

समस्त जल, समस्त देवता, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और प्रजापति ब्रह्मा भी इस शरीर के अन्दर ही प्रविष्ट हैं। इस शरीर में सूर्य चक्षु रूप में, वायु प्राण रूप में और अग्नि अन्य अंगों के रूप में विद्यमान हैं।

अन्य प्राणियों एवं नश्वर शरीर धारियों की बात ही छोड़ दें, सदा युवावस्था व अमरत्व को प्राप्त देवता भी इस मानव शरीर को धारण करने के लिए व्यग्र रहते हैं और परब्रह्म परमेश्वर की इच्छानुसार इस पृथ्वी पर अवतरित होते रहते हैं। कभी राम के रूप में, कभी कृष्ण के रूप में, कभी बुद्ध के रूप में, कभी शंकराचार्य के रूप में, कभी जीसस के रूप में इस धरा पर देवताओं ने जन्म लेकर अपने आपको कृतार्थ किया है।

वास्तव में इस मानव शरीर की रचना और इसकी क्रिया शक्ति अद्‌भुत है। मनुष्य अपनी वाणी के माध्यम से अपने विचारों को दूसरों के सामने व्यक्त कर सकता है, अपने मन के द्वारा चिन्तन कर सकता है, अपनी बुद्धि के द्वारा, सृजन के नए आयामों को प्रतिपादित कर सकता है, समस्याओं को सुलझा सकता है एवं शरीरस्थ चक्रों को जाग्रत करते हुए परब्रह्म अवस्था को भी प्राप्त कर सकता है।

एक छोटे से कथानक के द्वारा ऐतरेय उपनिषद् ने मानव शरीर को साक्षात् देवालय ही प्रतिपादित किया है। उसने कहा-''जब सृष्टि का निर्माण हुआ, तो प्रारम्भ में परमात्मा ने अग्नि, वायु, सूर्य आदि देवों की रचना की। जब वे देव इस जगत में अवतीर्ण हुए उन्होंने परमात्मा से कहा, कि हमें रहने के लिए दीजिए, जहां निवास कर हम अपने सम्पूर्ण भोगों को भोग सकें। यह सुन कर परमात्मा ने सबसे पहले उनके सामने गाय का शरीर प्रस्तुत किया। इस पर देवों ने कहा, कि यह हमें पसन्द नहीं। फिर ईश्वर ने उनके आगे घोड़े का शरीर प्रस्तुत किया। देवताओं ने उसे भी पसन्द नहीं किया। इसके बाद परमात्मा ने उनके समक्ष पुरुष का शरीर प्रस्तुत किया, जिसे देखते ही देवता खुशी से उछल पड़े और उसमें प्रविष्ट होकर उन्होंने अपना-अपना स्थान चुन लिया। (ऐ.उ. 2.1-3)

ऐतरेय उपनिषद् 2.4 के अनुसार अग्निदेव वाणी के रूप में मुख में निवास करते हैं, वायु प्राण बन कर नासिका में निवास करते हैं, समस्त दिशाएं श्रोत्र के रूप में कानों में निवास करती हैं, औषधियां और वनस्पतियां रोम के रूप में त्वचा में निवास करती हैं, चन्द्रमा मन के रूप में हृदय में निवास करता है, वरुण रेतस के रूप में शिश्न में निवास करते हैं।

इस सम्बन्ध में वेदों में भी एकमत है। अथर्ववेद के अनुसार-

अस्थि कृत्वा सामिधं तदष्टापो असादयन।
रेतः कृत्वाऽऽ न्यं देवाः पुरुषमाविशन।।
या आपो याश्व देवता या विराह ब्रह्मणा सह।
शरीरं ब्रह्म प्राविशच्छरीरेऽधि प्रजापतिः।।
सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणं पुरुषमथ विभेजिरे।
अथास्ये तरमात्मानं देवाः प्रायच्छभाग्नये।।
तस्माद वै विद्वान पुरुषमिदं ब्रह्मेतिमन्यते।
सर्वा ह्यस्मिन देवता गावो गोष्ठ इवासते।।

-अथर्ववेद 11.8.29-32

अर्थात् 'इस शरीर में हड्डियों को समिधाओं के रूप में, रस-रक्त आदि को जल के रूप में, रेतस् आदि को घृत के रूप में ग्रहण कर सभी देवता इसमें प्रविष्ट हैं और यज्ञ कर रहे हैं। समस्त जल, समस्त देवता, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और प्रजापति ब्रह्मा भी इस शरीर के अन्दर ही प्रविष्ट हैं। इस शरीर में सूर्य चक्षु रूप में, वायु प्राण रूप में और अग्नि अन्य अंगों के रूप में विद्यमान हैं। जैसे गोएं गौशाला में रहती हैं, उसी प्रकार सभी देवता इस शरीर में निवास करते हैं, अतः यह मानव शरीर साक्षात् देवपुरी ही है।'

अथर्ववेद में ही 10.2.31-33 में वर्णित है, कि-

अष्टा चक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्यमयः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।
तस्मिन हिरण्ये कोशे।। यरे त्रिप्रतिष्ठिते।
तस्मिन यद यक्षामात्मवत नद वै ब्रह्मविदो विदुः।।
प्रभानमानां हरिणी यशसा संपरिवुताम।
पुरं हिरण्ययी ब्रह्मा विवेशापराजिताम।।

मानव शरीर में सात ऋषि (पांच ज्ञानेन्द्रिय, बुद्धि और मन) रहते हैं। वे सभी बिना प्रमाद किये, इसकी रक्षा करते हैं।

जब यह शरीर निद्रामग्न होता है, तब वे सभी आत्म लोक में चले जाते हैं। परन्तु प्राण और आत्मा रूपी दो देव ऐसे भी हैं, जो उस समय भी जाग्रत अवस्था में रहते हैं।
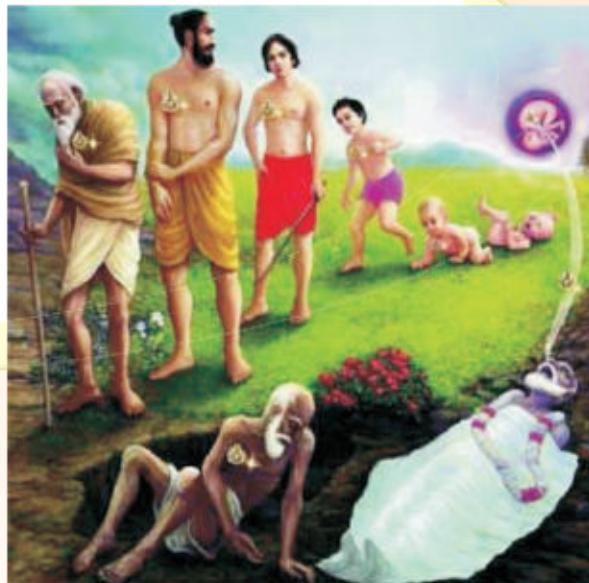
अर्थात् 'मानव शरीर साक्षात् देवपुरी अयोध्या है, जिसमें मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, ललित, आज्ञा, सहस्रार आदि आठ चक्र और दो कान, दो नासिका छिद्र, दो आँखें, एक मुख एवं दो अधोद्वार - नो द्वार हैं। इस देवपुरी के अन्दर आनन्दमय कोश में, जो कि एक ज्योति से आवृत्त है, एक यक्ष या आत्मा निवास करती है। इस प्रभ्राजमाना, हृदयहारिणी, यशोमयी, अपराजिता, स्वर्णिम देवपुरी में ब्रह्म या परमात्मा का निवास है।'' (अथर्ववेद में 10.2.14 में)

का अस्मिन यज्ञमदधादेको देवोऽपि पुरुषे।

कहकर मानव शरीर को साक्षात् यज्ञस्थल ही घोषित किया है।

यजुर्वेद ने भी 34.4 में

'येन यज्ञस्तायते सप्त होता'

के रूप में वर्णन करते हुए कहा है, कि

पांच ज्ञानेन्द्रियां मन और बुद्धि - इन सात होताओं के द्वारा ही शरीर रूपी यज्ञशाला में ज्ञान प्राप्ति का यज्ञ चलता रहता है।

तैत्तिरय ब्राह्मण में भी 1.1.94 में कहा गया है कि-

अस्थि वा एतत यत समिधः।
एतद् रेतो यदान्यम।।

अर्थात् हड्डियां ही समिधा है, रेतस् ही घृत है। गोपथ ब्राह्मण में भी ऋषि ने कहा है-

पुरुषो वै यज्ञस्तस्य... मन एव ब्रह्मा,
प्राण उदगाता, अपानः प्रस्तोता, व्यानः
प्रतिहर्ता, वाग होता, चक्षुरध्वर्युः, प्रजापतः
सदस्यः, अंगानि होत्राशंसिनः आत्मा यजमानः।

(गो.उ. 5.4)

अर्थात् 'पुरुष का शरीर ही यज्ञभूमि है, मन इस यज्ञ का ब्रह्मा है, प्राण उद्‌गाता है, अपान प्रस्तोता है, व्यान प्रतिहर्त्ता है, आँख अध्वर्यु है, प्रजापति सदस्य है, दूसरे अंग होत्रा शंसी है और आत्मा ही यजमान है।''

यजुर्वेद ने इस मानव शरीर की व्याख्या ऋषिभूमि के रूप में की है-

सप्त ऋषयः प्रतिहिताः
शरीरे सप्त रक्षन्ति सदम प्रमादम।
सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र
जाग्रतो अस्वपन यौ सत्रसदौ च दैवौ।

(य.वे. 34.5.5)

अर्थात् ''इस मानव शरीर में सात ऋषि (पांच ज्ञानेन्द्रिय, बुद्धि और मन) रहते हैं। वे सभी बिना प्रमाद किये, इसकी रक्षा करते हैं। जब यह शरीर निद्रामग्न होता है, तब वे सभी आत्म लोक में चले जाते हैं। परन्तु प्राण और आत्मा रूपी दो देव ऐसे भी हैं, जो उस समय भी जाग्रत अवस्था में रहते हैं।

ऋग्वेद में मानव शरीर की तुलना रथ से की गई है। ऋषि ने प्रश्न और उत्तर के रूप में इस रथ की उत्पत्ति का वर्णन किया है। वह पहले प्रश्न करता है कि-

कः कुमारमजनयद रथं को निरवर्तयत।
कः विकल तदध नो ब्रूयादनुदेयी यथा मवत्।।

(ऋ. 10.135.5)

अर्थात् 'किसने कुमार को उत्पन्न किया है, किसने उसके रथ (शरीर) की रचना की है, कैसे यह एक गोद से दूसरे गोद में दिये जाने योग्य होता है, यह सब आज हमें कौन बतायेगा?'

मानव शरीर अपने आपमें इतना अधिक श्रेष्ठ है, कि इसके अन्दर समस्त देवता निवास करते हैं, समस्त शक्तियां इसके अन्दर निवास करती हैं, यहां तक की ब्रह्म, परेश्वर भी इसके अन्दर ही स्थापित हैं।

अगले मंत्रों में ऋषि ने उत्तर दिया है, कि-

यथाभवदनुदेवी ततो अग्रमनायत्।
पुरस्ताद बुध्न आततः पश्चान्निरयणं कृतम।
इदं यमस्य सादनं देवमानं यदुच्यते।
इयमस्य धम्यते नाडीरयं गीर्भिः परिष्कृतः।।
(ऋ. 10.135.5-6)

अर्थात् 'यह पहले माता के गर्भ से उत्पन्न होता है, उसके बाद एक गोद से दूसरी गोद में दिये जाने योग्य होता है। जन्म के समय पहले इसका सिर बाहर निकलता है, फिर सारा शरीर ही बाहर आ जाता है। यह जीवात्मा के बैठने के लिए देव निर्मित रथ है। देखो, इसकी नाड़ी चल रही है, यह वाणी से परिष्कृत है।''
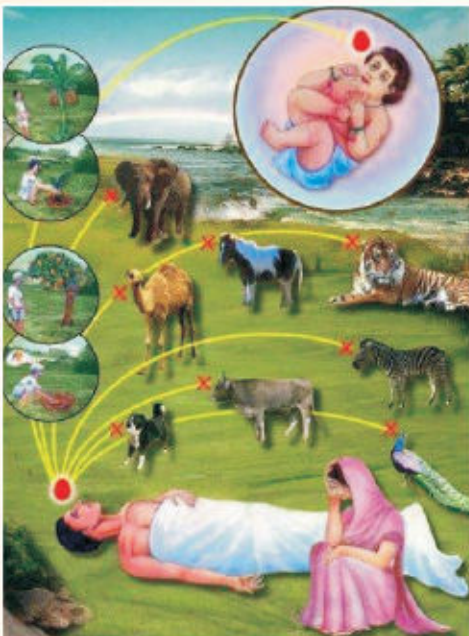
ऋग्वेद में ही 2.18.1 मंत्र में इस शरीर रथ का वर्णन करते हुए कहा गया है-

प्राता रथो नवो योनि सस्निश्चतुर्युग स्त्रिकशः सप्तरश्मिः।
दशारित्रो मनुष्यः स्वर्णाः स इष्टिभिर्मतिभी रंह्वो भूत्।।

अर्थात् 'यह मानव शरीर इन्द्र का रथ है, जिसमें दो भुजाएं व दो पैर - ये चार युग हैं। मन, बुद्धि और प्राण रूपी तीन चाबुक हैं, सप्त शीर्षण्य प्राण रूपी सात लगाम हैं और पाँच ज्ञानेन्द्रिय व पांच कर्मेन्द्रिय रूपी दस घोड़े हैं। प्रातः काल इसको नवीन और साफ- सुथरा कर के जोता जाता है और बुद्धि व सद्इच्छाओं के द्वारा इसे हांका जाता है।'

एक अन्य मंत्र में ऋषि ने इस शरीर रथ की समुचित देखभाल करने के बारे में सावधान करते हुए कहा है-

समिन्द्रेरय गामनऽवाहं य
आवहदुशीनराण्या अनः ।
भरतामप यद रपो द्यौः पृथिवि
क्षमा रपो मोषु ते किंचनामयत।।

अर्थात् 'हे बुद्धि रूपी रानी के साथ विराजमान आत्मा रूपी इन्द्र! तू इस शरीर रथ को खींचने वाले प्राण रूपी बैल को ठीक प्रकार से चला(नहीं तो यह रोग आदि के गड्ढों में इस शरीर रथ को गिरा देगा)। सूर्य (किरणों के माध्यम से)और पृथ्वी (अपनी औषधियों और वनस्पतियों के माध्यम से) इस रथ के दोषों को दूर करते रहें, जिससे कि तू किसी भी रोग द्वारा न सताया जाए।'

इस प्रकार वैदिक साहित्य में भी मानव शरीर का अत्यन्त दुर्लभ अद्वितीय और श्रेष्ठ घोषित किया गया है और वैदिक मंत्रों में इसी महत्ता को विभिन्न रूपों में प्रतिपादित किया गया है। मानव शरीर अपने आप में इतना अधिक श्रेष्ठ है, कि इसके अन्दर समस्त देवता निवास करते हैं, समस्त शक्तियां इसके अन्दर निवास करती हैं। यहाँ तक कि ब्रह्म, परमेश्वर भी इसके अन्दर स्थापित हैं।

अतः हमें इस शरीर के प्रति श्रेष्ठ भाव रखना चाहिए, इसके अन्दर श्रेष्ठ विचारों को आश्रय देना चाहिए। एक देवालय के समान ही इसे शुद्ध व पवित्र रखना चाहिए और किसी भी प्रकार से इसे दूषित नहीं होने देना चाहिए। वैदिक विचारानुसार यह शरीर मात्र मल-मूत्र का ढेर या कोई त्याज्य वस्तु नहीं है। मानव-आत्मा को अपने इस सौभाग्य पर गर्व होना चाहिए, कि उसे देवताओं की यह पुरी रहने के लिए मिली है।

आइये इस सर्वश्रेष्ठ मानव शरीर को प्राप्त कर हम वास्तविक अर्थों में सर्वश्रेष्ठ बनें, इस देवपुरी में निवास कर हम वास्तविक अर्थों में देवमय बनें, इस यज्ञस्थली में निवास कर हम वास्तविक अर्थों में यज्ञ कार्य सम्पन्न करें, इस ऋषि भूमि में निवास कर हम वास्तविक अर्थों में ऋषि बनें, इस अद्वितीय, अनुपम, सर्वश्रेष्ठ रथ पर आरूढ़ हो कर दिव्य पथ के पथिक बनें।

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मृ्ल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

शिष्य क्या है? क्या केवल मुंह से जय गुरुदेव कहने से या फूल माला चढ़ाने से या चरण स्पर्श करने से व्यक्ति शिष्य हो जाता है? सद्‌गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के अनुसार ये तो मात्र गुरु भक्ति की अभिव्यक्ति के साधन मात्र हैं। शिष्य तो व्यक्ति तब होता है, जब उसमें कुछ विशेष गुण उत्पन्न होते हैं। क्या हैं वे गुण? आइए जानें।

- शिष्य का अर्थ है जो कि सीखने के लिए, कुछ नया बने के लिए तैयार हो।
- शिष्य अपने विचारों से, मान्यताओं से, तर्क से बंधा नहीं होता। वह कली की तरह बंद न होकर, एक पुष्प के समान खिला हुआ होता है।
- जब व्यक्ति अपने विचारों से पूर्णत: मुक्त होता हुआ गुरु के सामने खड़ा होता है, तब वह सही अर्थों में शिष्य होता है। वह तब खाली पात्र की तरह होता है और फिर गुरु चाहें तो उसमें कुछ भी डाल सकते हैं।
- तर्क, अविश्वास और कुविचार—ये व्यक्ति को शिष्य बनने से रोकते हैं तथा उसे जीवन में जड़ता की अवस्था में फंसाए रखते हैं। जब व्यक्ति उनसे मुक्त होकर गुरु के सामने प्रस्तुत होता है तभी वह सही अर्थों में शिष्य बन पाता है।
- गुरु तो सदा शिष्यों की खोज में रहता है और हर व्यक्ति शिष्य बन सकता है, अगर उसमें समर्पण की भावना हो, कुछ नवीन करने की इच्छा हो और रूढ़ियों से बंधा नहीं हो।
- रूढ़ियों से, मान्यताओं से बंधा व्यक्ति कभी शिष्य नहीं बन सकता। रूढ़ियां व्यक्ति की मानसिकता को सीमित कर देती हैं और उसे नए विचार, नया चिंतन ग्रहण नहीं करने देतीं। इनसे मुक्त होकर ही व्यक्ति शिष्यता की कसौटी पर खरा उतर सकता है।
- शिष्यता का पर्याय है नवीनता। जो हर क्षण नवीन हो, जो हर क्षण जीवन में कुछ नया बनने और कर गुजरने की ओर अग्रसर हो वही शिष्य है। परंतु आवश्यक है कि वह उस मार्ग पर चले जिस पर गुरु उसे चलाए।
- पुराने घिसे-पिटे रास्तों पर चलना शिष्यता नहीं कहलाती। जितने महापुरुष हुए हैं उनके जीवन को देखें तो हरेक एक भिन्न पुष्प की भांति है, हरेक की शैली, प्रवाह, अंदाज भिन्न है। समानता है अगर तो इस तथ्य में कि हरेक गुरु के द्वारा बताए रास्ते पर नि:संकोच होकर आगे बढ़ा है।
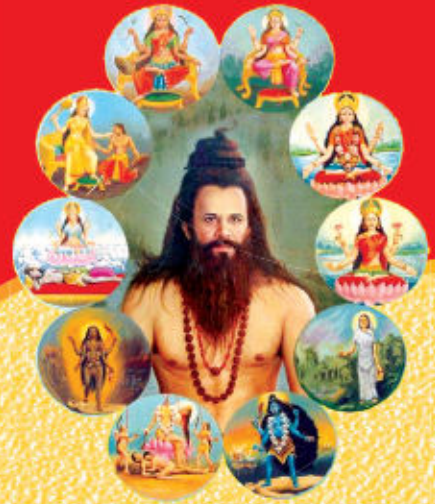
- गुरु और तुम में अंतर यही है कि तुम हर हालत में दुखी होते हो जबकि गुरु को सुख-दुख दोनों ही व्याप्त नहीं होते, वह दोनों परे है और तुम्हें भी उस उच्चतम स्थिति पर ले जाकर खड़ा कर सकता है जहां दुख, पीड़ा तुमको प्रभावित कर ही नहीं सके।

- आप अपने को धन या वैभव पाकर सुखी मानने लगते हैं यौंकि आपने अभी वास्तविक सुख को देखा ही नहीं। इन सुखों के पीछे भागकर आप अंततः दुख ही पाते हैं। भोग से दुख ही पैदा हो सकता है जबकि गुरु तुम्हें उस सुख से परिचित कराना चाहते हैं जो आंतरिक है, जो स्थायी है।

- तुम सोचते हो कि शादी करके सुखी होंगे या धन प्राप्त करके सुखी होंगे। सुख तो उसी क्षण संभव है, वह धन पर निर्भर नहीं। वह वास्तविक आनंद तुमने नहीं देखा, नहीं देखा इसीलिए तुम धन को ही सुख मान बैठे हो जबकि उससे केवल तुम्हें दुख ही प्राप्त होता है। वास्तविक सुख तुम्हें तब ही प्राप्त हो सकता है जब तुम अपने आप को पूर्ण रूप से गुरु में समाहित कर दोगे और वह हो गया तो फिर तुम्हारे जीवन में कोई अभाव नहीं रह सकता, धन तो एक छोटी सी चीज है। पूर्णता तक तुम्हें कोई पहुँचा सकता है तो वह केवल और केवल गुरु है।

- गुरु के सामने सभी देवी-देवता हाथ बांधे खड़े रहते हैं वह चाहे तो क्षण मात्र में तुम्हारे सभी कष्टों को दूर कर दें। तो करता क्यों नहीं? गुरु तो हर क्षण तैयार है, तुम्हीं में समर्पण की कमी है, जिस क्षण सिर्फ गुरु को तुमने अपने हृदय में स्थापित कर लिया उस क्षण से दुख तुम्हारे जीवन में प्रवेश कर ही नहीं सकता।

- तुमने एक शरीर को गुरु मान लिया है, गुरु तो वह तत्व है जिससे जुड़कर तुम उन आयामों को स्पर्श कर सकते हो जिनको शास्त्रों ने पूर्णमदः पूर्णमिदं कहा है। उसके लिए गुरु के शरीर को बाहों में लेने की जरूरत नहीं। आवश्यकता है कि तुम अपना मन उनके चरण कमलों में समर्पित करो और वह हो पाएगा केवल और केवल मात्र गुरु सेवा से और गुरु मंत्र जप से।

- गुरु मंत्र तो ब्रह्माण्ड का सबसे तेजस्वी एवं प्रचण्ड मंत्र है, एक ऐसी शक्ति है जिसके समक्ष सभी शक्तियाँ नगण्य हैं। पूरे ब्रह्माण्ड की तेजस्विता उसमें समाई हुई है और उसके जप के द्वारा तुम अपने अंदर के ब्रह्माण्ड को गुरु तत्व से जोड़ कर पूर्ण आनंद को प्राप्त कर सकते हो।

महाविद्या

त्रिपुरा साधना

'भगवान परशुराम' का नाम तंत्र के क्षेत्र में एक माना हुआ नाम है, क्योंकि परशुराम ने तंत्र साधना के क्षेत्र में कई नये आयाम दिये, जिससे संपुष्ट होकर तंत्र सामान्य गृहस्थ व्यक्तियों के लिए अत्यधिक उपयोगी हो गया।

परशुराम द्वारा सम्पन्न की गई साधनाओं का वर्णन 'हरितायन संहिता' तथा अन्य विविध शास्त्रों व साहित्यों में आंशिक रूप से प्राप्त होता है। हरितायन संहिता में उद्धृत है, कि परशुराम ने महामुनि संवर्त से संसार-भय का नाश कर पूर्ण अभय प्राप्ति तथा सम्पन्नता व प्रभुत्व युक्त होने के लिए 'महाविद्या त्रिपुरा' की साधना प्राप्त की थी।

जिस 'त्रिपुरा' की साधना उन्होंने सम्पन्न कर विशिष्ट स्थान प्राप्त किया, उसी राजराजेश्वरी त्रिपुरा की संक्षिप्त साधना पद्धति आप सभी के लिए प्रस्तुत है, जिससे कि आप लोगों के जीवन से 'भय' का नाश हो सके और आप 'अभय' प्राप्त कर निर्द्वन्द्व विचरण करते हुए इस संसार में पूर्ण ऐश्वर्य, सम्पन्नता और प्रभुता प्राप्त कर सके।

साधक माहेश्वरी मंत्रों से अभिसिक्त 'त्रिपुरा यंत्र' तथा 'त्रिशक्ति गुटिका' प्राप्त कर लें। माघ शुक्ल पूर्णिमा 27.02.21 को या किसी भी माह की पूर्णिमा को प्रातःकाल 5 से 7 बजे के मध्य स्नानादि से निवृत्त होकर पीली धोती तथा गुरू पीताम्बर धारण कर पीले आसन पर पूर्वाभिमुख हो कर बैठें। किसी ताम्र पात्र में यंत्र स्थापित करें तथा संक्षिप्त पूजन पुष्प, अक्षत व कुंकुम से करें। गुटिका को यंत्र के ऊपर रख दें। धूप-दीप की आवश्यकता नहीं है। गुटिका को एकटक देखते हुए 16 माला निम्न मंत्र का जप करें-

मंत्र

।। ऊँ ह्रीं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट् ।।

यह मंत्र जप शक्तिमाला से करना चाहिए।

जप समाप्ति पर गुटिका तथा यंत्र को किसी कपड़े में लपेट लें और उसी दिन किसी देवी मंदिर में चढ़ा दें अथवा नदी में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर - 450/-

27.02.2021

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी

लघु प्रयोग

ध्यान

उद्यत्सूर्य सहस्राभां पीनोन्नत पयोधराम
रक्तमाल्याम्बरालेप रक्तभूषण भूषितां।
पाशांकुशधनुर्बाण भास्वतपाणि चतुष्टयम।।
रक्तनेत्रत्रयां स्वर्णमुकुटोद्भासि चिन्द्रकाम।।

मंत्र

।। ॐ ऐं ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं ह्रीं फट्।।

प्रौढ़ावस्था में स्त्रियों में सौन्दर्य की न्यूनता आने लगती है, जिसके कारण कई बार वे हीन भावना से ग्रस्त हो जाती हैं, परन्तु वे चाहें तो अपने सौंदर्य को स्थिरता दे सकती हैं भगवती षोडशी के इस प्रयोग से।

- 27 फरवरी 2021को प्रात:काल ही स्नानादि कर लाल वस्त्र धारण करें। लाल रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से चतुर्दल कमल बनाएं तथा कमल के मध्य में कुंकुम से अपना नाम लिखें, चारों दलों में कुंकुम से बिन्दियां लगा दें। अपने नाम के ऊपर 'षोडषी यन्त्र' स्थापित कर यंत्र का पूजन केसर, पुष्प तथा अक्षत से करें। पूजन के बाद उपरोक्त षोडशी ध्यान करें, फिर कुंकुम से रंगे हुए चावल के दानों को चढ़ाते हुए नित्य चौदह दिनों तक उपरोक्त मंत्र का जप 51 बार करें। नित्य मंत्र जप की समाप्ति के पश्चात् चावल के दानों को चिड़ियों को डाल दें। प्रयोग समाप्ति पर यंत्र को होली पर होलिकाग्नि में डालना है।
- सौन्दर्य, बुद्धि तथा चातुर्य प्राप्ति की इच्छा रखने वाली स्त्रियों को भगवती षोडशी का यह प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

लाल रंग के वस्त्र पर केसर से त्रिभुज बनाएं, त्रिभुज के मध्य में 'ऐं' लिख कर उस पर 'षोडशी यंत्र' को स्थापित कर दें। त्रिभुज के तीनों कोनों पर चावल की ढेरी बनाकर एक-एक सुपारी स्थापित करें। घी का दीपक लगायें। उपरोक्त ध्यान करने के पश्चात् उपरोक्त मंत्र का 13 दिन तक नित्य 65 बार जप करें। मंत्र जप करते समय अपनी दृष्टि यंत्र पर स्थिर रखें तथा पूर्ण श्रद्धा और विश्वासयुक्त चिंतन बनाकर रखें। 13 दिन बाद यंत्र व सुपारी को उसी वस्त्र में बांध कर जल में प्रवाहित कर दें।

- पुरुषों में जीवन के प्रति जो सौन्दर्यानुभूति होती है, वह आयु के व्यतीत होने के साथ ही समाप्त सी होने लगती है, जिसके कारण वे मात्र कर्त्तव्य मान कर ही दाम्पत्य जीवन का निर्वाह करते रहते हैं। पर यदि वे चाहें, तो अपने आपको जीवन के प्रति सौन्दर्ययुक्त रख सकते हैं और सौन्दर्यानुभूति को पुन: प्राप्त कर सकते हैं।

लाल रंग के वस्त्र पर कुंकुम से रंगे चावल की ढेरी पर 'षोडशी यंत्र' को स्थापित करें, यंत्र के चारों ओर पांच आटे के दीपक लगायें। प्रत्येक दीपक में थोड़ी सी सरसों डाल दें। पांच दिन तक नित्य षोडशी ध्यान कर 75 बार उपरोक्त मंत्र का जप करें। प्रत्येक दिन जप समाप्ति के बाद दीपक को हटा कर अलग स्थान में रख दें। पांच दिन पश्चात् यंत्र तथा सभी दीपकों को एकत्र कर लें, होली पर होलिकाग्नि में डाल दें।

- पूर्ण पौरुष, बल, आकर्षक देह यष्टि, बुद्धि और तीव्रता ही युवकों का सौन्दर्य होता है। यह पूर्ण पुरुषोचित्त सौन्दर्य आप भी प्राप्त कर सकते हैं भगवती षोडशी के साधक बनकर।

लाल रंग के वस्त्र पर चावल से चतुर्भुज बनाएं, फिर मध्य में 'षोडशी यंत्र' को स्थापित करें। यंत्र के चारों किनारे पर एक-एक गुलाब का पुष्प स्थापित कर दें। भगवती षोडशी का ध्यान कर। 'पीली हकीक माला' (200/-) से उपरोक्त मंत्र का ग्यारह माला मंत्र जप 5 दिनों तक करें। मंत्र जप समाप्त कर यंत्र तथा माला को होली पर होलिकाग्नि में अर्पित करें।

- सम्पूर्ण आन्तरिक और बाह्य सौन्दर्य की प्राप्ति भी साधक के जीवन में आवश्यक है। आन्तरिक सौन्दर्य एवं चेतना से ही व्यक्ति का हृदय स्वच्छ और निर्मल होता है, जो कि साधना सिद्धि के लिए आवश्यक है। साधक श्रद्धा और विश्वास के साथ यदि भगवती षोडशी का यह प्रयोग सम्पन्न करता है, तो वह अनेक प्रकार से लाभान्वित होता है। साधिकाओं के लिए तो यह प्रयोग अत्यन्त श्रेष्ठ है, इसे सम्पन्न करने के बाद उनमें उत्साह, प्रेम, वात्सल्य तथा स्त्रियोचित्त गुणों का पूर्ण विकास होता है तथा वह सौन्दर्य दीर्घकालीन होता है। 27 फरवरी 2021 से यह प्रयोग आरम्भ करें। लाल रंग के वस्त्र पर पुष्प का आसन बनाकर 'षोडशी यंत्र' को स्थापित करें, यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर, भगवती षोडशी का ध्यान करें। नित्य 51 बार उपरोक्त मंत्र का जप पांच दिन तक करें। प्रत्येक मंत्र जप के साथ एक-एक लौंग चढ़ाते जाएं। पांचवें दिन यंत्र तथा लौंग को वस्त्र में बांध कर जल में प्रवाहित करें।

षोडशी यंत्र - 240/-

यह सभी प्रयोग 27 फरवरी 2021 से या किसी शुक्रवार से प्रारम्भ कर सकते हैं।

अकर्मण्यता

आधुनिक रहन-सहन और यान्त्रिक उपलब्धियों के प्रभाव से अधिकांश लोगों में सुविधा-भोगी प्रवृत्ति ज्यादातर दिखाई देती है और दिनों दिन यह प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है, फ़ैलती ही जा रही है। जैसे-जैसे सुख-सुविधा के साधन उपलब्ध हो रहे हैं वैसे-वैसे मनुष्य आलसी और कमजोर होता जा रहा है। पहले के लोग परिश्रमी होते थे इसलिए शरीर से स्वस्थ और बलवान भी रहते थे पर आज का व्यक्ति सुविधाओं का गुलाम होता जा रहा है और ऐसे शार्ट-कट की तलाश में रहता है कि जिससे कम समय और श्रम में ही मनोवांछित फल प्राप्त कर सके।

सेना का एक सैनिक छुट्टियों में अपने गांव आया। उसके गांव के कई लोग सेना में थे। शाम को वह घूमने निकला तो एक मैदान के पास दीवार पर कई गोलाकार चक्र और चक्र के ठीक बीच में गोली लगने का निशान देख कर वह दंग रह गया। गांव में कुछ जवान निशानेबाजी का अभ्यास करते रहते हैं यह वह जानता था, पर अपने गांव में शत-प्रतिशत सही निशान लगाने वाला भी कोई है यह नहीं जानता था। उसने गांव में ऐसे अचूक निशानेबाजी करने वाले के बारे में पूछताछ की तो एक युवक सामने आकर बोला—जी, ये निशाने मैंने लगाये हैं। शाबाशी से पीठ ठोंकते हुए सैनिक बोला—बहुत खूब, लगता है बहुत अभ्यास किया है तुमने। इतनी अच्छी निशानेबाजी तुमने किससे सीखी? कौन है तुम्हारा गुरु? वह युवक बोला—अजी, इसमें सीखना या है। मैं पहले गोली चला देता हूँ फिर गोली लगती है, उसके चारों तरफ एक गोल घेरा बना देता हूँ। इसमें अभ्यास करने या गुरु बनाने की जरूरत क्या है।

गृहस्थ सुखप्राप्ति

शिव गौरी साधना

गृहस्थ जीवन का आदर्श स्वरूप भगवान सदाशिव और माता पार्वती ही हैं। इसीलिए प्रत्येक गृहस्थ शिव गौरी को अपना आराध्य मानता है।

जिस प्रकार भगवान शिव का गृहस्थ जीवन सभी कामनाओं से पूर्ण है। पुत्र के रूप में भगवान गणपति और कार्तिकेय हैं और सदैव साथ में गौरी रूपा पार्वती हैं। स्थान भी पूर्ण शांति युक्त हिमालय है, जहां पूर्ण आनन्द से विराजित होते हैं।

गृहस्थ व्यक्तियों के लिए शिव और गौरी आदर्श स्वरूप हैं क्योंकि शिव को रसेश्वर कहा गया है और गौरी को रसेश्वरी कहा गया है। यह शिव और शक्ति का संयुक्त रूप है जो शिवलिंग के रूप में परिलक्षित होता है। जहां जीवन में गृहस्थी है तो उसके साथ बाधाएं तो आएंगी ही लेकिन शिव गौरी की साधना कर जीवन को रस से युक्त बनाया जा सकता है। जीवन में नित्य प्रति आनन्द रस की वर्षा होती रहे ऐसा अनुभव हो कि हर सुबह एक नई प्रसन्नता लेकर जीवन में आयी है, तो वह अनूठा ही जीवन होता है, उसमें प्रसन्नता का रस ही रस भरा रहता है।

शिवरात्रि को तो शिव साधना सम्पन्न करनी ही है, उसके पश्चात् यह शिव गौरी साधना भी होली महाकल्प पर अवश्य सम्पन्न करें।

साधना विधान

यह साधना किसी भी शुक्रवार को प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में आरम्भ करना चाहिए। इस दिन स्नान करके पीली धोती पहन कर, पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठें। सामने चौकी पर गणपति का चित्र या मूर्ति स्थापित करके 'ॐ गणेशाय नमः' इस मंत्र का उच्चारण करते हुए पीले चावल 108 बार चढ़ायें और दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें--''हे ! भगवान गणपति गृहस्थ सुख के लिए मुझ पर कृपा करें।'' इसके बाद गुरु चित्र पर भी पंचोपचार पूजन करके किसी प्लेट पर कुंकुम से या केशर से स्वस्तिक चिह्न बनाकर 'गौरी शंकर रुद्राक्ष' स्थापित करें। इसके बाद 'नीली हकीक माला' को गोल करके उसे गौरीशंकर को पहना दें। इसके बाद स्नान, धूप, दीप, पुष्प आदि द्वारा गौरी शंकर की पूजा करके निम्न मंत्र का पांच माला जप करें-

मंत्र

ॐ भवानी गौर्य्ये पति सुख सौभाग्यं देहि देहि शिव शक्तयै नमः।

यह 11 दिन की साधना है, उसके बाद भी जब तक कार्य सिद्धि न हो तब तक विधिवत पूजन के साथ उसी माला से 1 माला मंत्र जाप करते रहें। इस साधना में शुद्धता तथा आचार-विचार, खान-पान का अवश्य ध्यान रखें। शुद्ध शाकाहारी भोजन लेना चाहिए तथा स्वस्थ चिन्तन करना चाहिए

न्यौछावर - 360/

ज्योतिष : हस्त रेखा

क्या कहती है आपकी भाग्य रेखा

भाग्य रेखा को अंग्रेजी में फेट लाइन कहते हैं। हिन्दी में इसे भाग्य रेखा, ऊर्ध्व रेखा अथवा प्रारब्ध रेखा भी कहते हैं।

यह रेखा सभी व्यक्तियों के हाथों में दिखाई नहीं देती। साथ ही इस रेखा के उद्‌गम भी कई होते हैं, परन्तु एक बात भली प्रकार से समझ लेनी चाहिए, कि जिस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर होती है, वही रेखा भाग्य रेखा कहला सकती है। जब तक यह शनि पर्वत पर नहीं पहुँच जाती, तब तक इस रेखा को भाग्य रेखा कहना उचित नहीं।

कई हाथों में यह रेखा बुध पर्वत पर भी पहुँच जाती है, परन्तु वास्तव में यह रेखा भाग्य रेखा न होकर अन्य रेखा ही होती है। इस रेखा का विकास हथेली में नीचे से ऊपर की ओर होता है। कुछ हाथों में यह रेखा शुक्र पर्वत से प्रारंभ होती है, तो कुछ हाथों में यह रेखा मणिबन्ध से प्रारंभ होकर ऊपर की ओर उठती हुई दिखाई देती है। कुछ हाथों में यह रेखा सूर्य पर्वत के पास से भी निकल कर शनि पर्वत पर पहुँच जाती है। अत: जैसा कि ऊपर कहा है, कि इस रेखा का उद्‌गम अलग-अलग होता है, अत: इसकी समाप्ति के स्थान से इसके उद्‌गम का पता लगाना चाहिए।

यद्यपि मानव के जीवन में सब कुछ होता है, पर यदि उसका भाग्य साथ नहीं देता है, तो एक प्रकार से उसका पूरा जीवन व्यर्थ कहा जाता है। चाहे व्यक्ति के पास भव्य व्यक्तित्व हो, चाहे हृदय से वह कितना ही उदार हो, चाहे स्वास्थ्य की दृष्टि से उसमें सभी प्रकार की श्रेष्ठता हो, परन्तु यदि उसका भाग्य उसका साथ नहीं देता है, तो उसका जीवन एक प्रकार से निष्क्रिय हो जाता है। कहा जाता है कि यदि व्यक्ति का भाग्य साथ देता हो और यदि वह मिट्टी भी छू ले, तो वह सोना बन जाती है। इसके विपरीत यदि भाग्य साथ नहीं देता, तो सोने को भी स्पर्शकरने पर वह मिट्टी के समान हो जाता है।

वस्तुत: जीवन में भाग्य का महत्त्व सबसे अधिक माना गया है। इसीलिए हाथ में भी भाग्य रेखा या प्रारब्ध रेखा को महत्त्व दिया जाता है। यह रेखा जितनी अधिक गहरी, स्पष्ट और निर्दोष होती है, उसका भाग्य उतना ही ज्यादा श्रेष्ठ कहा जाता है। यदि व्यक्ति के हाथ में सभी रेखाएँ दूषित एवं कमजोर हों, परन्तु यदि उसकी भाग्य रेखा अपने आप में अत्यन्त श्रेष्ठ हो, तो यह बात निश्चित है, कि उसके ये सारे दुर्गुण छिप जाते हैं और वह जीवन में पूर्ण प्रगति करने में समर्थ हो पाता है। अत: हस्तरेखा विशेषज्ञ को चाहिए, कि वह हथेली का अध्ययन करते समय भाग्य रेखा का सावधानी से अध्ययन करें।

सभी हाथों में यह भाग्य रेखा नहीं पाई जाती है और मेरा तो यह अनुभव है कि लगभग 50 प्रतिशत हाथों में भाग्य रेखा का अभाव ही होता है। परन्तु मेरे कथन का यह अभिप्राय नहीं लिया जाना चाहिए, कि जिसके हाथ में भाग्य रेखा नहीं होती, वह व्यक्ति भाग्यहीन होता है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि भाग्य रेखा के अभाव में प्रयत्न करने पर भी व्यक्ति को पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती। भाग्य रेखा होने से व्यक्ति थोड़ी सी प्रतिभा और परिश्रम से ही कार्य को अपने मनोनुकूल बना लेता है।

इस रेखा को शनि रेखा भी कहा जाता है, क्योंकि इस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर होती है। यद्यपि यह रेखा व्यक्ति के हाथों में अलग-अलग स्थानों से प्रारम्भ होती है, तथापि इस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर ही होती देखी गई है। इसीलिए भी इसको शनि रेखा के नाम से पुकारते हैं।

जिन हाथों में यह रेखा कमजोर होती है या नहीं होती है, उन व्यक्तियों की उन्नति तो होती है, परन्तु उनकी उन्नति में भाइयों, सम्बन्धियों या रिश्तेदारों का किसी प्रकार का कोई सहयोग उसके जीवन में नहीं मिलता। इस प्रकार से वह जो भी प्रगति करता है, स्वयं के प्रयत्नों से ही कर पाता है। ऐसे लोगों को न तो समाज से किसी प्रकार का कोई सहयोग मिलता है और न परिवार से ही सहयोग मिलता है। जिन लोगों के हाथों में शनि रेखा का अभाव हो, तो यह समझ लेना चाहिए कि इसके जीवन में जो भी दिखाई दे रहा है वह सब इसके प्रयत्नों से ही संभव हुआ है।

यह रेखा नीचे से ऊपर की ओर बढ़ती है, जैसा कि मैंने स्पष्ट किया है कि हथेली में इस रेखा के उद्‌गम स्थान अलग-अलग होते हैं, परन्तु इस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर ही जाकर होती है। इस रेखा के माध्यम से मानव की इच्छाएँ, भावनाएँ उसका बौद्धिक एवं मानसिक स्तर तथा उसकी क्षमताओं का अनुमान हो जाता है। भाग्य रेखा के माध्यम से यह जाना जा सकता है, कि यह व्यक्ति जीवन में कितनी प्रगति करेगा। इसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से क्या स्थिति होगी? क्या इसको जीवन में धन, मान, पद, प्रतिष्ठा आदि मिल सकेंगे? या इसका जीवन परेशानियों से भरा हुआ है? क्या यह व्यक्ति अपने जीवन में इन बाधाओं को पार कर सफलता प्राप्त कर सकता है? ये सारे तथ्य भाग्य रेखा के माध्यम से ही जाने जा सकते हैं।

मध्यमा उंगली (बीच वाली) के मूल में शनि पर्वत होता है। यदि कोई रेखा कहीं से भी प्रारम्भ होकर बिना किसी अन्य रेखा का सहारा लिए शनि पर्वत पर पहुँच जाती है, तो निःसन्देह ऐसी रेखा प्रबल भाग्यवर्द्धक एवं श्रेष्ठ मानी जाती है, परन्तु यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत को पार कर मध्यमा उंगली के पोर तक पहुँचने की कोशिश करती है, तो ऐसी रेखा दूषित कहलाती है।

पाठकों को एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि जो भी रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती है, वास्तव में वही रेखा भाग्य रेखा कहलाने की अधिकारी होती है। इसका उद्गम हथेली में किसी भी स्थान से हो सकता है। यदि किसी के हाथ में एक से अधिक भाग्य रेखाएँ हों और दोनों की समाप्ति शनि पर्वत पर होती हो, तो उन दोनों रेखाओं का मिला-जुला फल उस व्यक्ति को जीवन में देखने को मिलेगा।

भाग्य रेखा क्या कहती है?

1. यदि भाग्य रेखा सीधी तथा स्पष्ट हो और शनि पर्वत से होती हुई सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो, तो व्यक्ति कला के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है।
2. यदि यह रेखा लाल रंग की हो तथा मध्यमा उंगली के प्रथम पोर तक पहुँच जाए, तो उस व्यक्ति की दुर्घटना में मृत्यु होती है।
3. यदि यह रेखा हृदय रेखा को काटते समय जंजीर के समान बन जाए, तो उसे प्रेम के क्षेत्र में बदनामी का सामना करना पड़ता है।
4. यदि हृदय रेखा हथेली के मध्य में फीकी या पतली अथवा अस्पष्ट हो, तो व्यक्ति का यौवनकाल दुखमय होता है।
5. यदि व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा के साथ-साथ सहायक रेखाएँ भी हों, तो उसका जीवन अत्यन्त सम्मानित होता है।
6. यदि भाग्य रेखा जंजीरदार अथवा लहरदार हो, तो जीवन में उसे बहुत अधिक दुख भोगना पड़ता है।
7. जिस व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा नहीं होती, उसका जीवन अत्यन्त साधारण और नगण्य सा होता है।
8. यदि भाग्य रेखा प्रारम्भ से ही टेढ़ी-मेढ़ी हो, तो उसका बचपन अत्यन्त कष्टदायक होता है।
9. भाग्य रेखा अपने उद्गम स्थल से प्रारम्भ होकर जिस पर्वत की ओर भी मुड़ती है या शनि पर्वत से उसमें से कोई शाखा निकलकर जिस पर्वत की ओर जाती है, उस पर्वत से सम्बन्धित गुणों का विकास उस व्यक्ति के जीवन में मिलता है।
10. यदि भाग्य रेखा चलते-चलते रुक जाए, तो वह व्यक्ति जीवन में बहुत अधिक तकलीफ उठाता है।
11. हथेली में भाग्य रेखा जिस स्थान में भी गहरी, निर्दोष और अस्पष्ट होती है, जीवन के उस भाग में उसे विशेष लाभ या सुख मिलता है।
12. भाग्य रेखा हथेली में जितनी बार भी टूटती है, जीवन में उतनी ही बार महत्त्वपूर्ण मोड़ आते हैं या कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
13. यदि भाग्य रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर मध्यमा के ऊपर चढ़े, तो वह दुर्भाग्यशाली होता है। जिसकी भाग्य रेखा ऐसी होगी, उसे जीवन में

कई व्यक्तियों के हाथ में भाग्य रेखा या तो टूटी-फूटी होती है अथवा स्पष्ट नहीं होती। ऐसे व्यक्तियों के जीवन में अनेक प्रकार की बाधाएँ आती हैं, छोटे से छोटे कार्यों को करने में भी कई अड़चनें आती हैं और अथक परिश्रम करना पड़ता है।

व्यक्ति के भाग्य का जिम्मेदार वह स्वयं होता है, परन्तु यदि उसकी झोली में दुर्भाग्य के पन्नों की संख्या ज्यादा है, तो बिना गुरु कृपा के उसे कोई अन्य दूर नहीं कर सकता है।

इसलिए व्यक्ति को चाहिए, कि वह सद्गुरु से प्रार्थना कर के **'तीव्र भाग्योदय दीक्षा'** प्राप्त करे। इस दीक्षा के माध्यम से गुरुदेव शक्तिपात की क्रिया द्वारा दुर्भाग्य को भस्मीभूत कर शिष्य के मस्तक पर सौभाग्य का नवलेखन करते हैं।

हथेली के भिन्न-भिन्न स्थानों से प्रारंभ होने के कारण भाग्य रेखा का महत्त्व भी भिन्न-भिन्न हो जाता है। इसलिए भाग्य रेखा का उद्‌गम तथा उसकी समाप्ति दोनों ही बिन्दुओं का भलीभांति सूक्ष्मता से अध्ययन करने के बाद ही फल कथन सम्भव है। इस रेखा के उद्‌गम स्थानों में भिन्नता होने के कारण अलग-अलग व्यक्तियों के भाग्यफल अलग हो जाते हैं।

किसी प्रकार का कोई सुख या आनन्द नहीं मिलेगा।

14. यदि भाग्य रेखा प्रथम मणिबन्ध से भी नीचे हो अर्थात् प्रथम मणिबन्ध से नीचे उसका उद्‌गम स्थल हो, तो उसे जीवन में जरूरत से ज्यादा कष्ट उठाना पड़ता है।

15. यदि भाग्य रेखा के साथ में कोई भी सहायक रेखा हो, तो यह शुभ कहा जाता है। यदि उंगलियाँ लम्बी हों और भाग्य रेखा का प्रारंभ चन्द्र पर्वत से हो, तो ऐसा व्यक्ति प्रसिद्ध तांत्रिक होता है।

16. यदि चन्द्र पर्वत को काटकर भाग्य रेखा आगे बढ़ती हो, तो वह व्यक्ति जीवन में कई बार विदेश यात्रा करता है।

17. यदि भाग्य रेखा के उद्‌गम स्थान पर त्रिकोण का चिह्न हो, तो वह व्यक्ति अपनी ही प्रतिभा से उन्नति करता है।

18. यदि भाग्य से कुछ शाखाएँ निकल कर ऊपर की ओर जा रही हों, तो वह व्यक्ति अपनी ही प्रतिभा से उन्नति करता है।

19. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारंभ हो और मार्ग में कई जगह आड़ी-तिरछी रेखाएँ हों, तो उस व्यक्ति को बुढ़ापे में सफलता मिलती है।

20. यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत पर वृत्ताकार बन जाए, तो उसके जीवन में अत्यधिक परिश्रम के बाद सफलता आती है।

21. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारम्भ हो और उसकी शाखाएँ गुरु, सूर्य तथा बुध पर्वत पर जाती हों, तो वह व्यक्ति विश्वविख्यात होता है।

22. यदि भाग्य रेखा के उद्‌गम स्थान पर तीन या चार रेखाएँ निकली हुई हों, तो ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय विदेश में होता है।

23. यदि भाग्य रेखा के उद्‌गम स्थान से एक सहायक रेखा शुक्र पर्वत की ओर जाती हो, तो किसी स्त्री के माध्यम से उसका भाग्योदय होता है।

24. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा के पास समाप्त हो जाती हो, तो उसे जीवन में बार-बार निराशा का सामना करना पड़ता है।

25. भाग्य रेखा पर जितनी ही आड़ी-तिरछी रेखाएँ होती हैं, वे उसकी प्रगति में बाधक कहलाती हैं।

26. यदि भाग्य रेखा की समाप्ति पर तारे का चिह्न हो, तो उसकी वृद्धावस्था अत्यन्त कष्टमय होती है।

27. यदि भाग्य रेखा और विवाह रेखा परस्पर मिल जाएं, तो उसका गृहस्थ जीवन दु:खमय रहता है।

28. यदि भाग्य रेखा से कोई सहायक रेखा निकलती हो, तो वह भाग्य को प्रबल बनाने में सहायक होती है।

29. यदि भाग्य रेखा के ऊपर या नीचे शाखाएं हों, तो आर्थिक कष्ट उठाना पड़ता है।

30. भाग्य रेखा के अन्त में क्रॉस या जाली हो, तो उसकी क्रूर हत्या होती है।

31. यदि भाग्य रेखा के अन्त में चतुर्भुज हो, तो उस व्यक्ति की धर्म में विशेष आस्था होती है।

32. भाग्य रेखा पर धन का चिह्न शुभ माना गया है।

33. भाग्य रेखा गहरी स्पष्ट और लालिमा लिए हुए होती है, तो व्यक्ति जीवन में शीघ्र ही प्रगति करता है।

वस्तुत: भाग्य में जीवन का एक महत्वपूर्ण अंश संग्रहित होता है। अत: जिसकी हथेली में भाग्य रेखा प्रबल, स्पष्ट और सुन्दर होती है, वह व्यक्ति अपने भाग्य से शीघ्र उन्नति करता है और समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त करता हुआ पूर्ण भौतिक सुखों का भोग करता है।

पशुत्व से देवत्व की ओर

जब तक मनुष्य में आध्यात्मिक चेतना जाग्रत नहीं होती, तब तक वह पशु तल्य ही रहता है। वास्तव में पशु और मनुष्य में कोई अन्तर नहीं है। आहार का सम्पादन करना, निद्रा में लीन हो जाना, भयग्रस्त होना, सम्भोग करना यह सब क्रियाएं पशुओं में तथा मनुष्यों में समान हैं। हम भी अपने परिवार का पालन-पोषण कर रहे हैं। पशु-पक्षी भी इसी काम में संलग्न हैं। इस पशुत्व की दशा से देवत्व की दशा को प्राप्त करना कठिन जरूरी है, परन्तु असम्भव नहीं है।

जब तक मानव नाभि के नीचे के कार्यों में ही मग्न रहता है, तब तक वह पशुत्व की स्थिति में ही रह जाता है। उसमें मानवीय मूल्यों का उदय होने पर मनुष्यत्व की प्राप्ति होती है। आजकल तो पशुत्व से भी भयानक राक्षसी प्रवृत्ति लोगों में उत्पन्न हो गई है। सात्विकता नाम की कोई चीज इस दुनिया में उपलब्ध नहीं है। इसका कारण नैतिक मूल्यों का पतन है। असत्य से सत्य की ओर, तमस से ज्योति की ओर, मृत्यु से से अमृत्यु की ओर प्रस्थान करना केवल गुरू कृपा से ही सम्भव है।

दुष्प्रवृत्तियों का नाश तभी हो पाएगा जब नारी को मां जगदम्बा का ही स्वरूप मान कर चलेंगे। नारियों को भी चाहिए कि वे अपने अन्दर से गन्दे विचार निकाल कर पवित्र भावनाओं को स्थान दें।

इस विवेचन का तात्पर्य यह नहीं, कि हमें जीविकोपार्जन छोड़ देना चाहिए या बीबी-बच्चों को छोड़ देना चाहिए, अपितु इसका सारांश इतना ही है, कि आप जो भी करें वह नीतिसंगत हो, क्योंकि धर्मबद्ध काम भगवान का ही स्वरूप होता है, लेकिन आजकल के जमाने में काम-वासना को 'तृप्त' कर लेना नागरिकता का एक अंग बन गया है। विश्रृंखल यौन सुख के कारण एड्स के रोगियों की संख्या काफी बढ़ गई है। हम अमृतत्व की ओर नहीं बल्कि मृत्यु की ओर गतिशील हो रहे हैं। नारी को मातृस्वरूपा इसलिए कहा गया है, कि उसे कामदृष्टि से न देखें। प्राचीन काल में नारियों के प्रति पूज्य भावना का उदाहरण हमें वाल्मिकी रामायण में मिलता है। सीता अपहरण के बाद जब राम को कुछ गहने मिलते हैं और वे लक्ष्मण को दिखाते हैं, तब लक्ष्मण कहते हैं-

नाहं जानामि केयूरं नाहं जानामि कुण्डलं।
नूपुरं तवभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्।।

"भैय्या, न मैं केयूरों को जानता हूं, न ही कर्ण-कुण्डलों को। किन्तु भाभी को नित्य पादाभिवन्दन करने के कारण उनके नूपुर को अवश्य पहचानता हूं।"

लक्ष्मण ने सीता को मातृभावना से देखा है। इसका कारण नारी के प्रति पवित्र भावना रखना है। आजकल लोग सभी नारियों को एक ही दृष्टि से देखते हैं, यह गलत है।

इस तरह की दुष्प्रवृत्तियों का नाश तभी हो पाएगा जब नारी को मां जगदम्बा का ही स्वरूप मान कर चलेंगे। नारियों को भी चाहिए कि वे अपने अन्दर से गन्दे विचार निकाल कर पवित्र भावनाओं को स्थान दें।

भगवती त्रिपुर सुन्दरी के स्तोत्रात्मक श्लोक में नारी को जगदम्बा का ही स्वरूप माना गया है-

विद्याः समस्ताः तव देवि भेदाः, स्त्रियः समस्ताः सकलाः जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बमेतत्, का ते सतुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः।।

सारांश यह है, कि पर-धन एवं पर-स्त्री का व्यामोह हटाकर धर्मबद्ध रीति से जीवन चलाएं, तो हम सही अर्थों में पशुत्व की दशा को पार कर मनुष्यत्व को प्राप्त करेंगे, जब सही मनुष्य बनेंगे, दूसरों का ध्यान रखेंगे, परोपकार करेंगे, सद्गुरु का दर्शन करेंगे तभी हम मनुष्यत्व से देवत्व या दिव्यत्व की ओर बढ़ सकेंगे।

वास्तव में देखा जाए, तो हर प्राणी का व्यक्तित्व दिव्य है। हर शरीर में परमात्मा का वास है। आवश्यकता तो इस बात की है, कि हम सद्गुरु के चरणों में बैठकर साधानात्मक ज्ञान प्राप्त करें। प्रवचन सुनकर मात्र लौकिक कार्यों में निमग्न होने से कुछ नहीं होगा। **गुरुदेव के ज्ञान को प्राप्त कर बार-बार उसका मनन करें, उसके बाद अभ्यास करें, इसी को श्रवण, मनन, निधिध्यास कहते हैं। साधनात्मक पथ पर जब हम प्रवेश करेंगे, तब हमें गुरुदेव का मार्गदर्शन बराबर मिलता रहेगा। मृत्यु से अमृतत्व की ओर, छल, झूठ, कपट से सत्य की ओर, दुःखमय संसार से दिव्य चेतनापूर्ण, अमृतमय सिद्धाश्रम की ओर प्रस्थान करेंगे। इसके लिए ऊर्ध्वमुखी होना जरूरी है।**

असली ज्ञान

एक युवा संन्यासी एक आश्रम में ठहरा हुआ था। वह एक पुराने संन्यासी के निकट सानिध्य एवं कुछ ज्ञान प्राप्ति के लिए आया था लेकिन दो-चार दिन उसके साथ रहने पर ही उसे लगा कि वह संन्यासी तो अज्ञानी है। उसने सोचा चलो इसे छोड़कर कहीं और ज्ञान की खोज करते हैं। लेकिन जिस दिन वह आश्रम छोड़ने को था, उसी दिन एक और संन्यासी का उस आश्रम में आगमन हुआ।

रात्रि में आश्रम में जब एक साथ बैठे तो आपस में बातें हुई। नये आने वाले संन्यासी ने इतनी ज्ञान की बातें की कि छोड़कर जाने वाले संन्यासी को लगा कि गुरु हो तो ऐसा हो। दो घंटे में ही वह मंत्रमुग्ध हो गया।

जब चर्चा समाप्त हुई तो नये आये हुए संन्यासी ने उस बुजुर्ग पुराने संन्यासी से पूछा-''आपको मेरी बातें कैसी लगी ?'' उस बुजुर्ग संन्यासी ने कहा-''तुम्हारी बातें ? बातें तो तुमने बहुत की लेकिन वे तुम्हारी नहीं थी। मैं बहुत ध्यान से सुनता रहा कि शायद तुम कुछ बोलोगे, लेकिन तुम कुछ बोले ही नहीं। जो तुमने इकट्ठा किया था, उसी को बाहर निकालते रहे। बाहर से जो भीतर ले जाया जाये और फिर बाहर निकाला जाये, उसमें तो वमन की दुर्गन्ध ही आती है। तुम्हारे भीतर से सिर्फ पढ़ा हुआ आता रहा, जिसमें तुम्हारा खुद का कुछ नहीं था। तुम तो जरा भी नहीं बोले।''

युवा संन्यासी जो आश्रम छोड़कर जाना चाहता था, यह सुनकर रुक गया तब उसने महसूस किया कि जानने-जानने में बहुत फर्क है। ज्ञान वह है जिसका जन्म अपने भीतर से होता है। बाहर से इकट्ठा कर के सिर्फ बोलना वह सिर्फ बन्धन है । जब ज्ञान स्वयं के अन्दर से स्फुटित होता है, भीतर से आता है वही हमें मुक्त करता है, वही सच्चा ज्ञान है।

इसलिए ध्यान की, एकाग्रता की महिमा बताई गई है। अपने अन्दर उतरने की क्रिया को सर्वश्रेष्ठ कहा गया है और यह तब सम्भव है जब हम अपने हृदय में पवित्रता को स्थान देंगे, अपने आहार-विहार पर उचित ध्यान देंगे, अपने को विकारमुक्त करने की राह पर अग्रसर होंगे। सभी में अपने सद्गुरुदेव को अनुभव करेंगे। तब अवश्य ही हमें सद्गुरुदेव की कृपा प्राप्त होगी। तब हमारे अन्दर से उस ज्ञान का उद्भव स्वयं होगा।

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष–माह का प्रारम्भ अच्छा है। भागदौड़ रहेगी, परिश्रम के अच्छे परिणाम मिलेंगे। व्यापारी वर्ग को विशेष लाभ का अवसर मिलेगा। उत्साह का वातावरण रहेगा। रुके हुये कार्य पूरे होंगे। परिवार में खुशियों का माहौल रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अनुकूल है। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। माह के मध्य के बाद आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव रहेगा। अदालती मामलों में सावधानी रखें। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। जीवन साथी से कुछ अनबन हो सकती है। आर्थिक परेशानियां भी आ सकती हैं। शत्रु निस्तेज रहेंगे। आर्थिक परेशानी से निरुत्साहित न हों। इस माह आप तारा दीक्षा प्राप्त करके साधना सम्पन्न करें।

वृष–माह का प्रारम्भ उन्नतिदायक रहेगा। अच्छे ग्रहों के प्रभाव से कोई नई कार्य योजना बनेगी। भाग्योन्नति के अवसर हैं, परिवार से सहयोग मिलेगा। संतान पक्ष से शुभ समाचार मिलेगा। नौकरीपेशा लोगों को अधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। गृहस्थ जीवन में उतार-चढ़ाव आ सकता है। बुजुर्गों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आप के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखें। मन में उच्चाटन रहेगा। आय में वृद्धि होगी परन्तु आशा के अनुरुप सफलता नहीं मिलेगी। बेरोजगारों को अपना रोजगार प्रारम्भ करने के अवसर मिलेंगे। आप क्रोध पर नियंत्रण रखें अन्यथा तनाव से स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आप इस माह नवग्रह साधना सम्पन्न करें।

मिथुन–माह का प्रारम्भ मध्यम है। आर्थिक उन्नति में बाधाएं आयेंगी। व्यापार में अनावश्यक विघ्न आ सकता है। मित्रों से अनबन हो सकती है।आकस्मिक खर्च आ जाने से बजट बिगड़ेगा। शत्रुओं से सावधान रहें। जो कार्य कर रहे हैं, उसमें सतर्कता बरतें। आलस्य न करें। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा, ध्यान दें। माह के मध्य में कोई अपरिचित आपकी मदद करेगा। परिवार में भी तनाव रहेगा, संयम से ही सभी समस्याओं का निदान सम्भव है। धन का अपव्यय न करें। गलत सोहबत के मित्रों से दूर रहें। मेहनत से ही इस समय बदलाव सम्भव है। अनुकूलता प्राप्ति के लिए भगवान सूर्य को अर्घ्य दें एवं भगवान विष्णु की साधना करें।

कर्क–माह का प्रारम्भ मिश्रित प्रभाव युक्त रहेगा। व्यापारिक स्थलों पर आकस्मिक समस्याओं से जूझना पड़ेगा। बनते हुये कार्य में विघ्न-बाधायें आ सकती हैं। मित्रों का सहयोग मिलेगा। खर्च की अधिकता रहेगी। परन्तु आवश्यकता अनुसार आपके धन आगमन का स्रोत चालू रहेगा। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। नौकरीपेशा लोगों का ऑफिस में किसी बात पर मनमुटाव हो सकता है। अधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग अपने कैरियर को लेकर चिंतित रहेंगे। कार्यों में विलम्ब को लेकरी मन में चिड़चिड़ापन रहेगा। जीवनसाथी का सहयोग आत्मसंयम प्रदान करेगा। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा, मानसिक तनाव भी रह सकता है। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर खर्च होगा। खर्च पर संयम रखें। इस माह आप शनि साधना करें।

सिंह–माह के प्रारम्भ के कुछ दिन प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। यह माह संघर्षपूर्ण है अतः कर्मशीलता पर ध्यान दें। संघर्ष से ही आय के समुचित साधन बनेंगे। खर्च की अधिकता रहेगी। शत्रु पक्ष से सावधान रहें। व्यापार की उन्नति में कुछ नये व्यक्ति सहयोग करेंगे। अदालती मामलों में अनुकूलता मिलेगी। धार्मिक कार्यों में आप रुचि लेंगे। परिवार की ओर ध्यान दें अन्यथा अनबन हो सकती है। अपने क्रोध पर संयम रखें अन्यथा बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। बच्चों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। कार्यों में अड़चने आयेंगी परन्तु आप अपने पुरुषार्थ से सफलता प्राप्त कर लेंगे। यात्रा भी हो सकती है। संतान पक्ष से खुशी मिलेगी, व्यर्थ चिन्ता न करें। आप इस माह गणपति साधना सम्पन्न करें।

कन्या–माह का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। कोई विवाद आपको परेशान करेगा। अपने आप पर संयम रखें। क्रोध से बचें। किसी निकट के व्यक्ति से तकरार हो सकती है। अपने कार्य और व्यापार पर ध्यानपूर्वक निर्णय लें। अपने शुभचिंतक का परामर्श आवश्यक है। नौकरीपेशा लोगों को अपने कार्यों पर विशेष ध्यान देना चाहिए,

लापरवाही न करें अन्यथा उच्च अधिकारियों से डांट मिल सकती है। यात्रा का योग है। जीवनसाथी से अनबन हो सकती है। अधिक धन खर्च पर नियंत्रण रखें। मानसिक रूप से चिड़चिड़ापन रहेगा। संतान पर ध्यान दें, शत्रुपक्ष शांत रहेगा। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है। माह के अंत में खर्च में अधिकता रहेगी। आप इस माह जनरी-21 पत्रिका में प्रकाशित श्री विद्या स्तोत्र का पाठ करें।

तुला– माह का प्रारम्भ उत्तम है। आपका व्यक्तित्व घबराने वाला नहीं है। संघर्ष में भी आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु क्रोध एवं घमंड आप को नीचे गिरायेगा अतः इन से बचें। पूरा माह मिश्रित प्रभाव लेकर आपको आगे बढ़ायेगा। मित्रों का सहयोग मिलेगा, किसी नये कार्य की योजना बनेगी और सफलता भी मिलेगी। नौकरीपेशा लोग ऑफिस में लड़ाई-झगड़े से बचें। स्वास्थ्य की दृष्टि से माह सामान्य है, थोड़ी योग साधना करते रहें। जीवनसाथी से मनमुटाव रहेगा। संतान पक्ष से कोई शुभ समाचार मिल सकता है। वाहन चलाते समय सतर्क रहें। तीसरे सप्ताह से अनुकूलता प्राप्त होगी। गलत तरीके से पैसा कमाने से बचें। अपने स्वयं के बल पर सफलता मिलेगी, आर्थिक उन्नति होगी। आप जनवरी-21 माह में प्रकाशित लक्ष्मी साधना करें।

वृश्चिक– माह का प्रारम्भ उत्साहपूर्ण रहेगा। कुछ रुके हुये कार्य बनेंगे। समाज में मान-सम्मान मिलेगा। आपको धैर्य और पराक्रम से सफलता मिलेगी। धन लाभ के अवसर हैं। नया वाहन सुख भी सम्भव है। प्रेम से सफलता मिलेगी। शत्रुओं से सावधान रहें। जीवनसाथी से किसी बात पर नोक-झोंक उलझनें बढ़ायेंगी। मानसिक तनाव बढ़ेगा। संयम एवं धैर्य से काम लें। संतान की पढ़ाई पर ध्यान दें। परिवार के लिए समय निकालें। स्वास्थ्य की दृष्टि से शरीर में दर्द की समस्या हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों को उच्च अधिकारियों से संयमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। आय कम तथा खर्च की अधिकता रहेगी। बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होगी। आप इस माह विघ्नहर्ता गणेश दीक्षा प्राप्त करें।

धनु– माह का प्रारम्भ धन लाभ लायेगा। संघर्ष के बावजूद आर्थिक उन्नति होगी। घर में खुशी का वातावरण रहेगा। भूमि का क्रय भी हो सकता है। आप आलस्य न करें, मेहनत से कार्य में लग जायें। नया वाहन सुख भी मिल सकता है। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। मित्रों एवं रिश्तेदारों का भी सहयोग जीवन में खुशी लायेगा। तीसरे सप्ताह में कुछ कार्यों में बनते-बनते अड़चनें पैदा होंगी। कार्यों में देरी से आप मानसिक रूप से परेशान होंगे। धन हानि भी हो सकती है। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। असहायों की सहायता करें। योग साधना अवश्य करें। अपना कर्म करें, धन के लालच में न पड़ें। मित्रों के साथ एवं परिश्रम से आप अपना मुकाम पा लेंगे। खर्च पर नियंत्रण रखें। आप भैरव दीक्षा प्राप्त करें।

मकर– माह का प्रारम्भ सामान्य है, जीवन संघर्षपूर्ण रहेगा। आय के साधन कम रहेंगे, खर्च अधिक रहेगा। लेकिन परिश्रम से निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति के साधन अवश्य बनेंगे। दाम्पत्य जीवन में सुख रहेगा,

सर्वार्थ सिद्धि योग	-	फरवरी-20, 22, 25, 28
रवियोग	-	फरवरी-3, 15, 17, 22, 23, 26
गुरु पुष्य योग	-	फरवरी-25 (प्रातः 7.09 से 1.17 दोपहर तक)

संतान पक्ष आपके अनुकूल कार्य करेगा। अदालती मामलों में लापरवाही न करें। अहंकार से दूर रहें। सूझबूझ से आप सभी समस्याओं का निराकरण कर लेंगे। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। परिवार की ओर से हिम्मत और ऊर्जा मिलेगी। नौकरीपेशा लोगों के लिए उन्नति के अवसर हैं। आपकी कोई छिपी बात खुलने से आप परेशान हो सकते हैं। पिता से मतभेद हो सकते हैं। संतान के कार्यों पर ध्यान रखें। माह के अंत में कोई आकस्मिक धन लाभ हो सकता है। आप षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना करें।।

कुम्भ– यह माह आपके लिए अच्छे समाचार लायेगा। आर्थिक उन्नति होगी, रुके कार्य फिर से चालू होंगे। आप प्रगति के पथ पर अग्रसर होंगे। आप सुझबूझ से एवं शांत-भाव से किसी भी बात पर निर्णय लें। पारिवारिक विवाद समाप्त होंगे, परिवार में प्रेम और उत्साहपूर्ण वातावरण रहेगा। गरीबों की सहायता करेंगे। नौकरीपेशा लोगों को अपने साथियों से सहयोग मिलेगा। शत्रु पक्ष शांत रहेगा। माह के मध्य के बाद आपको विशेष परिश्रम एवं भागदौड़ करनी पड़ेगी। यात्रा में परेशानी आ सकती है। वाद-विवाद सेअपने को दूर रखें। स्वास्थ्य ठीक रहेगा, वाहन चलाते वक्त सावधानी रखें। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। माह के अंत में व्यर्थ के खर्च बढ़ेंगे। आप इस माह सूर्य को अर्घ्य दें एवं सूर्य साधना करें।

मीन– माह का प्रारम्भ शुभ है। आपका परिश्रम सफल होगा, आर्थिक उन्नति होगी। घर-परिवार में खुशी का वातावरण रहेगा। लाभ के मार्ग पर धीरे-धीरे बढ़ेंगे। किसी व्यक्ति का विशेष सहयोग प्राप्त होगा। रुके कार्य बनेंगे। कारोबार में विस्तार की स्थितियां बन रही हैं। सद्गुरुदेव की कृपा है, आप नित्य गुरु पूजन गुरु मंत्र का जप करें। जरूरतमंदों की सहायता करें। उधार से बचें, किसी के बहकावे से दूर रहें। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। नौकरीपेशा लोगों को निष्ठापूर्वक अपना कार्य करना चाहिए। तीसरे सप्ताह में वाहन आदि पर खर्च हो सकता है। यात्रा भी हो सकती है। अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य पर विश्वास रखें। परिवार के साथ समय व्यतीत करें। इस माह आप गुरु हृदय स्थापन दीक्षा प्राप्त करें।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

05.02.21	शुक्रवार	श्रीयंत्र अष्टमी
08.02.21	सोमवार	षट्तिला एकादशी
11.02.21	गुरुवार	मौनी अमावस्या
12.02.21	शुक्रवार	गुप्त नवरात्रि प्रारम्भ
16.02.21	मंगलवार	बसंत पंचमी
19.02.21	शुक्रवार	आरोग्य सप्तमी
23.02.21	मंगलवार	जया एकादशी
27.02.21	शनिवार	त्रिपुर सुन्दरी जयंती

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक		श्रेष्ठ समय
रविवार (जनवरी-31) (फरवरी-7, 14, 21, 28)	दिन	06:00 से 10:00 तक
	रात	06:48 से 07:36 तक
		08:24 से 10:00 तक
		03:36 से 06:00 तक
सोमवार (फरवरी-1, 8, 15, 22)	दिन	06:00 से 07:30 तक
		10:48 से 01:12 तक
		03:36 से 05:12 तक
	रात	07:36 से 10:00 तक
		01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (फरवरी-2, 9, 16, 23)	दिन	06:00 से 08:24 तक
		10:00 से 12:24 तक
		04:30 से 05:12 तक
	रात	07:36 से 10:00 तक
		12:24 से 02:00 तक
		03:36 से 06:00 तक
बुधवार (फरवरी-3, 10, 17, 24)	दिन	07:36 से 09:12 तक
		11:36 से 12:00 तक
		03:36 से 06:00 तक
	रात	06:48 से 10:48 तक
		02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (फरवरी-4, 11, 18, 25)	दिन	06:00 से 08:24 तक
		10:48 से 01:12 तक
		04:24 से 06:00 तक
	रात	07:36 से 10:00 तक
		01:12 से 02:48 तक
		04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (जनवरी-29) फरवरी-5, 12, 19, 26)	दिन	06:48 से 10:30 तक
		12:00 से 01:12 तक
		04:24 से 05:12 तक
	रात	08:24 से 10:48 तक
		01:12 से 03:36 तक
		04:24 से 06:00 तक
शनिवार (जनवरी-30) (फरवरी-6, 13, 20, 27)	दिन	10:30 से 12:24 तक
		03:36 से 05:12 तक
	रात	08:24 से 10:48 तक
		02:00 से 03:36 तक
		04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

फरवरी 21

11. आज मौनी अमावस्या है। पूजन के बाद किसी असहाय को अन्न दान करें।
12. आज से गुप्त नवरात्रि प्रारम्भ है प्रातः माँ दुर्गा की आरती करके जाएं।
13. निम्न मंत्र का 11 कर उच्चारण करके जाएं-
    ऊँ शं शनैश्चराय नमः।।
14. आज माँ पार्वती के मन्दिर में दीपक जलाएं।
15. गणपति मंत्र 'ऊँ गं गणपतये नमः' का 108 बार उच्चारण करके जाएं।
16. आज बसंत पंचमी है सपरिवार 'ऊँ ऐं ऊँ' का 5 मिनट जप करें।
17. आज दूध से बने प्रसाद का भोग लगाकर बांट दें।
18. पीपल के पेड़ में जल अर्पित करें।
19. आज भगवान शिव का पूजन करें एवं महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
20. सरसों के तेल के साथ दक्षिणा सहित दान करें।
21. आज निखिल स्तवन का पाठ करें।
22. किसी शिव मन्दिर में दुग्ध मिश्रित जल से अभिषेक करें।
23. निम्न मंत्र का 5 बार जप करके जाएं-
    ऊँ हुं हुं हसौं हस्फ्रों हुं हुं हनुमते नमः।।
24. प्रातः पूजन में 'ह्रीं' मंत्र का 108 बार उच्चारण करके जाएं।
25. प्रातः दुर्लभोपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।
26. निम्न मंत्र 11 बार का उच्चारण करके जाएं-
    ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।।
27. आज त्रिपुर सुन्दरी जयंती है, साधना सम्पन्न करें।
28. भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें।

मार्च 21

1. गाय को रोटी खिलाने के बाद ही भोजन करें।
2. हनुमान चालीसा का 1 पाठ करके जाएं।
3. निम्न मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करके जाएं-
   ऊँ अन्नपूर्णायै नमः।।
4. आज प्रातःकालीन उच्चरित वेद ध्वनि सी.डी. अवश्य सुनें।
5. आज पूजन के बाद पक्षियों को दाना डालें।
6. आज अष्टमी है, किसी देवी मन्दिर में दीपक जलायें।
7. गायत्री मंत्र की एक माला मंत्र जप करके ही जाएं।
8. इस दिन अपने वस्त्रों में सफेद रंग को प्रधानता दें।
9. मनोकामना गुटिका (150/-) धारण करें, मनोकामना पूर्ण होगी।
10. केसर का तिलक लगाकर बाहर जाएं, सफलता मिलेगी।

महाशिवरात्रि

11.03.21

यदि कोई परम तत्व है, परम स्थिति है,
परम प्रकाश है और परमेश्वर है–
तो वह शिव ही हैं, जो जाग्रत, स्वप्न
और सुप्त तीनों अवस्थाओं से परे है–
वह शिव ही हैं, जो ॐकार स्वरूप हैं,
दिव्य ज्ञान हैं, समस्त शक्तियों के
मूल आश्रय हैं
वह शिव ही हैं, जो सबके रक्षक,
सब सिद्धियों के स्वरूप, ज्ञान, बल,
इच्छा, क्रियाशक्ति के सम्पूर्ण तत्व,
देवों के देव महादेव हैं–वह शिव ही हैं।

शिव पूजन साधना उपासना

जो स्वयं साकार-निराकार दोनों स्वरूपों में हैं,
पृथ्वी तत्व के स्वामी हैं, अर्थात् किसी भी प्रकार का भार उठाने में समर्थ हैं,
जो मन्त्र तथा तन्त्र के चरम स्वरूप हैं, सृष्टि के नियन्ता हैं

तथा अपने पास कुछ भी नहीं रखते हुए अपने साधकों, भक्तों पर परम प्रसन्न होकर सभी ऐश्वर्य, सौभाग्य प्रदान कर देते हैं, वह शिव ही तो हैं, जो गणों, भूतों-पिशाचों में भी पूज्य हैं और योगियों व देवताओं में भी आराध्य हैं, जो महामृत्युंजय है, शक्ति के स्वरूप हैं,

क्योंकि जहाँ शिव हैं वहीं शक्ति है, वे शिव ही तो हैं, ऐसी कोई सिद्धि नहीं,
ऐसा कोई ज्ञान नहीं, ऐसा कोई निर्वाण नहीं, जो शिव साधना से प्राप्त न होता हो।

कुबेर ने शिव की साधना से धनपति पद प्राप्त किया, इन्द्र ने अमोघ वज्र, ब्रह्मा ने पूर्ण चैतन्य सिद्धि, रावण ने स्वर्ण लंका, तो फिर साधारण जन में शिव के विभिन्न स्वरूपों के पूजा-साधना का इतना अधिक विधान है, तो आश्चर्य ही किया?

शिवत्व है पुरुषार्थ, प्रेम, शक्तिमान, सौभाग्य, बल, साहस,सिद्धि, सभी तांत्रिक साधनाएँ शिव साधना का स्वरूप ही हैं, शिव की कृपा से कोई अधूरा नहीं रह सकता, चाहे वह किसी भी अवस्था में हो, किसी भी स्वरूप में हो, किसी भी रूप से उसने साधना भक्ति की हो, शिव अर्द्धनारीश्वर हैं, त्रिनेत्र हैं, ध्यानमग्न हैं, लेकिन उनसे कुछ भी अछूता नहीं है, वे पार्थिव भी हैं और साकार भी, पार्थिव स्वरूप में शिवलिंग रूप में पूजित होते हैं और साकार रूप में मूर्ति, चित्र, यन्त्र स्वरूप में पूजित होते हैं, शिव के साधक को न तो अपमृत्यु का भय रहता है और न ही रोग का और न ही शोक का, क्योंकि जहाँ शिव है वहाँ यमराज भी नहीं आ सकते, शिवत्व तो एक रक्षा चक्र है, शक्ति चक्र है ब्रह्म चक्र है, जो साधक को हर प्रकार से सुरक्षित कर देता है।

शिव साधना के नियम

शिव की साधना के नियम अत्यन्त सरल हैं, साधक भय-रहित होकर अपना इष्ट मानते हुए शिव की पूजा, अर्चना, ध्यान करें।

1. शिव पूजन में साधक ललाट पर लाल चन्दन का त्रिपुण्ड और बाहों पर भस्म अवश्य लगाएं।
2. शिव साधना में रुद्राक्ष माला से ही मंत्र जप करना आवश्यक है।
3. शिव पूजा में श्वेत पुष्प, धतूरे का पुष्प तथा बिल्व पत्र और दुग्ध मिश्रित जल धारा अर्पित करनी चाहिए।
4. शिव की स्तुतियाँ अभिषेक तो हजारों हैं, लेकिन पंचाक्षरी मन्त्र 'नमः शिवाय' का पाठ अवश्य ही करना चाहिए।

शिव पूजा साधना

साधक शिव साधना घर पर भी कर सकता है और मंदिर में त्रयोदशी को भी, जो प्रदोष कहलाती है, यह शिव प्रदोष व्रत है तथा प्रत्येक मास की कृष्ण चतुर्दशी मास शिवरात्रि कही जाती है, इन दिनों में शिव साधना प्रारम्भ की जा सकती है एवं किसी भी सोमवार को प्रारम्भ की जा सकती है। सोमवार ही शिव का दिन है।

प्रातः स्नान कर अपने सामने दो ताम्र पात्र स्थापित करें, एक में 'शिव यन्त्र' तथा दूसरे में नर्मदेश्वर शिवलिंग स्थापित करें, नर्मदा का बाणलिंग सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, जो कि पूर्ण सिद्धि, भक्ति, मुक्ति प्रदायक है, लिंग के साथ वेदी अवश्य होनी चाहिए। वेदी, महादेवी अर्थात् शक्ति स्वरूप है। वेदी आप बाजार से खरीद सकते हैं।

प्रातः शुद्ध वस्त्र धारण कर, सर्वप्रथम स्थान शुद्धि, आसन शुद्धि कर, शिव का ध्यान करें तथा रक्त चंदन से यंत्र पूजा कर, एक सुपारी रखें, चावल चढ़ाएँ और एक बिल्व पत्र अर्पित करें, उसके पश्चात् एक माला 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जप बोलते हुए करें, इसके पश्चात् शिवलिंग पूजन करें, सर्वप्रथम शिव का ध्यान कर लिंग के मस्तक पर एक पुष्प चढ़ाएं और निम्न मंत्र से शिव का आह्वान करें–

आह्वान मन्त्र

ॐ पिनाक-धृक् इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुहस्व, यावत् पूजां करोम्यहं। स्थानीयं पशुपतये नमः। एतत् पाद्यै नमः शिवाय॥

इसके पश्चात् 'ॐ शूलपाणे इह शू प्रतिष्ठितो भवः' इस मन्त्र से लिंग प्रतिष्ठा करें और 'ॐ पशुपतेय नमः' मंत्र से शिवलिंग के मस्तक पर तीन बार जल चढ़ाएं, फिर चावल अर्पित करें, उसके पश्चात् बिल्व पत्र चढ़ाएं और शिव की अष्टमूर्ति पूजा, गन्ध पुष्प द्वारा क्रमशः करें–

एते गन्धपुष्पे ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ भवायजलमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः।
एते गन्धुपष्पे ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः।

इसके पश्चात् मंत्र जप करें, मंत्र जप अपने कार्य के अनुसार करना चाहिए।

मंत्र : ॐ नमः शिवाय

1. यह सुख और सौभाग्य प्रदान करने वाला मूल शिव मंत्र है, इसकी पांच माला प्रतिदिन जप करना चाहिए।

मंत्र : ह्री ॐ नमः शिवाय ह्रीं

2. यह अष्टाक्षर शिव मंत्र शत्रु बाधा निवारण व भय नाशक मंत्र है।

मंत्र : रं क्षं मं यं ओं अं

3. यह सर्व सिद्धि प्रदायक गृहस्थ सुख-शान्ति, संतान प्राप्ति का शिव मन्त्र है।

4. महामृत्युंजय मन्त्र–
   यह मंत्र नहीं अपितु ऐसा चमत्कारी विधान है जिसके जप करने से अकाल मृत्यु, रोग, बाधा, निर्बलता निश्चित रूप से दूर हो जाते हैं।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

शिव पूजा में शुद्ध शिव यन्त्र तथा शुद्ध शिवलिंग–जो प्राण प्रतिष्ठायुक्त हो, का ही प्रयोग करना चाहिए। मंत्र जप के पश्चात् भगवान शिव की आरती सम्पन्न करें।

साधना सामग्री-रुद्राक्ष माला- 300/,
यंत्र एवं नर्मदेश्वर शिवलिंग-390/

शिवरात्रि 11.03.21

शिवरात्रि

के दिन या किसी भी सोमवार को शिव से सम्बन्धित कुछ ऐसे प्रयोगों को प्रस्तुत किया जा रहा है, जिन्हें कुछ साधकों ने व्यक्तिगत रूप से पूज्य गुरुदेव से प्राप्त कर सम्पन्न किया है और उनमें सफलता प्राप्त की हैं।

इन प्रयोगों को सम्पन्न करने के साथ-साथ साधकों को अपने मन में श्रद्धा-विश्वास का भाव रखना आवश्यक है।

शिव-शक्ति प्रयोग

जब व्यक्ति हीनता, ग्लानि, न्यूनता का अनुभव करने लगता है तो इसके पश्चात जीवन में फिर उच्चता प्राप्त कर पाना उस व्यक्ति के लिए प्राय: असम्भव सा हो जाता है। वह इस न्यूनता भरे जीवन से विमुख होने के पश्चात स्वयं उस पत्थर के समान हो जाता है, जो सिर्फ राह चलते लोगों की ठोकरें खाने के लिए होता है। काल का प्रहार उसे तराश कर किसी देवमूर्ति को बनाने के स्थान पर उसे टूटे टुकड़ों की भांति फेंक देता है। ऐसी न्यूनतम स्थिति में रहने की अपेक्षा यदि व्यक्ति अपने जीवन में शिव-शक्ति का सायुज्य ग्रहण कर ले, तो वह देवमूर्ति के समान ही प्रखर हो उठेगा।

किसी भी सोमवार की प्रात: 7 से 8 बजे के मध्य इस प्रयोग को सम्पन्न करें, एक पात्र में स्वस्तिक बना कर उस पर 'शिव-शक्ति यंत्र' स्थापित करें, फिर सफेद पुष्प तथा बिल्व पत्र चढ़ाएं अगरबत्ती लगा दें। निम्न मंत्र का जप पांच दिन तक नित्य 51 बार करें-

मंत्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं शिव शिवायै ॐ नम:।।

OM SHREEM HREEM SHIV SHIVAYEI OM NAMAH

प्रयोग समाप्त होने के पश्चात यंत्र को शिव मन्दिर में चढ़ा दें।

यंत्र न्यौछावर- 240/-

संहारक प्रयोग

शत्रुओं का जीवन में होना एक सामान्य बात है क्योंकि जीवन है तो कोई न कोई शत्रु होगा ही, तो वहीं यह एक ऐसा दुख:द पक्ष भी है, जो व्यक्ति के जीवन से सुख-शांति को छीन लेता है और तनाव, दु:ख, समस्याएं प्रदान कर देता है, लेकिन जब शत्रु अपनी सीमाओं को तोड़कर आपके व्यक्तिगत जीवन के प्रत्येक पक्ष में हस्तक्षेप करने लगे-आर्थिक, पारिवारिक, भौतिक, व्यापारिक तो ऐसे शत्रुओं को पुन: उनकी ही सीमाओं में खड़ा कर देना ही ज्यादा उचित रहता है। आपके जीवन में भी यदि शत्रु कुछ इस कदर हावी हो गये हो कि आपके जीवन में बिखराव आ गया है, तो आप निम्न प्रयोग सम्पन्न करें-

किसी मिट्टी के पात्र में पीली सरसों भर कर पांच 'संहारिका' स्थापित कर दें, संहारिका का पूजन अष्टगंध, पीले पुष्प और अक्षत से करें। पीले आसन पर बैठकर निम्न मंत्र का जप 101 बार ग्यारह दिन तक करें-

मंत्र

।। ॐ क्लीं क्रीं ऐं शत्रुनाशय फट्।।

OM KLEEM KREEM AYEIM SAATRUNAASHAAY PHAT

प्रयोग सम्पन्न करने के पश्चात पांच संहारिका को पात्र सहित किसी निर्जन स्थान में गड्ढा खोदकर दबा दें या नदी में प्रवाहित करें।

न्यौछावर प्रति संहारिका-51/-

रुद्र प्रयोग

सभी प्रकार की परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाते हुए उनको अपने चातुर्य से अपने ही हित में सम्पन्न करवा लेना ही किसी भी सफल व्यक्ति की योग्यता ही होती है। प्राय: ऐसा देखा गया है कि यह गुण मात्र कुछ लोगों में होता है और यह भी निश्चित नहीं होता कि वे सफल होंगे भी या नहीं। लेकिन आप चाहें तो अवश्य अपने जीवन की स्थितियों को अपने अनुकूल बना सकते हैं।

किसी भी दिन प्रात: 5 से 6 बजे के मध्य किसी ताम्रपात्र में पुष्प की पंखुड़ी रखकर 'रौद्रा' स्थापित करें, रौद्रा का पूजन अष्टगंध, अक्षत और पुष्प से करें। घी का दीपक लगा दें। निम्न मंत्र का 33 बार उच्चारण सात दिन तक करें–

मंत्र

।। ॐ रं रुद्राय भद्राय ॐ।।

OM RAM RUDRAAY BHADRAY OM

प्रयोग समाप्त होने पर 'रौद्रा' को नदी में प्रवाहित कर दें। न्यौछावर–150/-

भैरव प्रयोग

श्रेष्ठता, उच्चता, प्रखरता और नेतृत्व करने की भावना के साथ अपने कार्य में अग्रसर होना, किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व में ये गुण अवश्य होने ही चाहिए। बाह्य रूप से तो वह शांत, कोमल और स्निग्ध प्रतीत हो लेकिन उपरोक्त गुणों की प्रखरता भी उसमें उपस्थित हो, इन सबके साथ एक अन्य गुण जो तीव्रता है, वह भी उसके पास अवश्य होना चाहिए और कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में इन गुणों का समावेश कर सकता है, इस भैरव प्रयोग को सम्पन्न करके।

किसी भी शनिवार को काले रंग के वस्त्र पर 'भैरव गुटिका' को स्थापित कर, तेल का दीपक लगा दें। 'भैरव गुटिका' के समक्ष क्रोधमुद्रा में निम्न मंत्र का जप सात दिन तक नित्य 31 बार करें–

मंत्र

।। ॐ भं भैरवाय तेजस्कराय फट्।।

OM BHAM BHAIRAWAAY TEJASKARAAY PHAT

सात दिन पश्चात भैरव गुटिका को धारण कर लें तथा सवा माह पश्चात गुटिका को किसी नदी में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर–150/-

अघोर गौरा चेटक प्रयोग

जीवन का एक पक्ष प्रेम भी होता है, जिसमें अनुकूलता की आशा प्रत्येक व्यक्ति को अपेक्षित होती है।

लेकिन इस पक्ष में यदि तनाव, क्रोध, संशय जैसे तत्व उपस्थित हो जाएं तो व्यक्ति का पारिवारिक जीवन नष्ट ही हो जाता है।

यदि पति, पत्नी या प्रेमी-प्रेमिका के मध्य परस्पर खिंचाव आरम्भ हो गया है, तो यह प्रयोग आपके सम्बन्ध को स्थिरता प्रदान करने में सहायक होगा। यह प्रयोग उनके लिए भी अनुकल है जो मनोनुकूल जीवन साथी प्राप्त करना चाहते हैं।

किसी भी सोमवार को लाल रंग के वस्त्र में 'अघोर गौरा चेटक' स्थापित करें। उसका पूजन अष्ट गंध, अक्षत, पुष्प से करें। निम्न मंत्र ग्यारह दिन तक नित्य इक्कीस बार जप करें–

मंत्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं सौं ॐ फट्।।

OM HREEM HREEM SOUM OM PHAT

प्रयोग समाप्त होने पर चेटक को उसी वस्त्र में बांध कर किसी निर्जन स्थान में डाल दें।

न्यौछावर- 150/
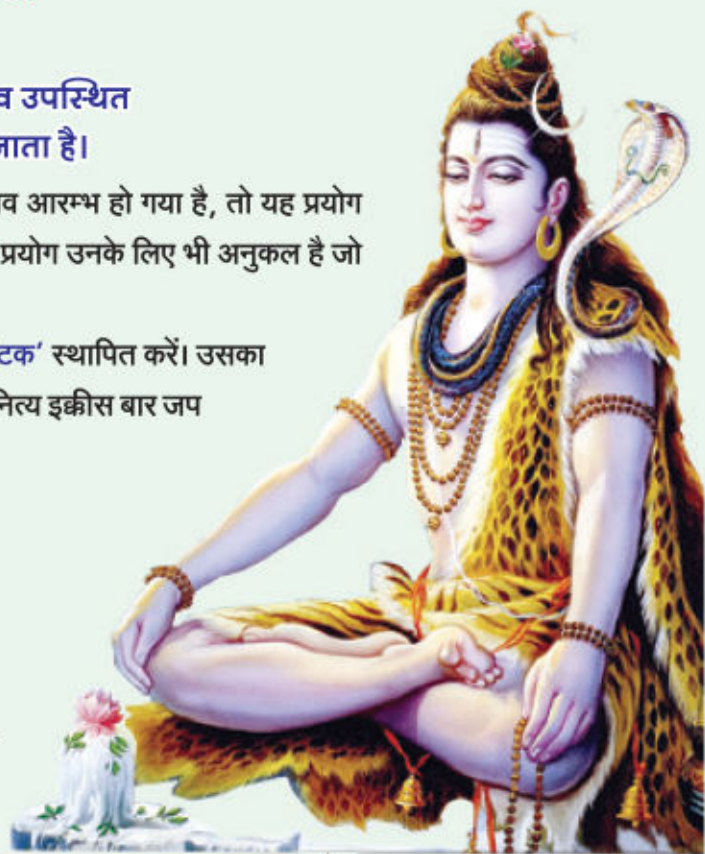
एकमुखी मधुरूपेण रुद्राक्ष प्रयोग

मनोकामना पूर्ति हेतु यह प्रयोग एक श्रेष्ठ प्रयोग है,जिसे व्यक्ति कभी भी सम्पन्न कर सकता है।

एकमुखी मधुरुपेण रुद्राक्ष स्वयं भगवान शिव को अत्यंत प्रिय होने के साथ-साथ कहीं-कहीं यह स्वयं ही शिव स्वरूप मान्य है। सोमवार को साधक इसे अपने दाहिने हाथ में लेकर अपनी मनोकामना ध्यान में रखते हुए 33 बार निम्न मंत्र का उच्चारण कर इसे किसी भी शिव मंदिर में चढ़ा दें–

मंत्र

।। ॐ दिव्याय देवत्वाय रुद्र स्वरूपाय रं ॐ।।

OM DIVYAAY DEVATWAAY RUDRA SWAROOPAAY RAM OM

आपकी कामना आपके अनुकूल ही पूर्ण होगी, प्रयोग के समय मन में भगवान शिव का ध्यान करें।

न्यौछावर- 150/-

हर्बल फेस पैक बनाइये

सदियों से देश-विदेश में गृहणियाँ सौन्दर्य प्रसाधन के रूप में जड़ी-बूटियों तथा घरेलू सामग्रियों का प्रयोग करती आई हैं। आज के फैशनेबल समाज में हर्बल कॉस्मेटिक का बहुत बोलबाला है, क्योंकि हर्बल प्रसाधन त्वचा को न केवल खूबसूरत बनाते हैं, बल्कि पौष्टिकता भी प्रदान करते हैं। आजकल ब्यूटी पार्लर में हर कोई हर्बल ट्रीटमेंट की मांग करता है, इससे यह पता चलता है कि, हर्बल फेस पैक या हर्बल शैम्पू आदि का प्रयोग करते समय सम्भवत: उनके मन में अपनी त्वचा की सुरक्षा के प्रति जागरुकता रहती है।

हमारी प्रकृति कुदरत के अनमोल हरे-भरे खजानों से भरी पड़ी है। यही प्राकृतिक खजाना हर्बल कहलाता है। साधारण तौर पर प्रकृति-जन्य किसी भी वस्तु के प्रयोग से हानि नहीं होती, परन्तु फिर भी इसके प्रयोग में सावधानी बरतनी आवश्यक होती है। सही मात्रा व सही समय का ध्यान ही सबसे महत्वपूर्ण होता है। हर्बल कॉस्मेटिक के अन्तर्गत वे प्रसाधन आते हैं, जो फल-फूल, पत्तियों या जड़ी-बूटियों के माध्यम से सौन्दर्य वृद्धि और सौन्दर्य बरकरार रखने के लिए अपनाए जाते हैं।

आप यकीन मानिये, त्वचा तथा बालों के स्वास्थ्य व सौन्दर्य के लिए दरअसल हमारा रसोई घर ही हर्बल ब्यूटी पॉर्लर है। इसमें अनन्त सम्भावनाएँ आप पायेंगे, जरूरत है बस सही जानकारी की।

कैसे बनायें?–यह जानकारी यहाँ दी जा रही है।

असमय मुरझाई त्वचा के लिए सर्वोत्तम प्रोटीन फेस पैक

सामग्री–दो बड़े चम्मच सोयाबीन का आटा, आधा कप दही, एक बड़ा चम्मच शहद।

विधि–तीनों चीजों को भली प्रकार मिला लें, इस लेप को चेहरे व गर्दन पर पन्द्रह से बीस मिनट तक लगा रहने दें, बाद में गुनगुने पानी से धो डालें। अंत में एक बार ठण्डे पानी से चेहरा धोयें। यह पैक त्वचा को मुलायम बनाता है तथा ढीली व लटकी त्वचा में कसाव लाता है। सामग्री में निहित विटामिन 'बी' से त्वचा में विशेष निखार आता है।

फीकी निस्तेज त्वचा को निखारने के लिए यीष्ट फेस पैक

सामग्री–एक चाय का चम्मर ब्रूअर्स यीष्ट पाउडर, एक चाय का चम्मच हल्का गर्म मिनरल वाटर, एक चाय का चम्मच खुराबानी का तेल।

विधि–तीनों सामग्रियों को अच्छी तरह मिलाकर पेस्ट बना लें, पेस्ट अधिक गाड़ा लगे, तो थोड़ा पानी और मिला लें। इस लेप को आँखों के आस-पास की जगह छोड़कर पूरे चेहरे पर लगायें। तीस मिनट बाद हल्के गर्म पानी से मुंह धो लें, अंत में बर्फ का टुकड़ा मलें।

यह फेस पैक चेहरे के रोम-रोम की सफाई करता है। इसलिए पार्टी-विवाह में जाने से एक दिन पूर्व इसका उपयोग करें। इस फेस पैक का प्रथम काम है, रक्त सञ्चार बढ़ा कर त्वचा को निखारना। इसके प्रयोग से रोम छिद्र खुलते हैं। नियमित प्रयोग से चेहरा तरोताजा रहता है।

काली, सांवली त्वचा को निखारने के लिए ओटमील फेस पैक

सामग्री–डेढ़ चम्मच जई, एक चम्मच पानी व थोड़ा सा दूध।

विधि–जई के पाउडर को पानी व दूध मिलाकर चेहरे पर लगायें। सूखने पर चेहरा गुनगुने पानी से धो लें, यह त्वचा को मुलायम, कांतिवान व गोरा बनाता है। एक दिन के अन्तराल पर इसका नियमित प्रयोग करें।

चेहरे से कील-मुहासों को हटाने के लिए हर्बल उपचार

1. सामग्री–दो चम्मच पुदीने का रस, एक चम्मच नींबू का रस।

विधि–दोनों को मिला कर चेहरे पर लगायें, सूख जाने के बाद धो लें, यह प्रयोग प्रतिदिन करें।

2. खरबूजे का टुकड़ा पीस कर चेहरे पर लगायें करीब 20 मिनट बाद चेहरा धो लें, नियमित कुछ दिन इस प्रयोग को करने से न मुंहासे रहेंगे, न ही उसका कोई दाग-धब्बा।

चेहरे के मस्सों को दूर करने के लिए हर्बल उपचार

सामग्री–एक गेंदे का फूल।

विधि–ताजा गेंदे के फूल को पीस कर उसका रस निकाल लें, रस को मस्सों पर लगायें, सूखने पर धो लें, मस्से खुद गिर जायेंगे।

फेस पैक बनाना एक कला है। आपने स्वयं ही देखा होगा, कि पैक बनाते समय त्वचा को ध्यान में रखते हुए आप अपने रसोई घर से कितने ही लाभकारी सौन्दर्य प्रसाधन स्वयं तैयार कर अपने सौन्दर्य की देखभाल कर सकती हैं। यदि उचित मात्रा व विधि का ज्ञान हो, तो स्वयं अपने हाथ से प्रसाधन तैयार कर सकती हैं। ऐसा प्रसाधन विशुद्ध भी होता है व एक नया प्रभाव भी देता है। शुरू से ही आप अपने व्यस्त जीवन में से कुछ क्षण निकालकर सौन्दर्य की देखभाल करें, तो कोई संदेह नहीं, कि आप सौन्दर्य में वृद्धि न कर पायें, आने वाले समय में झुर्रियां आपके पास नहीं फटकेंगी। आपको फिर रसोई घर जैसे हर्बल ब्यूटी पॉर्लर को छोड़कर किसी ब्यूटी पॉर्लर में जाने की आवश्यकता ही महसूस न होगी।

(आप अपने वैद्य की सलाह लेकर अपनी त्वचा के अनुरूप ही इनका उपयोग करें।)

मयूरेश स्तोत्र

चिन्ता एवं रोग निवारण हेतु दुर्लभ स्तोत्रः

शास्त्रों में कहा गया है, कि भगवान गणपति समस्त विघ्नों का नाश करने वाले, कार्यों में सिद्धि देने वाले तथा जीवन में पूर्णता देने वाले हैं, इसीलिए 'कलौ चण्डी विनायकौ' कहा गया है, अर्थात् कलियुग में दुर्गा एवं गणेश ही पूर्ण सफलता देने में सहायक हैं।

विश्व के समस्त साधक इस बात पर एक मत हैं, कि प्रत्येक कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए सर्वप्रथम गणपति का ध्यान या उनकी पूजा आवश्यक है, देवताओं ने भी गणपति की पूजा को सर्वप्रथम स्वीकार किया है, यही नहीं अपितु भगवान शिव ने भी कार्य की सफलता के लिए सबसे पहले गणपति की साधना को आवश्यक बताया है।

जो सुमिरत सिद्धि होई गन नायक करिवर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन।।

यों तो गणपति से सम्बन्धित सैकड़ों, हजारों स्तोत्र हैं, परन्तु उनमें 'मयूरेश-स्तोत्र' का महत्व सर्वोपरि है, यह स्तोत्र अपने आप में चैतन्य और मन्त्रसिद्ध है, अतः इसका पाठ ही पूर्ण सफलता देने में सहायक है।

घर में आने वाली बाधाओं, बच्चों के रोग निवारण, घर में सुख-शांति, उन्नति तथा प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए 'मयूरेश स्तोत्र' को सर्वश्रेष्ठ माना गया है, इन्द्र ने स्वयं इस स्तोत्र द्वारा गणपति को प्रसन्न कर विघ्नों पर विजय प्राप्त की थी।

इस स्तोत्र का पाठ पुरुष और स्त्री समान रूप से कर सकते हैं, हमारे जीवन में प्रत्येक दिन का प्रारम्भ मयूरेश स्तोत्र से होना चाहिए।

पूजा विधि

सर्वप्रथम साधक को स्नान कर आसन पर बैठ जाना चाहिए, आसन ऊनी या सूती वस्त्र का हो सकता है; साधक को पूर्व की तरफ मुंह करके बैठना चाहिए, अपने सामने गणपति की मूर्ति या तस्वीर स्थापित कर देनी चाहिए, इस प्रकार की पूजा या साधना किसी भी बुधवार से प्रारम्भ की जा सकती है।

सबसे पहले साधक या साधिका को भक्तिपूर्वक गणपति को प्रणाम करना चाहिए और निम्न ध्यान करना चाहिए—

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्ष्यो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशै तानि नामानि य पठेच्छ्रणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बर धरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजं।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषा मिन्दीवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।
अभीस्पितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।
ऋद्धि, सिद्धि सहितं महागणपतिं
आवाहयामि स्थापयामि नमः।

किसी पात्र में पुष्प का आसन देकर भगवान गणपति के प्रतीक रूप में एक सुपारी की स्थापना करें।

स्नान

भगवान गणपति को जल से स्नान करायें—

ॐ वरुणस्योस्तम्भनमसि वरुणस्यस्कुम्भ
सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य
ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमासीत्।

तीन बार आचमनी से पुनः जल चढ़ायें।

तत्रादौ एतोऽस्मानं पंचामृत स्नानं कुर्यात्।

पंचामृत स्नान

दूध, दही, घी, शक्कर, शहद मिलाकर पंचामृत बनाएं तथा उससे स्नान कराएं—

तत्रादौ पुनः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि नमः।

स्नान

शुद्ध जल से स्नान कराएं।

तिलक – कुंकुम से तिलक करें।

उद्भावेण नमः कुंकुमेन तिलकं कृत्वा।

अक्षत – इसके बाद अक्षत चढ़ायें।

अक्षतान्ते पुष्पाणि समर्पयामि नमः।

पुष्प– अब दोनों हाथों में खुले पुष्प लेकर अर्पित करें–

पुष्पाणि समर्पयामि नमः,
पुष्पान्ते दीपं दर्शयामि नमः।

वस्त्र (मौली) चढ़ायें, यज्ञोपवीत चढ़ायें,
अष्ट गंध एवं दुर्वादल से पूजन करें,
धूप दीप दिखायें, नैवेद्य में लड्डू का भोग लगायें
गणपति पूजा में तुलसी पत्र का प्रयोग सर्वथा निषिद्ध है।

गणपति की पूर्ण पूजा कर साधक को चाहिए कि वह 'मयूरेश स्तोत्र' का पाठ करे यह स्तोत्र समस्त प्रकार की चिन्ताओं तथा परेशानियों को दूर करने वाला, समस्त प्रकार के भौतिक सुख, आर्थिक व्यापारिक उन्नति, व्यापार में लाभ, राज्य कार्य में विजय तथा समस्त उपद्रवों का नाश करने में पूर्ण समर्थ है।

स्त्री या बालक भी स्तोत्र का पाठ कर सकते हैं, किसी भी वर्ण या जाति का व्यक्ति इस पाठ को श्रद्धापूर्वक कर सकता है, स्त्रियों को चाहिए कि वह रजस्वला काल में गणपति पूजन न करे, इन दिनों स्त्री पूजन कार्य या मांगलिक कार्य में अशुद्ध मानी जाती है।

गणपति की पूजा में सुगन्धित द्रव्य तथा घी का दीपक विशेष महत्वपूर्ण है, साधक को चाहिए कि वह नित्य अपने पूजा कार्य में इस स्तोत्र को सम्मिलित कर ले तथा सर्वप्रथम गणपति पूजन एवं मयूरेश स्तोत्र का पाठ करे गायत्री स्मरण भी इसके बाद किया जाना चाहिए।

इसमें कोई दो राय नहीं कि यह स्तोत्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण त्वरित सफलतादायक, विघ्नों, बाधाओं और कठिनाइयों को दूर करने तथा समस्त प्रकार की भौतिक सुविधाओं को प्रदान करने में समर्थ एवं सर्वश्रेष्ठ है।

इसका नित्य एक पाठ करने से सभी विघ्न एवं चिन्ताओं का शमन होता है। यह रोग निवारण में सहायक है अतः जीवन के हर क्षेत्र में भगवान गणपति की कृपा से इस स्तोत्र का पाठ कर सफलता पाई जा सकती है।

मयूरेशस्तोत्रम्

चिन्ता एवं रोग निवारण के

ब्रह्मोवाच

पुराण पुरुषं देवं नाना क्रीडाकरं मुदा।
मायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम्।।

परात्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम्।
गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम्।।

सृजन्तं पालयन्तं च संहयन्तं निजेच्छया।
सर्वविघ्नहरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम्।।

नानादैत्यनिहन्तारं नानारूपाणि विभ्रतम्।
नानायुधधरं भ्रत्वा मयूरेशं नमाम्यहम्।।

इन्द्रादिदेवतावृन्देरभिष्टुतमहर्निशम् ।
सदसद्धयक्तमव्यक्तं मयूरेशं नमाम्यहम्।
सर्वशक्तिमयं देवं सर्वरूपधरे विभुम्।
सर्वविद्याप्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम्।।

पार्वतीनन्दनं शम्भोरानन्दपरिवर्धनम्।
भक्तानंदकरं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम्।।

मुनिध्येयं मुनिनुतं मुनिकामप्रपूरकम्।
समष्टिव्यष्टिरूप त्वां मयूरेशं नमाम्यहम्।
सर्वाज्ञाननिहन्तारं सर्वज्ञानकरं शुचिम्।
सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम्।।

अनेककोटिब्रह्माण्डनायकं जगदीश्वरम्।
अनन्त विभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम्।।

मयूरेश उवाच

इदं ब्रह्मकरं स्तोत्रं सर्वपापप्रनाशनम्।
सर्वकामप्रदं नृणां सर्वोपद्रवनाशनम्।।
काराप्रह गतानां च मोचनं दिनसप्तकात्।
आधिव्याधिहरं चैव भुक्तिमुक्तिप्रदं शुभम्।।

अन्तःकरण की शुद्धि

महर्षियों ने हमारे कल्याण के लिए हमारे अन्तःकरण की शुद्धि के लिए अनेकानेक मार्ग बताये हैं। उन मार्गों में से ही योग द्वारा अपने मन को कैसे नियंत्रित किया जाय या किन आसनों द्वारा हम अपने शरीर को शुद्ध करके अपने ऊपर नियंत्रण कर सकते हैं। उन आसनों का वर्णन भी किया है जो कि हमारे लिए साधना की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं उनसे हमें आसन सिद्धि भी प्राप्त होती है और हमारा अन्तःकरण भी शुद्ध होता है, एकाग्रता आती है एवं प्राणतत्त्व ऊर्ध्वगामी होता है। शरीर अनेक रोगों से मुक्त होता है। प्रतिदिन प्राणायाम से हमारे फेफड़ों को शुद्ध वायु मिलती है और गुर्दे अपना कार्य और भी कुशलता से करने लगते हैं।

प्राणायाम से जहाँ हम भौतिकता में रोगों पर नियंत्रण पा सकते हैं, वहीं आध्यात्मिक रूप से आसन सिद्धि एवं साधनाओं में सफलता का प्रतिशत बढ़ जाता है।

हमारे ऋषि-मुनियों ने प्राणायाम के रूप में हमें एक ऐसा तीक्ष्ण शस्त्र दे दिया है जिसके द्वारा धैर्यपूर्वक यदि हम अभ्यास करें तो न जाने कितनी बीमारियों से हम छुटकारा पा सकते हैं जिनका निवारण किसी भी अन्य चिकित्सा पद्धति से सम्भव नहीं है। यहाँ हम कुछ आसनों का वर्णन कर रहे हैं जिनका अभ्यास कर आप अपनी आन्तरिक शुद्धि कर सकते हैं और साधना में इन आसनों का अभ्यास कर अपनी एकाग्रता ला सकते हैं और गुरुदेव की कृपा प्राप्त कर सकते हैं।

प्राणायाम एवं आसन कुण्डलिनी जागरण की दिशा में अत्यन्त सहायक है क्योंकि जब तक शरीर स्वस्थ एवं विकार रहित नहीं होगा तब तक ध्यान में सफलता कैसे प्राप्त होगी। यह आसन कुण्डलिनी जागरण साधना की ओर बढने में सहायक हैं। इससे अन्नमय कोष पर भी नियंत्रण होने लगता है। साधारण मनुष्य अन्नमय कोष में ही जीता है। प्राणायाम एवं आसनों का अभ्यास आपके तन को तन्दुरुस्त, मन को प्रसन्न एवं बुद्धि को तीक्ष्णता प्रदान करेगा। आपके अन्दर कितनी सामर्थ्य भरी है, इसका ज्ञान धीरे-धीरे होने लगेगा। इसीलिए तो ऋषियों ने इनका प्रतिपादन किया है अतः आप सभी इसका लाभ उठायें और साधना के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ें।

आवश्यक निर्देश–

1. साधक भोजन के बाद प्राणायाम या आसन न करें।
2. शौच-स्नानादि से निवृत्त होकर प्रातःकाल ही आसन करना चाहिए।
3. श्वास मुंह से न लेकर नाक से लेना चाहिए।
4. आसन करते वक्त बैठने हेतु कम्बल का उपयोग करें।
5. आसन करते वक्त तंग एवं कसे वस्त्र न पहनें।
6. साधिकाएँ गर्भावस्था में एवं रजस्वला समय में आसन न करें।
7. शरीर के साथ जबरदस्ती न करें, धैर्यपूर्वक आसन करें।
8. किसी विशेष बीमारी होने की दशा में बिना चिकित्सक की सलाह लिए आसन न करें।

प्राणायाम में प्रयुक्त होने वाले कुछ शब्द

1. रेचक का अर्थ है श्वास छोड़ना।
2. पूरक का अर्थ है श्वास भीतर लेना।
3. कुम्भक का अर्थ है श्वास को भीतर

पद्मासन के अभ्यास से जो लाभ मिलते हैं वे सभी सिद्धासन के अभ्यास से भी मिलते हैं।

ब्रह्मचर्य पालन में यह आसन विशेष रूप से सहायक है। कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत करने के लिए यह आसन प्रथम सोपान है। यह सिद्ध होने पर साधना में सफलता मिलने लगती है।

या बाहर रोक देना। श्वास लेकर भीतर रोक लेने की क्रिया को आन्तर या आभ्यान्तर कुम्भक कहते हैं। श्वास को बाहर निकालकर फिर वापस न लेकर श्वास बाहर ही रोक देने की क्रिया को बहिर्कुम्भक कहते हैं।

1. पद्मासन

बिछे हुए आसन के ऊपर स्वस्थ होकर बैठें। रेचक करते-करते दाहिने पैर को मोड़कर बाईं जंघा पर रखें। बायें पैर को मोड़कर दाहिनी जंघा पर रखें। अथवा पहले बायाँ पैर और बाद में दाहिना पैर भी रख सकते हैं। पैर के तलुवे ऊपर की ओर और एड़ी नाभि के नीचे रहे। घुटने जमीन से लगे रहें। सिर, गरदन, छाती, मेरुदंड आदि पूरा भाग सीधा और तना हुआ रहे। दोनों हाथ दोनों घुटनों के ऊपर ज्ञानमुद्रा में रहे।

प्रारम्भ में दोनों पैर जंघाओं के ऊपर न रख सकें तो एक पैर ही रखें। पैर में झनझनाहट हो तो भी निराश न होकर अभ्यास चालू रखें। हर तीसरे दिन समय की अवधि 1 मिनट बढ़ाकर कम से कम 45 मिनट तक पहुँचना चाहिए। दृष्टि, नासाग्र अथवा भ्रूमध्य में स्थिर करें। शरीर सीधा और स्थिर रखें।

भावना करें कि मूलाधार चक्र में छुपी हुई शक्ति, निम्न केन्द्र में स्थित चेतना तेज, ओज के रूप में बदलकर ऊपर की ओर आ रही है। समग्र शरीर इन धाराओं से सुगन्धित हो रहा है।

यह आसन श्रेष्ठ योगियों में बहुत प्रचलित है। इस आसन का अभ्यास होने पर मूलबन्ध स्वत: लग जाता है। फेफड़ों में श्वास की क्रिया नियमित रीति से होती है और मुख पर तेजस्विता आती है। चित्त में आनन्द-उल्लास आता है। इससे कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत होने लगती है।

2. सिद्धासन

इस आसन में बायें पैर की एड़ी को गुदा और जननेन्द्रिय के बीच रखें। दाहिने पैर की एड़ी को जननेन्द्रिय के ऊपर इस प्रकार रखें जिससे जननेन्द्रिय और अण्डकोष के ऊपर दबाव न पड़े। पैरों का क्रम बदल भी सकते हैं। दोनों हाथों को घुटनों के ऊपर ज्ञानमुद्रा में रखें। आँखें खुली अथवा बन्द रखें। श्वास-प्रश्वास स्वाभाविक गति से चलने दें। आज्ञाचक्र में ध्यान केन्द्रित करें।

यदि साधक इस आसन का अभ्यास मौन रहकर करे तो नाड़ियों का शोधन होता है। सुषुम्ना नाड़ी स्वभावत: सीधी रहती है और प्राणतत्त्व सहज ही ऊर्ध्व गति को प्राप्त होने लगता है। इस आसन से हृदय को बल मिलता है। पाचन क्रिया नियमित हो जाती है। साधकों, संन्यासियों के लिए यह आसन बहुत कल्याणप्रद है। पद्मासन के अभ्यास से जो लाभ मिलते हैं वे सभी सिद्धासन के अभ्यास से भी मिलते हैं। ब्रह्मचर्य पालन में यह आसन विशेष रूप से सहायक है। कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत करने के लिए यह आसन प्रथम सोपान है। यह सिद्ध होने पर साधना में सफलता मिलने लगती है। **जहाँ ये दोनों आसन रोग दूर करने में सहायक हैं, वहीं चेहरे और त्वचा को स्वस्थ रखकर आन्तरिक शरीर को भी शुद्ध करते हैं, तनाव दूर करते हैं एवं एकाग्रता प्राप्त होती है। साधनाओं में तन की शुद्धि से अधिक मन की शुद्धि आवश्यक है। इन आसनों द्वारा अन्त:करण को शुद्ध किया जा सकता है।**

अत: आप इनका अभ्यास अवश्य करें और देखें कि फिर आपको साधना करते वक्त कितने आनन्द का अनुभव होता है।

क्रमश:......

Lord Shiv's Boons

Bhagwantam Mahadevam Shivlingam Prapujayet.
Lok Prasavita Suryastchihnam Prasavadbhavet

One who worships Lord Shiva in the form of the divine Shivaling attainsto greatness and fame like the sun in thi world !

Lord Shiva is one deity who never makes any delay in fulfilling the wishes of his devotees. It is said that one who worships Lord Shiva with devotion and true feelings can attain any divine boon from the kind Lord. This is the reason why not just the gods but even the demons and humans have worshipped Lord Shiva over the ages and gained infinite boons from him.

The best way of worshipping Lord Shiva is worship of his icon-the *Shivalng*. *Shivaling* is said to be a symbol or epitome of the universe. By worshipping a *Shivaling* one worships all the divine forces of the universe. One can worship Lord Shiva any day but Monday and Thussday are best; and then there are special days like *Shiva Ratri* on which special worship of Lord Shiva peformed.

By Worshipping it one could attain to several boons like gain of wealth, riddance from diseases, a good life partner, wisdom and knowlege and even *Siddhis* or divine powers. Presented here is a powerful ritual which should be surely tried by each *Sadhak* for fulfilment of his or her wish.

This *Sadhana* can be tried on any Monday. It should be tried *Brahma Muhurat* (4 am to 6 am). Have a bath and wear white clothes. Cover yourself with *Guru Chadar (a special protective shawl).*

Sit on a white mat facing the East. Cover a wooden seat with white cloth. On it draw a *Swastik.* On it place a copper plate. In the plate make a mound of rice grains. In the centre of the mound place the *Narmadeshwar Shivling.* Offer rice grains, vermilion and a sweet made from milk on the *Shivaling.*

Pray to the Guru and chant one round of Guru Mantra.

Next chant the following Mantra and pray to Lord Shiva-

Om Pramattam Shakti Sanyuktam
Baannnaaakhyam Cha Mahaaprabham.
Kaam Baannaanvitam Devam Sansaar
Dahan Shamam. Shringaaraadi
Rasollaasam
Baannaakhyam Parameshwaram. Evam
Dhyaatvaa Baann Ling Yajaami Paramam
Shivam.

"O Lord Shiva I pray to you for you are capable to bewtowing valour, peace and happiness in life and family, success in all ventures. O Lord, who enchants the entire world with his powers, who is an epitome of divine beauty, who banishes all problems and who is divine consort of *Goddess Parvati,* I bow devotedly in your holy feet ! Please bless me and protect me from all dangers and perils."

Then take a *Rudraksh rosary* and chant eleven rounds of the given Mantra.

Om Har Maheshwar Shoolpaanni Pinaak Dhrik
Pashupati Shiv Mahaadev
Eashaan Namah Shivaay.

Then chanting the Mantra 108 times offer 108 *Bilva* (Bel or woodapple) leaves on the *Shivling.* After this light a holy fire. Make oblations in the fire 108 times. Oblations are made with *Bilva* leaves for fulfilment of some wish; black pepper seeds for riddance from fear; honey for a good life partner and early marriage; seeds of lotus *(Kamalgatta seeds)* for gain of wealth; and rose petals for success in different ventures. After Sadhana place the Bannling in the place of worship at home.

Sadhana Articles-450/-, Kamalgatta seeds-250-

MYSTERY OF YANTRAS

Mantra,. Tantra and Yantra are inseparable constituents of the field of Sadhanas. Mantra is a powerful incantation which helps one link one's sub-conscience with the divine and thus obtain its help. Tantra is a special form of Mantra-usage in which the Sadhana process is speeded up and made a thousand fold more powerful. What then is a Yantra ?

These are mystical engravings generally on copper or silver or gold which act ike receivers and transmitters. They reflect the Mantra sound produced by a Sadhak having first amplified it subtly. The sound then can travel infinite distance to reach the God, Goddess or divine force who is being suplicated. The God or Goddess may then transmit its blessings and these are caught by the Yantra, magnified and directed towards the Sadhak. At the sub-conscious level the blessings are received by the Sadhak and he or she benefits from them.

Several Yantras are also drawn with ink on paper, but whatever the background the true worth of these esoteric inscriptions is only when they have been consecrated and Mantra-energised by a Guru who has mastered all Sadhanas.

Strange geometrical figures, numbers, syllables appear on Yantras. One may be unaware of their significance, yet their proper use brings forth amazing results. One may not know how actually a car runs and still drive it, similarly one could use Yantras without knowing how they are made. Only thing is that one must know how they are to be used.

Following are some really efficacious Yantras which have proved their worth over the ages and which anybody could use to derive amazing benefits.

1. EASING TENSIONS

The Beesaa Yantra is most effective for this purpose. If some problem is weighing on your mind just draw the following Beesa Yantra on a paper with vermilion.

On this place a **Beesa Yantra Mudrika** (बीसा यंत्र मुद्रिका). Mentally pray for riddance from the tensions. Then close your eyes and chant Om (ॐ) for ten minutes. After that put the ring on any finger. Very soon your worries shall disappear. After a month drop the ring in a river.

Sadhana Articles : 150/-

2. BOOST YOUR SALES

On any **Wednesday** draw the following Yantra on a paper with vermilion. Light incense and on the inscription place ***Vyaapaar Vriddhi Yantra*** (व्यापार वृद्धि यंत्र). and chant the below mention Mantra for 15 minutes.

Om Hreem Vyapaar Siddhim Dehi Dehi Namah.

Place this in your shop. The Yantra's energy shall draw customers in crowds to your shop.

73	80	2	7
6	3	77	76
79	74	8	1
5	7	74	57

Sadhana Articles : 240/-

3. SUCCESS IN A VENTURE

On a **Thursday** draw the following Yantra with turmeric on a paper.

ॐभु:	ॐभुव:	ॐस्व:
ॐमह:	ॐजन:	ॐतप:
	ॐसत्यम	

On it place a ***Sarva Kaarya Siddhi Yantra*** (सर्वकार्य सिद्धि यंत्र). Light incense and speak out your wish and chant 5 rounds of this Mantra with white Hakeek rosary for three days.

Om Hreem Sarva Karya Siddhim Hreem Om.

Later offer sweets and distribute to children. After 21 days drop the Yantra in a river or pond.

Sadhana Articles : 450/-

भगवती जगदम्बा का सर्वाधिक सशक्त स्वरूप ललिताम्बा है। यह जगदम्बा का विराट स्वरूप है। वे ही अलग-अलग रूपों में अलग-अलग माध्यमों से हमारे जीवन का कल्याण करने वाली हैं और एक माँ के समान हमारे जीवन के सुख-दुख में सहायक हैं। माँ कोई भी कार्य क्यों न कर रही हो, कितनी ही व्यस्त क्यों न हो उसका पूरा ध्यान अपने बच्चों पर लगा ही रहता है। वह अपने बच्चे की हर भाषा पहचानती है। देवी ललिताम्बा महाकाली का ही एक स्वरूप है। महाकाली के तेजस्वी व सौन्दर्यमय स्वरूप का नाम ही ललिता है। यह हमारे जीवन में सुख, सौभाग्य, धन-धान्य, यश-प्रतिष्ठा देने में सहायक है एवं इस दीक्षा को ग्रहण करने से साधक को आध्यात्मिक क्षेत्र में दिव्य अनुभूतियाँ होने लगती हैं।

उपहारस्वरूप प्राप्त करें

शक्तिपात युक्त दीक्षा

ललिताम्बा दीक्षा

मंत्र

ॐ श्री ललितायै ह्रीं ऐं फट् ।

योजना केवल 6, 7, 27 एवं 28 फरवरी 2021 इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- ' नारायण मंत्र साधना विज्ञान, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 64 पर देखें।

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमालीजी

गुरु-शिष्य मिलन समारोह एवं दीक्षा कार्यक्रम

वाराणसी में

28 फरवरी 2021

के.डी.आर. (कुबेर वाटिका), डॉ. कुसुम चंद्रा के पास,
धूप चंडि नाटी इमली, वाराणसी

आयोजक-9199409003, 9415222837, 8210257911, 8318274054, 9450734919, 9454618123, 9839172591, 9415989472, 9415622157

गुरु-शिष्य मिलन समारोह एवं दीक्षा कार्यक्रम

बैंगलोर में

07 मार्च 2021

पता

Canary Sapphire Hotel, S.C. Road, Opp, annama Devi Temple, Gandhi Nagar, Banglore

आयोजक-8210257911, 9199409003, 8660106621, 9632172538, 8310208987, 8660271419

सभी शिष्य दीक्षा प्रोग्राम में आने से पूर्व आयोजकों से सम्पर्क कर समय लेकर ही आयें

अहं ब्रह्मास्मि
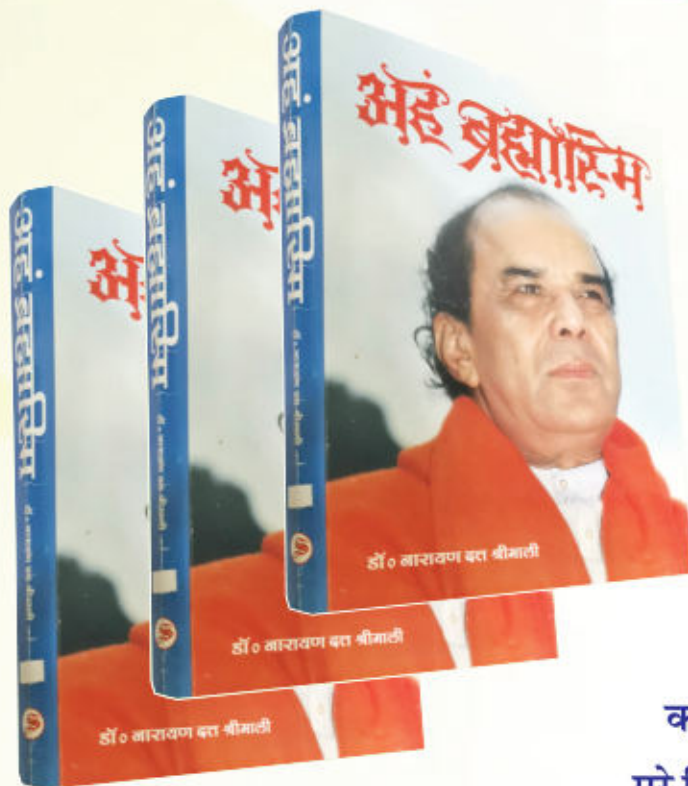
न्यौछावर- 330/-

मनुष्य और पशु में इतना ही अंतर है कि पशु अपने आपको समझने का भाव नहीं रखता, जबकि मनुष्य सद्गुरु की सहायता से पशुत्व से ऊपर उठकर आत्मा की गहराई तक उतर कर, उस विराट सत्ता के दर्शन कर सकता है जिसे ब्रह्म कहा गया है। उस स्थिति तक पहुंच सकता है जिसे 'पूर्ण मदः पूर्ण मिदं' कहा गया है, उस स्थिति से एकाकार हो सकता है, जिसे 'ब्रह्माण्ड' कहा गया है।

पूरे विश्व में इतनी सहज गति से, इतने जटिल रहस्य को सरल भाषा में स्पष्ट करने वाला यह पहला ग्रंथ है जो संत प्रवर योगीराज तत्ववेत्ता सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी की सशक्त लेखनी से उभर कर हमारे सामने प्रस्तुत है 'अहं ब्रह्मास्मि' ग्रन्थ के रूप में।

एक जीवन्त, सशक्त कृति, पशुत्व से ऊपर उठकर मनुष्यत्व तक पहुंचने का सरल सोपान, मल-मूत्र से भरी देह को ब्रह्ममय बना देने की श्रेष्ठ क्रिया, एक अनमोल ग्रन्थ।

यह ग्रन्थ अभी सीमित संख्या में ही प्रिंट हुआ है अतः शीघ्र प्राप्त करने के लिए आप 330 + 70 (डाक खर्च) = 400/- (चार सौ रुपये मात्र) 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' जोधपुर के निम्नलिखित खाते में जमा करा दें और वाट्स अप नं. 8890543002 पर पैसे जमा कराने की रसीद एवं अपना नाम व पूरा पता, पिन कोड नं. के साथ शीघ्र भेजें जिससे आप यह अनमोल ग्रन्थ शीघ्र प्राप्त कर सकें।

खाते का विवरण

- खाते का नाम : नारायण मंत्र साधना विज्ञान
- बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
- खाता संख्या : 31469672061
- IFSC CODE : SBIN0000659

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 January, 2021
Posting Date : 21-22 January, 2021
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

माह : फरवरी एवं मार्च में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
27-28 फरवरी
21 मार्च

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
06-07 फरवरी
13-14 मार्च

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002